

श्रीपरमात्मने नमः ।

जैनपदसागर प्रथमभाग–

प्रथम पदनद ।

जिसको

पन्नालाल बाकलीवालने संपादन किया

और

भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था कलकत्ताने

अपने

जैनसिद्धांतप्रकाशक (पवित्र) प्रेसमें छपाकर

प्रकाशित किया ।



प्रथमबार] वीरसंवत् २४५६ [न्यो० एक रुपया
पच्चीस

विज्ञापना।

विदित हो कि—जैन साहित्यके संगीत विभागमें एक भाग जैन पदोंका (भजनों) का बड़ा भाग है, जिसमें सैकड़ों प्राचीन अर्वाचीन कवियोंके हजारों पद भजन होंगे उनमें से एक दुकले- हरोंने कविवर बनारसी, द्यानतराय भूधरदास, भागचंद, दौलत राम बुधजनके पदोंका संग्रह भिन्न २ छपाया है परंतु उनमें प्रभाती हजूरी, (हजूरी पदोंमें भी जिनवाणीस्तुति, गुरुस्तुति, बधाई) होरी आदि उपदेशी अध्यात्मोपदेशी अध्यात्मीक विषयके सैकड़ों पद भजन हैं, परंतु भिन्न भिन्न विषयोंके भजन एकही जगह अनेक क- वियोंके पदोंका संग्रह किसीने भी नहिं छपाये। गायक अनेक जैनी भाई भिन्न २ रुचिवाले होते हैं कोई भाई हजूरी पदोंका गाना पसंद करते हैं कोई भाई उपदेशी, वा वैराग्यमय अध्यात्मीक पदोंका गाना पसंद करते हैं, इस कारण हमने बड़े परिश्रमसे समस्त कवियोंके पदोंको गायकर अर्थको समझ कर भिन्न २ विषयोंके छांटकर भिन्न २ संग्रह तैयार करके लिखने और छपाने का प्रबंध किया है। दो वर्ष पहिले हमने उक्त ६ कवियोंके उपर्युक्त ना विषयोंके पदोंका संग्रह किया था परंतु उनके छपानेका बहु द्रव्य साध्य कार्य नहिं कर पाये। अब इन समस्त पदोंके छपानेका भार कलकत्तेकी भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्थाने स्वीकार कर लिया है इसकारण अब इन सब पदोंको बहुत शुद्ध कठिन शब्दों पर टिप्पणी सहित कपड़ेके बेलनसे पवित्रताके साथ छापना प्रारंभ किया है उनमेंसे जैनपदसागरके प्रथमभागका प्रथम

भाग प्रभाती हजूरीपदोंका संग्रह छापकर आप लोगोंके सामने उपस्थित किया है। इसके बाद दूसरा भाग सर्वप्रकारके उपदेशों और अध्यात्मोपदेशो पदोंका संग्रह और तीसरा भाग आध्यात्मिक पदोंका संग्रह छप रहे हैं शीघ्र ही छपकर तैयार होनेपर आपके दृष्टिगोचर होंगे। परंतु यह अत्यधिक परिश्रम तब ही सफल समझा जायगा कि—जब आप लोग इसको अपनाकर गाय बजायकर अपना परम कल्याण (इन तीनो बडे संग्रहोंसे अर्थात् नव प्रकारके संग्रहोंसे) साधन करेंगे।

वीरनिर्वाणसंवत २४५६।
माघशुक्ला दशमी

जैनसमाजका हितैषी दास—
पन्नालाल बाकलीवाल
सुजानगढ निवासी

हरिश चन्द्र चोलिया
15, नवजीवन उपवन,
मोती डूंगरी रोड़, जयपुर-4
फोन-618805



मुद्रक और प्रकाशक—श्रीलाल जैन काव्यतीर्थ
जैनसिद्धान्तप्रकाशक (पवित्र) प्रेस
नं० ९ विश्वकोष लेन, बाघबाजार—कलकत्ता

पदोंका अकारादिक्रमसे सूचीपत्र।

अ—आ

ग—च—छ

ज

न

प

व

स



श्रीवीतरागाय नमः ।

जैन-पद-सागर प्रथमभाग ।

(१)

(हजूरी प्रभाती पद-संग्रह)



देखोजी आदीश्वर स्वामी, कैसा ध्यान लगाया है। कर ऊपर कर सुभग विराजे, आसन थिर ठहराया है। देखोजी० ॥ टेक ॥ जगतविभूति भूति[1]सम तजकर, निजानंद-पद ध्याया है। सुरभित श्वासा आशा[2]वासा, नासादृष्टि सुहाया है। देखोजी० ॥ १ ॥ कंचन वरन चलै मन रंच न. सुर[3]गिरि ज्यों थिर थाया है। जासपास अहि मोर मृगी हरि[4], जातिविरोध नशाया है। देखोजी० ॥२॥ सुध उपयोग हुतासनमें जिन,

१। भस्मकी समान। २ दिशारूपी वस्त्र—दिगंबरपणा। ३ सुमेरु पर्वत। ४ सिंह।

वसुविधि समिध[1] जलाया है। श्यामलि अलि-कावलि सिर सोहै, मानों धूआं उडाया है। देखोजी० ॥ ३ ॥ जीवन मरन अलाभ लाभ जिन, तृणमनिको समभाया है। सुरनरनाग नमहिं पद जाके, 'दौल' तास जस गाया है। देखोजी० ॥ ४ ॥

(२)

देखोजी इक परम गुरूने कैसा ध्यान लगाया है। देखोजी० ॥ टेक ॥ घरके भोग रोग सम लागे, बनका बास सुहाया है। काम क्रोध माया मद त्यागी, नगन जु भेष बनाया है। देखोजी० ॥ १ ॥ बरसाकाल बसत हैं तरुतर, समताभाव दिखाया है। लिपटैं डांस जहर विषयाले, खेद न मनमें ल्याया है। देखोजी० ॥ २ ॥ शीतकाल तटनीतट ऊपर, परत तुषार न छाया है। कंपै देह चलै चौबारी, जैनजती कहलाया है। देखोजी० ॥ ३ ॥ ग्रीषमकाल बसैं परबतपर, सूरज

१ । होम करनेकी लक[illegible]

ऊपर आया है। चलत पसेव-जरत अति काया, कर्मकलंक बहाया है। देखोजी० ॥ ४ ॥ ऐसे गुरुके चरन पूजकर, मनवांछित फल पाया है। 'दौलत' ऐसे जैनजतीको, बारबार सिर नाया है। देखोजी० ॥ ५ ॥

(३)

जिनवर-आनन-भान-निहारत, भ्रमतम-घान नशाया है। जिनवर० ॥ टेक ॥ वचन-किरन प्रसरनतैं भविजन, मन-सरोज सरसाया है। भवदुखकारन सुखविस्तारन, कुपथ सुपथ दरशाया है। जिनवर० १ ॥ विनशायी कंज[1] जल सरसाई, निशिचर समर[2] दुराया है। तस्कर[3] प्रबल कषाय पलाये, जिन धन-बोध चुराया है। जिनवर० ॥ २ ॥ लखियत उँडु[4] न कुभाव कहूं अब, मोह उलूक लजाया है। हंसकोकको[5] शोक नस्यो निज,-परनति चकवी पाया है। जिनवर०

१। काई दूसरे पदमें अज्ञानरूपी काई। २ कामदेव। ३ चोर। ४ तारे। ५ आत्मारूपी चकवेका।

॥ ३ ॥ कर्मबंधकज-कोश बंधे चिर, भवि अलि मुंचन पाया है। 'दौल' उजास निजातम-अनुभव, उर-जग-अंतर छाया है। जिनवर० ॥ ४ ॥

(४)

पारस जिन-चरन निरख, हरख यों लहायो, चितवत चंदा चकोर ज्यों प्रमोद पायो। पारस० ॥ टेक। ज्यों सुन घनघोर शोर, मोर हर्षको न ओर, रंकनिधि समाजराज पाय मुदित थायो। पारस० ॥ १ ॥ ज्यों जन चिरछुदित होय, भोजन लखि मुदित होय, भेषज गद-हरन पाय, सरुज सुहरषायो। पारस० ॥ २ ॥ वासर भयो धन्य आज, दुरित दूर परे भाज, शांतदशा देख महा, मोहतम पलायो। पारस० ॥ ३ ॥ जाके गुन जानन जिम, भानन भवकानन इम, जान दौल सरन आय शिवसुख ललचायो। पारस० ॥ ४

१ कर्मबंधन रूपी कमलोंके कोषमे बँधे हुए थे उनसे। २ छुटकारा। ३ बहुतकालका भूखा। ४ दवाई। ५ रोगहरनेवाली। ६ रोगी।

(५)

वंदौं अद्भुत चंद्र वीर[1] जिन, भविचकोर चित-हारी। वंदों० ॥ टेक ॥ सिद्धारथ नृपकुल नभ-मंडन, खंडन भ्रमतम भारी। परमानंद-जलधि-बिस्तारन, पापताप छयकारी। वंदों० ॥ १ ॥ उदित निरंतर त्रिभुवन-अंतर, कीरति किरन पसारी। दोष[2]-मलंक कलंक[3] अटंकित, मोहराहु निरवारी। वंदों० ॥ २ ॥ कर्मावरन[4]पयोद-अरोधित, बोधित शिवमगचारी। गनधरादिमुनि उडुगन[5] सेवत, नितपूनमतिथि धारी। वंदों० ॥ ३ ॥ अखिल-अलोकाकाश उलंघन, जासज्ञान उजियारी। दौलत मनसा[6] कुमुदिनिमोदन, जयो चरम[7] जगतारी। वंदों० ॥ ४ ॥

(६)

निरखत जिनचंद्रवदन, स्वपरसुरुचि आई।

१ महावीर भगवान। २ दोषाराशि। ३ पापरूपी कलंक। ४ कर्मरूपी बादलोसे नहि ढकनेवाला। ५ तारागण। ६ मन रूपी कमोदिनीको हर्षित करनेवाला। ७ अंतिम तीर्थंकर।

निरखत० ॥ टेक ॥ प्रकटी निजआनकी[1], पिछान ज्ञान-भानकी, कला उदोत होत काम[2]-जामिनी पलाई। निरखत० ॥ १ ॥ सास्वत आनंद-स्वाद, पायो विनस्यो विषाद, आनमें अनिष्ट इष्ट, कल्पना नसाई। निरखत० २ ॥ साधी निजसाधकी[3], समाधि मोहव्याधिकी, उपाधि को विराधिकै, अराधना सुहाई। निरखत० ॥ ३ ॥ धन दिन छिन आज सुगुनि, चिन्ते जिनराज अब, सुधरे सब काज दौल अचल ऋद्धि पाई। निरखत० ॥ ४ ॥

(७)

जगदानंदन जिन अभिनंदन, पद-अरविंद नमूं मैं तेरे, जगदा० ॥ टेक ॥ अरुन वरन अघ-ताप हरनवर, वितरन कुशल सुसरन बडेरे। पद्मासदन[4] मदनमदभंजन, रंजन मुनि-जन-मन-अलिकेरे[5]। जगदा० ॥ १ ॥ ये गुन सुन मैं सरनै

१ निजपरकी। २ कामरूपी रात्रि। ३ अपने मनकी इच्छानुसार। ४ लक्ष्मी—शोभाके घर। ५ भ्रमरके।

आयो, मोहि मोह दुख देत घनेरे । तौ[1] मद-भानन स्वपर-पिछानन, तुम विन आन न कारन हेरे ॥ जगदा० ॥ २ ॥ तुमपदसरन गही जिनने ते, जामनजरामरन निरवेरे । तुमतैं विमुख भये शठ तिनको, चहुंगति विपति महाविधि पेरे । जगदा० ॥ ३ ॥ तुमरे अमित सुगुन ज्ञानादिक, सतत मुदित गनराज उँगेरे[2] । लहत न मित मैं पतित कहों किम, किन शशकन[3] गिरिराज उखेरे । जगदा० ॥४॥ तुम विन राग दोष दर्पन ज्यों, निज निज भाव फलैं तिनकेरे । तुम हो सहज जगत उपकारी, शिवपथसारथवाह भलेरे । जगदा० ॥ ५ ॥ तुम दयाल बेहाल बहुत हम, कालकराल व्यालचिर घेरे । भाल नाय गुण माल जपों तुम, हो दयाल दुखटाल सबेरे[4] । जगदा० ॥ ६ ॥ तुम बहुपतित सुपावन कीने, क्यों न हरो भवसंकट मेरे । भ्रम-उपाधिहर

१ उस मोहकर्मका मद नाश करनेवाले । २ गाये हैं । ३ खरगोसोंने । ४ शीघ्र ही ।

सम समाधिकर, दौल भये तुमरे अब चेरे। जवदा० ॥ ७ ॥

(८)

पद्मासद्म[1] पद्मपद[2] पद्मा-मुक्तिसद्म[3]-दरसावन हैं कलिमलगंजन मनअलिरंजन, मुनिजनसरन सुपावन है। पद्मासद्म० ॥ टेक ॥ जाकी जन्मपुरी कुशंबिका सुरनरनागरमावन है। जास जन्मदिन पूरब षट-नवमास रतन बरसावन है। पद्मासद्म० ॥ १ ॥ जा तप-थान पपोसा[4] गिरि सो आतम-ध्यान-थिर-थावन हैं। केवल जोत उदोत भई सो, मिथ्या-तिमिर-नसावन है। पद्मासद्म० ॥ २ ॥ जाको शासन[5]पंचानन सो कुमति-मतंगनशावन[6] है। रागविना सेवकजनतारक, पै तसु तुषरुष[7] भाव न है। पद्मासद्म० ॥ ३ ॥ जाकी महिमाके वरननसों, सुरगुरुबुद्धिथकावन[8] है। दौल

१ लक्ष्मीके घर। २ पद्मप्रभके चरनकमल। ३ मुक्तिरूपी लक्ष्मीका स्थान। ४ पपोसा नामका पर्वत। ५ उपदेश रूपी सिंह। ६ कुमतिरूपी हस्तीको नाश करनेवाला है। ७ रागद्वेष। ८ वृहस्पतिकी बुद्धि भी थक जाती है।

अल्पमतिको कहबो जिम, शिशुकंगिरिंद-धका[1]
वन है। पद्मासद्म० ॥ ४ ॥

(९)

श्रीजिनवर दरश आज, करत सौख्य पाया।
अष्टप्रातिहार्यसहित, पाय शांति काया। श्रीजिन०
॥ टेक ॥ वृक्ष है अशोक जहाँ, भ्रमरगान
गाया। सुंदर मंदारपहुप-वृष्टि होत आया। श्री
जिन० ॥ १ ॥ ज्ञानामृत भरी बानि, खिरै भ्रम
नशाया। विमल चमर ढोरत हरि, हृदय भक्ति
लाया। श्रीजिन० ॥ २ ॥ सिंहासन प्रभाचक्र
बालजग सुहाया ॥ देवदुंदुभी विशाल, जहां
सुर बजाया। श्रीजिन० ॥ ३ ॥ मुक्ताफल माल
सहित, छत्र तीन छाया। भागचंद अदभुत छवि
कही नहीं जाया ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

(१०)

प्रभु तुम मूरत दृगसों निरखे हरखै मोरो जीयरा।
प्रभुतुम० ॥ टेक ॥ बुझत कषायानल पुनि उपजै,

१ बालकद्वारा पर्वतको ढकेलना।

ज्ञानसुधारस सीयरा ॥ प्रभुतुम० ॥ १ ॥ वीतरागता प्रगट होत है, शिवथल दीसत नीयरा[1] ॥ प्रभुतुम० ॥ २ ॥ भागचंद तुम चरनकमलमें, बसत संतजनहीयरा ॥ प्रभुतुम० ॥ ३ ॥

(११)

अजित जिन विनती हमारी मानजी, तुम लागे मेरे प्रानजी ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवनमें कलपतरोवर, आश भरो भगवानजी ॥ अजित० ॥ १ ॥ वादि अनादि गयो भव भ्रमतैं, भयो बहुत हयरान जी । भागसँजोग मिले अब दीजे, मनवांछित वरदान जी । अजित० ॥ २ ॥ ना हम मांगैं हाथी घोड़ा, ना कछु संपति आनजी । भूधरके उर बसो जगत गुरु, जबलों पद निरबानजी । अजित० ॥ ३ ॥

(१२)

पारस-पद-नख प्रकाश, अरुन[2] वरन ऐसो । पा(१२) टेक ॥ मानो तप, कुंजरके[3], सीसको

१ नेड़ा—निकट । २ लाल । ३ हाथीके ।

सिंदूर पूर, रागरोषकाननकों[1]-दावानल जैसो। पारस०। बोधमई प्रातकाल, तांको रवि उदय लाल, मोक्षबधू-कुच-प्रलेप, कुंकुमाभ तैसो। पारस०। कुशल-वृक्ष-दल-उलास, इहविधि बहु गुण-निवास, भूधरकी भरहु आस, दीनदासके सो०। पारस० ॥ ३ ॥

(१३) रामकली।

ऋषभदेव ऋषिदेव सहाई अजित अजित रिपु संभव संभव, अभिनंदन नंदन लवलाई। रिषभ० ॥ सुमति सुमति भवि पदम-पदम-अलि, देत सुपास सुपास भलाई। चितचकोरचंदा चंदप्रभ, पुहपदंत पुहपनि भजि भाई। ऋषभ० ॥२॥ शीतल शीतल जड़ता नासै, श्रेयान् श्रेयान् जोति जगाई। वासुपूज्य वासव पद पूजे, विमल विमल कीरति जग छाई। ऋषभ० ॥३॥ गुन अनंत अघ अंत अनँत है, धरम धरम बरसा बरसाई। शांति शांत कुंथ्वादि जंतुपर, कुंथुनाथ

१ रागद्वेषरूपी वनकेलिये।

करुणाकरवाई । ऋषभ० ॥४ अरह अरहविधि
मल्लि मल्लिवर, मुनिसुव्रत मुनिसुव्रतदाई
नमि नमि सुरनरनेमि धरमरथ, नेमिप्रभू का
भवकाई ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ पास पास छेदी च
गतिकी, महावीर महावीरवडाई । द्यानत पर
मानँद-पद कारन, चौबीसी नामारथ गाई
ऋषभ० ॥ ६ ॥

(१४)

देखे जिनराज आज, राजरिद्धि पाई । देखे०
॥ टेक ॥ पहुपवृष्टि महाइष्ट देव दुंदुभी सुमिष्ट
शोक करै भृष्ट सो अशोकतरु बडाई ॥ देखे०
॥ १ ॥ सिंहासन झलमलात, तीन छत्र चितसु
हात, चमर फरहरात मनों, भगति अति बढा
॥ देखे० ॥ २ ॥ द्यानत भामंडलमें, दीसै प
जाय सात, बानी तिहुँकाल झरै, सुरशिवसुख
दाई ॥ देखे० ॥ ३ ॥

(१५) राग बसंत ।

भोर भयो भज श्रीजिनराज । सफल होंहि

तेरे सब काज ॥ भोर० ॥ टेक ॥ धनसंपति मन बांछित भोग, सब विध जान बने संयोग ॥ भोर० ॥ १ ॥ कल्पवृक्ष ताके घर रहै, कामधेनु नित सेवा बहै। पारस चिंतामनि समुदाय, हितसों आय मिलैं सुखदाय ॥ भोर० ॥ २ ॥ दुर्लभतैं सुलभ्य ह्वैजाय, रोगसोग दुखदूरपलाय सेवा देव करैं मनलाय, विघन उलटि मंगल ठहराय ॥ भोर० ॥ ३ ॥ डायनि भूत पिशाच न छलै, राज चोरको जोर न चलै। जस आदर सौभाग्य प्रकाश, द्यानत सुरग मुकतिपदबास ॥ भोर० ॥ ४ ॥

(१६) राग भैरों।

भोर भयो सब भविजन मिलिकर, जिनवर पूजन आवो (जावो)। अशुभ मिटावो पुण्य बढावो, नैननि नींद गमावो। भोर० ॥ टेक ॥ तनको धोय धारि उजरे पट, शुद्ध जलादिक लावो। बीतराग छबि हरखि-निरखिकर, आगमोक्त गुनगावो। भोर०॥१॥ शास्तर सुनों भनो

जिनवानी, तप संजम उपजावो। धरि सरधान देवगुरु आगम, सप्ततत्त्व रुचि लावो ॥ मोर० ॥ ॥ २ ॥ दुःखित जनकी दया ल्याय उर, दान चार-विध द्यावो। रागरोष तजि भजि जिनपदको, बुधजन शिवपद पावो ॥ मोर०॥ ३ ॥

(१७) भैरों।

किंकर अरज करत जिनसाहिब, मेरी ओर निहारो ॥ किंकर० ॥टेक॥ पतित उधारक दीन दयानिधि, सुन्यो तोहि उपगारो। मेरे औगुन पैं मति जावो, अपनो सुजस विचारो ॥ किंकर० ॥ १ ॥ अब ज्ञानी दीसत हैं तिनमें, पक्षपात उरझारो। नाहीं मिलत महाव्रतधारी, कैसैं ह्वै निस्तारो ॥ किंकर० ॥२॥ छबी रावरी नैनन निरखी, आगम सुन्यो तिहारो। जात नहीं भ्रम क्यों अब मेरो, या दूषनको टारो ॥ किंकर० ॥ ३ ॥ कोटि बातकी बात कहत हों, योही मतलब म्हारो। जोलों भव तोलों बुधजनको, दीजे सरनसहारो। किंकर० ॥ ४ ॥

[१८]

राग—षट्ताल तिताला।

पतित उधारक पतित रटत है, सुनिए अरज हमारी हो। पतित० ॥ टेक ॥ तुमसो देव न आन जगतमें जासों करिय पुकारी हो। पतित० ॥ १ ॥ साथ अविद्या लगि अनादिकी, रागरोष विस्तारी हो। याहीतैं संतति करमनकी, जनम मरन दुखकारी हो ॥ पतित० ॥ २ ॥ मिलै जगत जन जो भरमावै, कहै हेत संसारी हो। तुम विनकारन शिवमगदायक, निजसुभावदातारी हो ॥ पतित० ॥ ३ ॥ तुम जाने विन काल अनंता, गति गतिके भव धारी हो। अब सनमुख बुधजन जांचत है, भवदधिपार उतारी हो ॥ पतित० ॥ ४ ॥

(१९) राग भैरो।

उठोरे सुग्यानी जीव, जिनगुन गावोरे। उठोरे ॥ टेक ॥ निसि तो नसाय गई, भानुको उद्योत भयो, ध्यानको लगावो प्यारे, नींदको भगाओरे

॥ उठोरे० ॥ १ ॥ भववन चौरासी बीच, भ्रमतो फिरत नीच, मोह-जाल-फंद-फस्यो, जन्म मृत्यु पावोरे ॥ उठोरे० ॥ २ ॥ आरज पृथ्वीमें आय, उत्तम नरजन्म पाय, श्रावककुलको लहाय, मुक्ति क्यों न जावोरे ॥ उठोरे० ॥ ३ ॥ विषय-निमैं राचिराचि, बहुविधके पाप सांचि, नरकनिमैं जाय क्यों अनेक दुःख पावोरे ॥ उठोरे० ॥४॥ परको मिलाप त्यागि, आतमके जाप लागि, सुबुधि बतावै गुरु ज्ञान क्यों न लावोरे ॥ उठोरे० ॥ ५ ॥

(२०) राग भैरो ।

चरननचिन्ह चितारि चित्तमें, बंदन जिन चौवीस करूं ॥ चरनन० ॥ टेक ॥ रिषभ बृषभ गज, अजितनाथकै । संभवके पद बाजि[1], सरूं । अभिनंदन कपि, कोक[2] सुमतिकै, पदम[3] पदमप्रभ पायधरूं ॥ चरनन० ॥ १ ॥ स्वस्ति[4] सुपारस, चंद चंदकै, पुष्पदंतपद मत्स्य[5] वरूं । सुरतरु[6]

१ घोड़ा । २ चकवा । ३ कमल । ४ साथिया । ५ मगर मच्छ । ६ कल्पवृक्ष ।

शीतल चरनकमलमैं, श्रेयांसकै गैंडा वनचरू ॥ चरनन० ॥ २ ॥ भैंसा वासु, वराह विमलपद, अनँतनाथके सेहि परूं । धर्मनाथ कुंस[1], शांति हिरन जुत, कुंथुनाथ अज, मीन अरू[2] ॥ चरन० ॥ ३ ॥ कलस मल्लि, कूरंम[3] मुनिसुव्रत नमि कमल रक्तपत्र तरूं । नेमि संख, फँनि पास बीर हँरि, लखि बुधजन आनंद भरूं ॥ चरनन० ॥४॥

(२१)

जिनमुख अनुपम सूर्य निहारत, भ्रमतम दूर भगाया है । जिनमुख० ॥ हितकर वचन-किरन अरुनिधसि, भवि-मन कमल खिलाया है चक्रवाक आतमको चकवी, सुमतिसँयोग मिलाया है । जिनमुख० ॥ १ ॥ विनसी मोहनिशा दुखकारी, आतमज्ञान जगाया है । मिथ्यानींद मिटी प्रगटी अव, सम्यकरुचिसुख पाया है । जिनमुख० ॥ २ ॥ कुमति कमोदनि सकुचन लागी उडुगन कुनय छिपाया है । सहज सर्वहित

१ वज्र । २ अरनाथके । ३ कछुवा । ४ सर्प । ५ सिंह ।

कर शिवमारग, भवि जीवन लखि पाया है॥ जिनमुख० ॥ ३॥ भ्रष्ट कुजीव उलूक पशू सम, तिनने नाहिं लखाया है । धन्य दिनेश 'जिनेश्वर' आनन, जिहप्रकाश वृष पाया है। जिनमुख० ॥ ४ ॥

(२२)

श्रीअरहत छबि लखि हिरदै आनंद अनूपम छाया है श्रीअरहत० ॥ टेक ॥ वीतराग मुद्रा हितकारी, आसन पद्म लगाया है। दृष्टि नासिका अग्रधार मनु, ध्यान महान बढाया है। श्रीअरहत० ॥ १ ॥ रूप सुधाधर अंजुलि भरभर, पीवत अति सुख पाया है। तारन तरन जगत-हित-कारी, विरद शचीपति गाया है । श्रीअरहत० ॥ २ ॥ तुम मुखचंद्रनयनके मारग, हिरदैमांहि समाया है। भ्रमतम दुख आताप नस्यो सब, सुखसागर बढि आया है। श्रीअरहत० ॥ ३ ॥ प्रगटी उर संतोष चंद्रिका, निजस्वरूप दरशाया है। धन्य धन्य तुम छबी 'जिनेश्वर'

देखत ही सुखपाया है। श्रीअरहत० ॥ ४ ॥

(२३)

जयवंतो जिनबिंब जगतमें, जिन देखत निज पाया है। जयवंतो ॥ टेक ॥ वीतरागता लखि प्रभुजीकी, बिषयदाह विनशाया है। प्रगट भयो संतोष महागुण, मनथिरतामें आया है ॥ जयवंतो० ॥ १ ॥ अतिशय ज्ञान शरासनपै धरि, शुक्कध्यान शर बाया[1] है। हानि मोह-अरि चंड चौकडी, ज्ञानादिक उपजाया है। जयवंतो० ॥ २ ॥ वसुविधि अरि हरिकर शिवथानक, थिर-स्वरूप ठहराया है। सो स्वरूप शुचि स्वयंसिद्ध प्रभु, ज्ञानरूप मनभाया है ॥ जयवंतो० ॥ ३ ॥ यदपि अचेत तदपि चेतनको, चितस्वरूप दिख-लाया है। कृत्याकृत्य 'जिनेश्वर' प्रतिमा पूजनीय गुरुगाया है ॥ जयवंतो० ॥ ४ ॥

(२४)

वंदों जिनदेव सदा चरन कमल तेरे, जा

१ फेंका है।

प्रसाद सकल कर्म छूटत हैं मेरे ॥ टेक ॥ ऋषभ अजितसंभव अभिनंदन केरे । सुमतिपद्म सुपार्श्व, चंदा प्रभुमेरे । बंदों ॥ १ ॥ पुष्पदंत शीतल श्रेयांस गुण घनेरे । वासुपूज्य विमल अनंतधर्म जग उजेरे । वंदों० ॥ २ ॥ शांति-कुंथु अरहमल्लि मुनिसुव्रतकेरे । नमि नेमीश्वर पार्श्वनाथ महावीर मेरे । वंदों ॥ ३ ॥ लेत नाम अष्टयाम छूटत भवफेरे । जन्म पाय जादों-राय चरननके चेरे । बंदों० ॥ ४ ॥

(२५)

जय श्रीवीर जिनेंद्र चंद्र शत, इंद्र वंद्य जग-तारं ॥ टेक ॥ सिद्धारथकुल कमल अमल रवि भव[1]भूधरपविभारं । गुनमनि-कोष अदोष मोख-पति, विपिन[2]-कषाय तुषारं ॥ जयश्री० ॥ १ ॥ मदनकदन शिवसदन पद-नमित, नित अनमित यतिसारं । रमा[3] अनंत कंत अंतककृत, अंत[4]-

---

१ संसाररूपी पहाडको बडे भारी वज्रसमान । २ कषायरूपी वनको तुषारकी समान । ३ अनत मोक्ष लक्ष्मीके पति । ४ यमराजका अन्त

जंतु-हितकारं ॥ जयश्री० ॥ २ ॥ फंद[५] चंदनाकंदन दादुर[६], दुरित तुरित निर्वारं । रुद्र[७] रचित अतिरुद्र उपद्रव, पवन-अद्रि-पतिसारं ॥ जयश्री० ॥ ३ ॥ अंतातीत अचिंत्य सुगुन तुम. कहत लहत को पारं । हे जग[९]मौल दौल तेरे क्रम[१०], नमैं शीश कर धारं ॥ जयश्री० ॥ ४ ॥

(२६)

श्रीजिन पूजनको हम आये, पूजत ही दुख-द्वंद मिटाये ॥ श्रीजिन ॥ टेक ॥ विकलप गयो प्रगट भयो धीरज, अदभुत सुख समता बरषाये । आधिव्याधि अब दीखत नाहीं, धरम कलपतरु आंगन थाये ॥ श्रीजिन ॥ १ ॥ इतमें इंद्र चक्रधर इतमें, इतमें फनिंद खड़े सिरनाये । मुनिजन वृंद करैं थुति हरषत, धन हम जनमें पद परसाये ॥ श्रीजिन ॥ २ ॥ परमौदारिक मैं

करनेवाले । ५ चंदना सतीका फद काटनेवाले । ६ समवशरनमे पुष्प लेकर जानेवाले मेडकके पाप । ७ रुद्र द्वारा किए हुये उपद्रव । ८ अनत । ९ जगतके मुकुट । १० चरण ।

परमातम, ज्ञानमयी हमको दरसाये। ऐसे ही हममैं हम जानैं, बुधजन गुन मुख जात न गाये ॥ मुनिजन ॥ ३ ॥

(२७)

राग—अलहिया।

चंदजिनेश्वर नाम हमारा, महासेन सुत जगत पियारा ॥ चंद० ॥ टेक ॥ सुरपति नरपति फनिपति सेवत, मानि महा उत्तम उपगारा। मुनिजन ध्यान धरत उरमाही. चिदानंद पदवीका धारा ॥ चंदजिनेश्वर० ॥१॥ चरन सरन बुधजन जे आये, तिनपाया अपना पद सारा ॥ मंगलकारी भवदुख हारी, स्वामी अद्भुत उपमावारा ॥ चंदजिनेश्वर० ॥ २ ॥

(२८)

राग—भैरों

पूजत जिनराज आज आपदा हरी। दरस्यो तत्त्वार्थ मोहि धन्य या घरी ॥ पूजत० ॥ टेक ॥ छलबल मद क्रोध मेरी उच्चता करी। अवलोंया जानत सो बात निरवरी० ॥ पूजन० ॥ १ ॥ राज

पदवी छोरिकैं विरागता धरी। तासों जिनराज भये, दृष्टि या परी ॥ पूजन० ॥ २ ॥ आन भाव जन्म जन्म, कीन बहु बरी । यातैं गति चार बीच विपति अति भरी ॥ पूजन० ॥ ३ ॥ बुध-जन जिन सरन गह्यो, मिटगई मरी। आप-माहि आप लख्यो, शुद्धि आपरी० ॥ ४ ॥

---

(२)

हजूरी पद संग्रह प्रथम भाग ।

१ । कविवर बनारसीदास कृत ।

१ राग काफी ।

चिंतामन स्वामी सांचा साहिब मेरा, शोक हरै तिहुंलोकको उठि लीजतु नाम सवेरा, चिंतामन० ॥ टेक ॥ १ ॥ सूर समान उदोत है, जग तेज प्रताप घनेरा । देखत मूरत भावसों, मिट जात मिथ्यात अंधेरा, चिंतामन० ॥ २ ॥ दीनदयाल निवारिये, दुख संकट जोनि वसेरा । मोहि अभयपद दीजिये फिर होय नहीं भवफेरा, चिंतामन० ॥ ३ ॥ बिंब विराजत आगरै, थिर

थानथयो शुभ वेरा। ध्यान धरै विनती करै, बानारसि वंदा तेरा, चिंतामन स्वामी० ॥ ४ ॥

कविवर दौलतरामजी कृत

(२)

भज ऋषिपति[1] ऋषभेश[2] ताहि नित, नमत अमर असुरा। मनमथ[3]-मथ दरसावतशिव[4]पथ, वृष-रथ-चक्रधुरा। भज० ॥ टेक ॥ जा प्रभुगर्भ छ मासपूर्व सुर करी सुवर्ण धरा। जन्मत सुरगिर-धर सुरगनयुत हरि[5] पयन्हवन करा ॥ भज० ॥ १ ॥ नटत नर्तकी[6] विलय देख प्रभु, लहि विराग सुथिरा। तबहिं देवऋषि[7] आय नाय शिर जिनपदपुष्प धरा॥ भज०॥ २॥ केवलसमय जास वचरविने,[8] जगभ्रमतिमिर हरा। सुदृग-बोध चारित्र-पोत[9] लहि, भवि भवसिंधु-तरा। भज० ॥ ३ ॥ योग सँधार निवार शेष[10] विधि,

१। मुनिनाथ। २ धर्मके ईस आदिनाथ भगवानको ३। कामदेवको मथनेवाले। ४ मोक्षमार्ग। ५ इन्द्र। ६ नीलाजना अपसरा। ७ लौकांतिक देव। ८ वचनरूपी सूरजने। ९ रत्नत्रयरूपी जहाज। १० शेषके चार अघाति कर्म।

निवसे वसुम धरा। दौलत जे याको जस गावैं, ते हैं अज अमरा ॥ भज० ॥ ४ ॥

(३)

(यह पद प्रभातीमें भी चलता है)

चंद्रानन जिन चंद्रनाथके, चरन चतुर चित ध्यावतु है। कर्मचक्र चकचूर चिदातम, चिनमूरतपद पावतु है। चंद्रा० ॥ टेक ॥ हाहा[1] हूहू नारद तुंबर, जासु अमल जस गावतु हैं। पद्मा शची शिवा श्यामादिक, करधर वीन वजावतु है। चंद्रानन० ॥ १ ॥ विन इच्छा उपदेशमाहि हित, अहित जगत-दरसावतु है। जा-पद-तट सुरनरमुनि-घट-चिर, विकट विमोह नशावतु है॥ चंद्रानन० ॥ २ ॥ जाकी चंद्रवरन तन दुतिसों कोटिक सूर[2] छिपावतु हैं। आतमज्योत-उद्योत मांहि सब, ज्ञेय[3] अनंत दिपावतु है॥ चंद्रानन० ॥ ३ ॥ नित्य उदय अकलंक अछीनसु मु-

१ हाहा हूहू नारद और तुवर ये चार जातिके गन्धर्व देव है।
२ सूरज । ३ पदार्थ ।

निउडुचित्त[1] रमावतु है। जाकी ज्ञानचंद्रिका लोकालोक, माहिं न समावतु है। चंद्रानन०॥ ४॥ साम्यसिंधुवर्द्धन[2] जगनंदन[3], को शिर हरिगन नावतु हैं। संशय विभ्रम मोह दौलके, हर जो जग भरमावतु हैं। चंद्रानन० ॥ ५ ॥

(४)

जय जिन वासुपूज्य शिव-रमनी-रमन मदन[4]-दनुदारन हैं। बालकाल संजम संभाल रिपु मोहव्याल[5]-बलमारन हैं॥ जय जिन० ॥ टेक ॥ जाके पंचकल्यान भये चंपापुरमें सुखकारन हैं। वासववृंद[6] अमंद मोदधर, किये भवोदधि-तारन हैं॥ जयजिन० ॥ १ ॥ जाके वैनसुधा त्रिभुवन जन, को भ्रमरोग विदारन है। जा गुन चिंतन अमल अनल मृतु, जनम-जरावन-जारन हैं॥ जयजिन०॥२॥जाकी अरुन शांत छबि रवि भा-

१ मुनिरूपी तारोंका चित २ समतारूपी समुद्रकोव ढानेवाला। ३ जगतको आनद करनेवाला चद्रमा। ४ कामदेवरूपी राक्षसको मारनेवाले। ५ मोहरूपी सापका। ६ इन्द्रोंके समूह।

दिवसप्रबोधप्रसारन हैं । जाके चरन शरन सुरतरु, वांछित शिवफल विस्तारन हैं ॥ जय-जिन० ॥ ३ जाको शासन सेवत मुनि जे, चार ज्ञानके धारन हैं । इंद्र फणींद्र मुकुटमणि दुति जल, जापद कलिल[1] पखारन हैं ॥ जय जिन० ॥ ४ ॥ जाकी सेव अछेव[2] रमाकर, चहुंगति-विपति-उधारन हैं । जा अनुभव[3]घनसार सु आकुल, तापकलाप-निवारन हैं ॥ जय० ॥ ५ ॥ द्वादश मो जिन चंद्र जासवर, जस उजासको पार न है । भक्तिभारतैं नमैं दौलके चिर-विभाव-दुख टारन हैं । जयजिन० ॥ ६ ॥

[५]

कुंथुन[4]के प्रतिपाल कुंथु जग, तार सार गुन धारक हैं । वर्जित[5]ग्रंथ कुपंथवितर्जित, अर्जित[6]-पंथ अमारक हैं ॥ कुंथुनके० ॥ टेक ॥ जाकी

---

१ पाप २ अक्षय (मोक्ष) लक्ष्मीकी करनेवाली ३ जिनका अनुभवरूपी मलयागिरि चदन । ४ छोटे ५ जीवोंके भी ५ परिग्रह रहित । ६ अहिंसामार्गके आर्जन करनेवाले ।

समवसरन बहिरंग,-रमा गनधार[1] अपार कहैं। सम्यग्दर्शन-बोध चरन अध्यात्म-रमा-भर-भारक हैं॥ कुंथुनके०॥ १॥ दशधाधर्मपोतकर[2] भव्यन, को भवसागर-तारक हैं। वर समाधि-वन-घन-विभाव-रज, पुंजनिकुंजनिवारक हैं॥ कुंथुनके० ॥ २॥ जासु ज्ञाननभमें अलोकजुत, लोक यथा इक तारक[3] है। जासु ध्यान हस्तावलम्ब दुख, कूप-विरूप-उधारक हैं। कुंथुनके० ॥ ३॥ तज छखंडकमला प्रभु अमला, तप-कमला-आगारक हैं। द्वादश सभासरोजसूर भ्रम, तरु-अंकूर उपारक हैं॥ कुंथुनके० ॥४॥ गुण अनंत कहि लहत अंत को? सुरगुरुसे बुध-हारक हैं। नमैं दौल है कृपाकंद भव,-द्वंद्व टार बहुबार कहैं॥ कुंथुनके ॥५॥

[६]

पैंस[4] अनादि अविद्या मेरी हरनपास-पर[5]-

१ गणधर। २ दशलक्षणधर्मरूपी जहाज द्वारा छहखडकी राज्य लक्ष्मी। ३ तारा। ४ फासी। ५ पार्श्वनाथ भगवान।

मेशा हैं। चिद्विलास[1]सुखरास प्रकाश-शवितरन त्रिभोनदिनेशा हैं ॥ टेक ॥ दुर्निवार[2] कन्दर्पसर्प-को, दर्पविदरनखगेशा हैं। दुष्ठ[3] शठ कमठ-उपद्रव-प्रलय-समीर-सुवर्ण-नगेशा हैं ॥ पास० ॥ १ ॥ ज्ञा[4]न अनंत अनंत दर्शबल, सुख अनंत परमेशा हैं। स्वानु[5]भूति रमनीवर भ[6]विभव, गिर-पवि शिवसद्मेशा हैं ॥ पास० ॥ २ ॥ ऋषि मुनि यति अनँगार सदा तस, सेवत पादकुशेसा हैं। वदन[9]चंद्रतैं झरै गिरा[10]मृत, नाशन जनम-कलेशा हैं ॥ पास० ॥ ३ ॥ नाममंत्र जे जपैं भव्य तिन, अघ[11]-अहि नशत अशेषा हैं। सुर

---

१ चेतन (जीव) के विलासरूपी सुखकी राशिके प्रकाशको प्रकाश दान करनेवाले तीन लोकके सूर्य। २ दुखसे निवारा जाय ऐसे कामरूपी सर्पका गर्व दूर करनेके लिये खगेश कहि गरुड हो। ३ दुष्टमूर्ख कमठकृत उपसर्ग रूपी प्रलयकालकी आंधीको रोकनेकेलिये सुमेरु पर्वत है। ४ अनन्त दर्शन ज्ञान सुख बलरूपी लक्ष्मीके ईश। ५ आत्माकी अनुभूतिरूपी रमनीके पति। ६ भव्य-जनोंके संसाररूपी पर्वतको तोडनेके लिये वज्र। ७ एक प्रकारके संयमी। ८ चरण कमल। ९ मुखरूपी चन्द्रमासे। १० वाणी-रूपी अमृत ११ पापरूपी सर्प नाश हो जाते है उनके सब।

अहमिंद्र खगेंद्र चंद्र है, अनुक्रम होहिं जिनेशा हैं ॥ पास० ॥ ४ ॥ लोक[1]-अलोक ज्ञेय-ज्ञायकपै रतै[2] निजभाव चिदेशा हैं। राग विना सेवक जन तारक, मारक[3] मोह न द्वेषा हैं ॥ पास० ॥ ५ ॥ भद्र[4]-समुद्र-विवर्द्धन. अदभुत पूरन-चंद्र सुवेशा हैं। दौल नमैं पद तासु जासु शिवथल समेद-अचलेशा[5] हैं ॥ पास० ॥ ६ ॥

(७)

जय शिवकामिनिकंत वीर[1] भगवंत अनंत सुखाकर हैं। विधि[2] गिरिगंजन बुध मनरंजन-भ्रमतम-भंजन भाकर[3] हैं ॥ जय शिव० ॥ टेक ॥ जिन उपदेश्यो दुविधधर्म[4] जो, सो सुर[5]सिद्धरमा-कर हैं। भवि[6]उर-कुमुदनिमोदन भवतप,-हरन

१ लोक अलोक संबधी समस्त पदार्थोंके जानते हुए भी। २ चैतन्यरूपी निज भावोमे ही मगन है। ३ कामदेव। ४ कल्याणरूपी समुद्रको बढाने वाले अद्भुत मनोहर चन्द्रमा है। ५ मोक्ष स्थान जिनका सम्मेद शिखर पर्वतराज है।

१ महावीर भगवान। २ कर्मरूपी पर्वतके नष्ट करनेवाले। ३ सूर्य। ४। दो प्रकारका धर्म गृहस्थ और मुनिका। ५ स्वर्ग मोक्ष लक्ष्मीका करनेवाला। ६ भव्यपुरुषोंकी हृदयरूपी कुमुदिनीको प्रफुल्लित कर-

अनूप निशाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ १ ॥ परम विरागि रहैं जगतैं पै, जगत-जंतु रक्षाकर हैं। इंद्र फनींद्र खगेंद्र चंद्र जगठाकर ताके चाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ २ ॥ जासु अनंत सुगुन मणि-गननित, गनत गनीगन थाक रहैं। जा प्रभुपद-नवकेवललब्धि सु,-कमलाको कमलाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ ३ ॥ जाके ध्याँनकृपान रागरुप, पासहरन समताकर हैं। दौल नैम कर जोर हरन भव,-बाधा, शिवराधाकर हैं ॥ जय शिव० ॥ ४ ॥

(८)

उरग-सुरग-नरईश शीस जिस, आतपत्र[1] त्रिधरे[2]। कुंदकुसुमसम[3] चमर अमरगन, ढारत मोद भरे ॥ उरग० ॥ टेक ॥ तरु अशोक जाको अवलोकत, शोक थोक उजरे। पारजात संतानकादिके, बरसत सुमन वरे ॥ उरग० ॥ १ ॥

नेकेलिये संसाररूपी तापको हरनेकेलिये अनुपम चन्द्रमा हैं। ७ ध्यानरूपी तरवारसे राग रोषकी फांसी काटनेवाले। ८ समताकी खानि।

१ छत्र। २ तीन धरे। ३ कुंदके फूल समान। ...

सुमणि विचित्र पीठ अंबुजपर राजित जिन सुथिरे
वर्ण-विगति[1] जाकी धुनिको सुनि, भवि भवसिंधु
तरे ॥ उरग० ॥ २ ॥ साढेबारहकोडिजातिके
वाजत तूर्य[2] खरे । भामंडलकी दुति अखंडने, रवि
शशि मंद करे ॥ उरग० ॥ ३ ॥ ज्ञान अनंत
अनंत दर्शबल, शर्म अनंत भरे । करुणामृत
पूरित पदजाके, दौलत हृदय धरे । उरग०॥४॥

[६]

भविनसरोरुहसूर[3] भूरिगुनपूरित अरहंता।
दूरित[4]दोष मोखपद घोषत, करत कर्मअंता
॥ भविन० ॥ टेक ॥ दर्शबोधतें[5] युगपतिलखि
जाने जु भावऽनंता। विगताकुल[6] जुतसुखअनंत,
विन,–अंत शक्तिवंता । भविन० ॥ १ ॥ जा तन
जोत-उदोत-थकी रवि, शशि दुति लाजंता । तेज
थोक अवलोक लगत है, फोक[7] सचीकंता[8] ॥
भविन० ॥२॥ जास अनूपरूपको निरखत, हर-

---

१ अक्षररहित । २ बाजे । ३ भव्यरूपी कमलोंको सूर्य । ४ दोष रहित । ५ सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानसे । ६ आकुलतारहित । ७ फीका । ८ इंद्र ।

खत हैं संता। जाकी धुनि सुनि मुनि निजगुन-मुन[1], परगर[2] उगलंता ॥ भविन० ॥ ३ ॥ दोल तौल[3] विन जस तस वरनत, सुरगुरु[4] अकुलंता। नामाक्षर सुन कान स्वानसे रंक[5] नाकगंता[6] ॥ भविन० ॥ ४ ॥

(१०)

हमारी वीर हरो भव पीर। हमारी० ॥ टेक ॥ मैं दुख पतित दयामृतसर तुम, लखि आयो तुम तीर। तुम परमेश मोखमगदर्शक, मोहद-वानलनीर। हमारी० ॥ १ ॥ तुम विन हेत जगत उपकारी, शुद्ध चिदानँद धीर। गनपतिज्ञान-समुद्र न लंघै, तुमगुनसिंधु गँहीर[7] ॥ हमारी० ॥ ॥ २ ॥ याद नहीं मैं विपत सही जो धर धर अमित शरीर। तुम-गुन चिंतत नशत दुःख भय ज्यों घन चलत समीर ॥ हमारी० ॥ ३ ॥ कोटिबारकी अरज यही है, मैं दुख सहूं अधीर।

१ अपने गुणोंका मनन करके। २ परागरूपी विष। ३ अपरिमित ४ बृहस्पति। ५ रंक—नाचीज। ६ स्वर्ग गया। ७ बहुत ऊंडा।

हरहु वेदनाफंद दौलको, कतर करम-जंजीर ॥ हमारी० ॥ ४ ॥

(११)

सब मिलि देखो हेली म्हारी हे, त्रिशलाबाल वदन रसाल ॥ सब० ॥ टेक ॥ आये जुत समवसरन कृपाल, विचरत अभय व्यालमराल, फलित भई सकल तरु माल । सब मिल० ॥ १ ॥ नैन न हालै भृकुटी न चालै, वैन विदारै विभ्रम जाल । छवि लख होत संत निहाल । सब मिल० ॥ ॥ २ ॥ वंदन काज साज समाज, संगलिये स्वजन पुरजन व्राज, श्रेणिक चलत है नरपाल ॥ सब मिल० ॥ ३ ॥ यों कहि मोद जुत पुरवाल लखन चाली चरम जिनपाल, दौलत नमत कर धर भाल ॥ सब मिल० ॥ ४ ॥

(१२)

अरि[1]-रज[2]-रहसि[3]-हनन प्रभु अरहन, जैवंतो जगमें । देव अदेव सेवकर जाकी, धरहिं मौलि

१ । मोह । २ ज्ञानावरण दर्शनावरणकर्म । ३ अंतरायकर्म ।

पगमैं ॥ अरिरज० ॥ टेक ॥ जा तन अष्टोत्तर सहस्र लक्खन लखि कलिल शमैं । जा वच-दीप-शिखातैं मुनि विचरैं शिवमारगमैं ॥ अरिरज० ॥ १ ॥ जास पासतैं शोकहरनगुन, प्रगट भयो नगमें[1] । व्यालमराल कुरंग सिंघको, जातिविरोध गमैं ॥ अरिरज० ॥ २ ॥ जा जस-गगन-उलंघन कोऊ, क्षमै[2] न मुनीगनमैं । दौल नाम तसु सुरतरु है या, भवमरुथलमगमैं[3] ॥ अरि० ॥ ३ ॥

(१३)

हे जिन तेरे मैं शरणै आया । तुम हो परम दयाल जगतगुरु, मैं अब भवदुखपाया ॥ हे जिन ॥टेक॥ मोह महादुठ घेरिरह्यो मोहि, भव कानन भटकाया । नित निजज्ञानचरननिधि विसरयो, तन धन करअपनाया ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ निजानंद-अनुभव-पियूष[4] तज, विषय हलाहल खाया । मेरी भूल मूल दुखदाई, निमितमोहविधि थाया ।

१ अशोक वृक्षमे । २ समर्थ । ३ संसाररूपी मारवाडदेशके विकट मार्गमे । ४ अमृत ।

हे जिन० ॥२॥ सो दुठ होत शिथिल तुमरे ढिग, और न हेतु लखाया। शिवस्वरूप शिवमगदर्शक तुम, सुजश सुनीगन गाया ॥ हे जिन० ॥ ३ ॥ तुम हो सहज निमित जगहितके, मो उर निश्चय भाया। भिन्न होहुं विधितैं सो कीजे, दौल तुम्हें सिर नाया ॥ हेजिन० ॥ ४ ॥

(१४)

हे जिन मेरी, ऐसी बुधि कीजै। हे जिन० ॥ ॥ टेक ॥ रागरोषदावानलतैं बचि, समतारसमें भीजै ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ परमें त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूं छीजै। हे जिन० ॥ २ ॥ कर्म कर्मफलमाहि न राचै, ज्ञानसुधारस पीजै ॥ ॥ हे जिन० ॥३॥ मुझ कारजके तुम कारन वर, अरज दौलकी लीजै ॥ हे जिन० ॥ ४ ॥

(१५)

शामरियोंके[२] नाम जपेतैं छूट जाय भवभामरिया[३] शामरियाके। टेक। दुरित[४] दुरित[५] पुन पुरत[६]-फुरत-

१ कर्मोंसे। २ पार्श्वनाथभगवानके। ३ ससारका भ्रमण। ४ पाप। ५ भगजाते हैं। ६ पूर्णतया स्फुरित होते है।

गुन, आतमकी निधि आगै[1]रियां। विघटत है पर दाहचाह झट, गटकते[2] समरसगागरिया। सामरियाके ॥ १ ॥ कटत कलंक करमकलसा[3]-यनि, प्रगटत शिवपुरडागरिया[4]। फटत घटाघन-मोह[5]छोह हट, प्रगटत भेदज्ञान[6]घरियां ॥ शाम० ॥ २ ॥ कृपाकटाक्ष तुमारीतैं ही, युगलनाग-विपदा टरिया। धार[7] भए सो मुक्तिरमावर, दौल नमैं तुव पागरियां ॥ शामरियाके० ॥ ३ ॥

(१६)

शिवमग दरसावन रावरो[8] दरस[9] ॥ शिवमग० ॥ ॥ टेक ॥ परपद[10]चाहदाहगदनाशन, तुमवच-भेष-जैं[11]पान सरस ॥ शिवमग० ॥ १ ॥ गुण चितवत निज अनुभव प्रगटै, विघटै विधिठग[12]-दुविध

---

१ आगै आजाती है। २ गटकते वा पीते है। ३ कर्मरूपी कालिख। ४ पगडंडी। ५ रागद्वेष। ६ निजपरज्ञानकी घडी। ७ तुमारा नाम धारण करके। ८ आपका। ९ दर्शन। १० परद्रव्यकीचाह रूपी दाहरोगको नाश करनेकेलिये। ११ तुमारे वचनरूपी दवाईका पीना। १२ भावकर्म द्रव्यकर्मरूपी ठग।

तरस ॥ शिवमग० ॥ २ ॥ दौल अवांची संपत सांची, पाय रहै थिर राचि स्वैरस ॥शिव०॥३॥

(१७)

मेरी सुध लीजै रिषभ स्वाम। मोहि कीजै शिव पथगाम ॥ मेरी०॥ टेक ॥ मैं अनादि भव भ्रमत दुखी अब, तुम दुख मेटत कृपाधाम। मोहि मोह घेरा चेरा कर, पेरा चहुंगति विदित ठाम ॥ मेरी० ॥ १ ॥ विषयनि-मन ललचाय हरी मुझ, शुद्ध-ज्ञान-संपति-ललाम। अथवा यह जडको न दोष मम, दुख सुखता-परनति सुकाम ॥ मेरी० ॥ २ ॥ भाग जगे अब चरन जपे तुम, वच सुनके गहे सुगुनग्राम। परम विराग ज्ञानमय मुनिजन, जपत तुमारी सुगुनदाम ॥ मेरी० ॥ ३ ॥ निर्विकार-संपति-कृति तेरी, छविपर वारों कोटि काम। भव्यनिके भव-हारन कारन,

१ अवाच्य—कहनेमे न आवै ऐसी सम्पत्ति। २ आत्मीकरसमे। ३ मोक्षमार्गमे चलनेवाला। ४ चेला। ५ श्रेष्ठ। ६ गुणोका समूह। ७ गुणोकी माला। ८ कामदेव।

सहज यथा तमहरनघाम[1] ॥मेरी०॥४॥ तुमगुन-महिमा कथनकरनको, गिनत गणी[2] निजबुद्धि खाम[3]। दौलतणी[4] अज्ञान परनती, हे जगत्राता-कर विराम[5] ॥ मेरी० ॥ ५ ॥

(१८)

मोहि तारोजी क्यों ना ? तुम तारक त्रिजग त्रिकालमैं ॥ मोहि०॥टेक ॥ मैं भव उदधि पर्‍यो दुख भोग्यो, सो दुख जात कह्यो ना। जामन मरन अनंत तणो तुम. जाननमाहि छिप्यो ना ॥ मोहि० ॥ १ ॥ विषय-विरसरस बिषम भख्यो मैं, चख्यो न ज्ञान सलोनो[6]। मेरी भूल मोहि दुख देवै, कर्म-निमित्त भलो ना ॥ मोहि० ॥ २ ॥ तुम पद-कंज धरे हिरदै जिन, सो भवताप तप्यो ना। सुरगुरुहूके वचनकरनकरि[7], तुम जँस-गगन[8] नप्यो ना ॥ मोहि० ॥ ३ ॥ कुगुरु कुदेव

१ अन्धकार नाश करनेके लिये सूर्यका प्रकाश। २ गणधर। ३ निजबुद्धिकी कमी। ४ दौलतकी। ५ नाश। ६ स्वादिष्ट। ७ वचनरूपी हाथोंसे। ८ तुमारा यशरूपी आकाश।

कुश्रुत सेये मैं, तुम मत हृदय धर्यो ना। परम विराग ज्ञानमय तुम,-जाने बिन काज सर्यो ना ॥ मोहि० ॥ ४ ॥ मो सम पतित[1] न अवर दयानिधि, पतिततार[2] तुमसो ना। दौलतणी अरदास[3] यही है, फिर भववास वसो ना ॥ मोहि० ॥ ५ ॥

(१९)

मैं आयो जिन सरन तिहारी। मैं चिर दुखी विभाव भावतैं, स्वाभाविक निधि आप विसारी ॥ मैं० ॥ १ ॥ रूप निहार धार तुम गुन सुन, वैन सुनत भवि शिवमगचारी। यों मम कारजके कारन तुम, तुमरी सेव एव उर धारी ॥ मैं० ॥२॥ मिल्यो अनंत जन्मतैं अवसर, अब विनऊं हे भवसरतारी[4]। परमें इष्ट अनिष्ट कल्पना, दौल कहै झट मेट हमारी। मैं आयो० ॥ ३ ॥

(२०)

मैं हरख्यो निरख्यो मुख तेरो। नासान्यस्त[5]

१ पापी। २ पापियोंको तारनेवाला। ३ अर्जी। ४ संसार समुद्रसे तारनेवाले। ५ नासिकापर लगाई है दृष्टि जिसने।

नयन भ्रू-हलय न,[1] वैयन[2] निवारन मोह-अंधेरो। मैं हरख्यो०॥ १॥ परमें कर मैं निजबुधि अबलों, भवसरमैं दुख सह्यो घनेरो। सो दुख-भानन स्वपरपिछानन, तुम बिन कारन आन न हेर्यो ॥ मैं हरख्यो० ॥२॥ चाह भई शिवराहलाहकी[3] गयो उछाह असंजमकेरो। दौलत हितविराग-चित आन्यो, जान्यो रूप ज्ञानदृग मेरो॥ मैं हरख्यो० ॥ ३॥

(२१)

प्यारी लागै म्हानै जिन छवि थारी ॥ प्यारी० ॥ टेक ॥ परमनिराकुल-पद-दरसावत, वर विरागता-कारी। पट-भूषन-विन पै सुंदरता, सुरनर-मुनिमनहारी॥प्यारी०॥१॥जाहि विलोकत भवि निजनिधि-लहि, चिरविभावता टारी। निरनिमेषतैं[4] देख सचीपति[5], सुरता[6] सफल विचारी॥ प्यारी०॥२॥ महिमा अकथ होत लखि जाको,

१ भ्रू हिलते नहीं। २ वचन। ३ मोक्षमार्गके लाभकी। ४ टिमकाररहित। ५ इन्द्रने। ६ अपना देवपणा।

पशुसम समकितधारी। दौलत रहो ताहि निरखनकी, भवभव टेव हमारी ॥ प्यारी० ॥ ३ ॥

(२२)

निरखि सुख पायो, जिनमुखचंद ॥ नि० ॥ टेक ॥ मोह-महातम नाश भयो है, उर[1]-अंबुज प्रफुलायो। ताप नश्यो बढि उदधि-अनंद ॥ निरखि० ॥१॥ चकवी कुमति विछुरि अति विलखै, आतमसुधास्रवायो[2]। शिथिल भए सब विधिगणफंद ॥ निरखि० ॥ २ ॥ विकट भवोदधिको तट निकट्यो, अघतरुमूल नशायो। दौल लह्यो अब स्वपद स्वछंद ॥ निरखि० ॥३॥

(२३)

निरखि सखि ऋषिनको ईश यह ऋषभ जिन, परखिके स्वपर परसौंज[3] छारी। नैन नाशाग्रधरि मैन[4] विनशायकर, मौनजुत स्वास दिशिसुरभिकारी[5] ॥ निरखि० ॥ १ ॥ धरासम क्षांति-

१ हृदयरूपी कमल। २ आत्मारूपी अमृत झरने लगा। ३ पर परनति। ४ कामदेव। ५ दिशाओंको सुगंधित करने वाली।

जुत नरामरखचरनुत[1], विगुतरागादिमद[2] दुरित-हारी[3] । जासु-क्रमपास[4] भ्रमनाश पंचास्य[5] मृग, वत्सकरि प्रीतिकी रीति धारी ॥ निरखि०॥२॥ ध्यानदवमाहि[6] विधिदारु[7] प्रजराहिं सिर,-केश शुभ जिमि धुआं दिशि वियारी । फसे जगपंक जन-रंक तिन काढने, किधौं जगनाह यह बांह सारी[9] ॥ निरखि० ॥ ३ ॥ तप्तहाटकवरन[10] वसन विन आभरन, खरे थिर ज्यों शिखर, मेरुकारी[11] । दौलको दैन शिवधौल[12] जगमौल[13] जे, तिन्हें कर जोर वंदन हमारी । निरख० ॥ ४ ॥

(२४)

ध्यानकृपानपानिगहि[14]नाशी त्रेसठ प्रकृति अरी[15] । शेष पचासी[16] लागरही है ज्यों जेवरी जरी

१ मनुष्य देव विद्याधरोसे वदनीय । २ रहित रागादि मदसे । ३ पापोको हरनेवाले । ४ जिनके चरणोंके पास । ५ सिंह । ६ ध्यानरूपी अग्निमें । ७ कर्मरूपी ईंधन । ८ चिरतारा है । ९ पसारी । १० तपाये हुये सोनेकासा रग । ११ सुमेरु पर्वतका शिखर । १२ मुक्तिरूपी महल । १३ जगतके शिरोमणि । १४ ध्यानरूपी तलवार हाथमें लेकरि । १५ घातिया । कर्मोंकी १६ अघातियाकर्मोंकी पचासी प्रकृतिया ।

॥ ध्यान०॥ टेक ॥ दुठ अनंग[1]-मातंग-भंगकर, है प्रबलंग-हरी[2]। जा-पद भक्ति भक्तजन दुख,-दावानलमेघ झरी ॥ ध्यान० ॥ १ ॥ नवल धवल पल[3] सोहै कलमैं[4], क्षुधतृषव्याधिटरी। हलत न पलक अलक[5] नख बढत न, गति नभमांहि करी। ध्यान० ॥ २ ॥ जा-विन-शरन मरन जर धर धर, महा असात भरी। दौल तास पद दास होत है वास-मुक्ति-नगरी ॥ ध्या ३ ॥

(२५)

दीठा भागनतैं जिन-पाला, मोहनाशनेवाला। दीठा०॥टेक॥ शुभग निसंक रागविन यातैं, वसन न आयुध बाला ॥ दीठा० ॥ १ ॥ जास ज्ञानमें जुगपत भासत, सकल पदारथमाला ॥ दीठा० ॥ २ ॥ निजमें लीन हीन इच्छा पर,-हितमित

१ कामदेवरूपी हाथीको मारनेवाले। २ प्रबल सिंह। ३ मास रुधिर। ४ शरीरमे। ५ केश नख। ६ जरा बुढापा। ७ सम्यग्दृष्टी-से लगाकर बारहवे गुणस्थान तकके जीव जिन कहलाते हैं उनका रक्षक। ८ स्त्री।

वचन रसाला ॥ दीठा० ॥३॥ लखि जाकी छबि आतम-निधि-निज, पावत होत निहाला ॥दीठा० ॥४॥ दौल जासगुन चिंततरत है, निकट विकट भवनाला ॥ दीठा० ॥ ५ ॥

(२६)

थारे तो बैना[1]में सरधान घणो छै म्हारे, छवि निरखत हिय सरसावै। तुम धुनि[2]घन परचहन[3]-दहनहर, वरसमतारसझर बरसावै॥ थारे तो० ॥ ॥१॥ रूप निहारत ही बुध है सो निजपर चिह्न जुदे दरसावै। मैं चिदंक[4] अकलंक अमल थिर, इंद्रिय[5]-सुख-दुख-जड़ फरसावै ॥ थारे तो० ॥२॥ ज्ञानविरागसुगुनतुम-तनकी, प्रापतिहित सुर[6]-पति तरसावै। मुनि बडभाग लीन तिनमैं नित, दौल धवल[7]-उपयोग-रमावै थारे तो० ॥ ३ ॥

---

१ । वचनोमे । २ आपका वचनरूपी मेघ । ३ परपदार्थोंकी चाहरूपी अग्निको बुझानेवाला है। ४ चैतन्यस्वरूप । ५ इंद्रियों के सुखदुख जड़का स्पर्श करते है, मेरा नहीं मुझे सुखदुख होते नहीं । ६ इंद्र । ७ विशुद्ध वा शुद्ध ।

(२७)

त्रिभुवन आनँदकारी जिन छवि, थारी नैन निहारी ॥त्रिभुवन॥टेक॥ ज्ञान अपूरव उदय भयो अब, यादिनकी बलिहारी। मो उर मोद बढ्यो जु नाथ तस, कथा न जात उचारी ॥ त्रिभुवन ॥ १ ॥ सुन घनघोर मोर[1]-मुद-ओर न, ज्यों निधि पाय भिखारी । जाहि लखत झट झरत-मोह-रज, होय सो भवि अविकारी ॥ त्रिभुवन ॥२॥ जाकी सुंदरता सु पुरंदर[2],–शोभ-लजावन-हारी । निज अनुभूति-सुधा छवि पुलकित, वदन मदन-अरि-हारी ॥ त्रिभुवन० ॥३॥ शूल[3] दुकूल[4] न बाला माला, मुनि-मन-मोद-प्रसारी । अरुन न नैनन सैन भ्रमै न न, बंक न लंक[5] सम्हारी ॥ त्रिभुवन ॥४ ॥ तातैं विधि विभाव-क्रोधादि, न लखियत हे जगतारी । पूजत पातकपुंज पलावत, ध्यावत शिव-विस्तारी ॥ त्रिभुवन ॥ ५ ॥ कामधेनु सुरतरु चिंतामणि, इकभव सुख-करतारी । तुमछवि लखत मोदतैं जो सुर, सो तुम

१ । मयूरका हर्ष । २. इन्द्रकी शोभा । ३ त्रिशूल । ४ वस्त्र । ५. कमर ।

पद-दातारी ॥ त्रिभुवन० ॥ ६ ॥ महिमा कहत न लहत पार सुर,—गुरुहूकी बुधिहारी । और कहै किम ? दौल चहै इम, देहु दशा तुम धारी ॥ त्रि-भुवन० ॥ ७ ॥

(२८)

जिन छवि तेरी यह, धन जगतारन, जिन० ॥ टेक ॥ मूल[1] न फूल[2] दुकूल[3] त्रिशूल न, शमदम कारन भ्रमतमवारन ॥ जिनछवि० ॥१॥ जाकी प्रभुताकी महिमातैं, सुर[4]-अधीशता लागत सार न ॥ अवलोकत भवि-थोक मोख-मग,—चरत वरत निज-निधि उरधारन ॥ जिनछवि० ॥२॥ जजत[5] भजत अघ तो को अचरज, समकित पावन भावन-कारन । तासु सेवफल एव चहत नित, दौलत जाके सुगुनउचारन ॥ जिनछवि० ॥३॥

(२९)

आज मैं परम पदारथ पायो, प्रभुचरनन

१ जटा वा वल्कल । २ फूलोंकी माला । ३ वस्त्र । ४ इन्द्रपणा ।
५ आपके पूजनेसे यदि पाप भाग जाते है तो इसमे कौनसा आश्चर्य है ? ।

चितलायो ॥ आज मैं०॥ टेक॥ अशुभ गये शुभ प्रगट भए हैं, सहज कलपतरु छायो। आज०॥ ॥ १ ॥ ज्ञान शक्ति तप ऐसी जाकी, चेतन-पद दरसायो। आज मैं० ॥ २ ॥ अष्ट कर्मरिपु जोधा जीते, शिवअंकूर जमायो॥ आज०॥३॥

(३०)

नेमिप्रभूकी श्यामवरन छबि, नैनन छाय रही ॥ नेमि० ॥ टेक ॥ मणिमय तीन पीठपर अंबुज, तापर अधर ठही ॥ नेमि० ॥ १ ॥ मार[1] मार तप धार जार विधि, केवलरिद्धि लही। चार तीस अतिशय दुति-मंडित, नवदुग[2]दोष नहीं ॥ नेमि ० ॥ ३ ॥ जाहि सुरासुर नमत सतत[3], मस्तकतैं परस म[4]ही। सुरगुरु-वर-अंबुज-प्रफुलावन, अदभुत[5]भान सही ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ धर अनुराग विलोकत जाको, दुरित नसैं सब ही। दौलत महिमा अतुल जासकी, कापै जात कही ॥ नेमि० ॥ ४ ॥

१ कामदेवको मारकर। २ नवदुगुण-अष्टादश दोष। ३ नीरंतर। ४ पृथिवी। ५ अपूर्व सूर्य।

३१]

अहो नमिजिनप[1] नित नमत शत सुरप[2] कंदर्प[3]-गजदर्प-नासन-प्रबल पनलपन[4]। अहो० ॥टेक॥ नाथ ! तुम वानपयपान करत भवि, नसै तिनकी जरा-मरन-जामन-तपन ॥ अहो० ॥ ॥ १ ॥ अहो शिवभौन तुम चरनचिंतौन जे, करत तिन जरत भावी[5] दुखदभवविपन[6]। हे भुवनपाल तुम विशद[7]गुनमाल उर धरैं, ते लहैं टुककालमें श्रेयपन[8]। अहो नमि० ॥ २ ॥ अहो गुनतूप[9] तुमरूप चखसहसकर[10], लखत संतोष प्रापति भयो नाकपं न। अज[11] अकल[12] तज सकल दुखद परिगह-कुग्रह[13], दुसहपरिसह सही धार व्रतसारपन ॥ अहो नमि० ॥ पाय केवल सकल लोककरवत लख्यो, अख्यो[14] वृष द्विधा सुनि नसत

१ नमिनाथ भगवान। २ सौइन्द्र। ३ कामदेव। ४ पंचानन सिंह। ५ भविष्यमे दुख देनेवाले। ६ ससार वन। ७ स्वच्छ। ८ श्रेष्ठता। ९ गुणोंके समूह। १० इन्द्र। ११ जिसका आगेको जन्म न हो। १२ निष्पाप। १३ खोटे ग्रह। १४ उपदेश्यो।

भ्रमतम-झंपन[1] । नीच कीचक कियो मीचतैं[2] रहित जिम, दौंसको[3] पास ले नाश भवपासँपन[4] ॥ अहो नमि० ॥ ४ ॥

(३२)[5]

प्रभु मोरी ऐसी बुधि कीजिये, रागदोष दावानलसे बच, समतारसमें भीजिए ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ परमैं त्याग अपनपो निजमें, लाग न कबहूं छीजिए[6] । कर्मकर्मफलमांहि न राचत, ज्ञानसुधा-रस पीजिए ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सम्यग्दर्शन ज्ञान चरननिधि, ताकी प्रापति कीजिए । मुझ कार-जके तुम बडकारन, अरज दौलकी लीजिए ॥ प्रभु० ॥ २ ॥

(३३)

हे जिन तेरो सुजस उजागर गावत हैं मुनिजन ज्ञानी, हे जिन० ॥ टेक ॥ दुर्जय मोह-महा-भट जानै, निज-बस कीने जगप्रानी । सो तुम

१ ढक्कन २ मृत्युसे । ३ दौलतको । ४ पचपरिवर्तनरूप ससारकी फास । ५ इस पदके दौलतरामजीकृत होनेमे सदेह है । ६ न्यून होवै ।

ध्यानकृपान पानि-गहि, ततछिन ताकी थिति भानी ॥ हे जिन० ॥ १ ॥ सुप्त अनादि-अविद्या-निद्रा, जिन जन निजसुधि विसरानी। ह्वै सचेत तिनि निजनिधि पाई, श्रवन सुनी जब तुम वानी ॥ हे जिन० ॥ २ ॥ मंगलमय तू जगमें उत्तम, तुही सरन शिवमगदानी। तुम-पद-सेवा परम औषधी, जन्मजरामृत-गद-हानी[1] ॥ हे जिन० ॥ ३ ॥ तुमरे पंचकल्यानकमाहीं, त्रिभुवन-मोद-दशा ठानी। विष्णु, विदंवर, जिष्णु, दिगंवर, बुध, शिव, कहि ध्यावत ध्यानी ॥ हे जिन० ॥ ४ ॥ सर्व-दर्व-गुनपरजय-परनति, तुम सुबोधमैं नहिं छानी। तातैं दौलदास उरआशा, प्रगट करो निजरससानी ॥ हे जिन० ॥ ५ ॥

(३४)

हो तुम त्रिभुवनतारी हो जिनजी, मो भव-जलधि क्यों न तारत हो? हो तुम० ॥ टेक ॥ अंजन[2] कियो निरंजन[3] तातैं, अधम-उधार-विरद धारत

१ जन्मजरामरनरूपी रोग। २ अजनचोरको। ३ कर्मरहित।

हो। हरि[1] वराह[2] मर्कट[3] झट तारे, मेरी बेर ढील पारत हो ॥ हो तुम० ॥ १ ॥ यों बहु अधम उधारे तुम तो, मै कहा अधम न? मुहि टारत हो। तुमको करनो परत न कछु शिव,-पथ-लगाय भव्यनि सारत हो ॥ हो तुम० ॥ २ ॥ तुम छवि निरखत सहज टरै अघ, गुण चिंतत विधि-रज झारत हो। दौल न और चहै मो दीजे, जैसी आप भावनारत हो। हो तुम० ॥ ३ ॥

(३५)

और अबै न कुदेव सुहावै, जिन थांके चरननरति जोरी ॥ और० ॥ टेक ॥ काम-कोह-वश गहैं असन असि, अंक[4]-निशंक धरैं तिय गोरी। औरनके किम भाव सुधारैं ?, आप कुभाव-भार-धर-धोरी ॥ और० ॥१॥ तुम विनमोह अकोह[5]-छोहबिन, छके शांतरसपीय कटोरी। तुम तज[6] सेय अमेय[7] भरी जो, विपदा जानत हो सब

१ सिंह। २ सूअर। ३ बदर। ४ गोदमे। ५ क्रोधरहित।
६ तुम्हे छोडकर जो मै दूसरेकी सेवा करके। ७ अपरिमाण।

मोरी॥ और० ॥२॥ तुम तज तिन्हें भजै शठ जो सो, दाख न चाखत खात निमोरी। हे जगतार! उधार दौलको, निकट विकट-भव-जलधि[1] हिलोरी॥ और०॥ ३॥

(३६)

प्रभु थारी आज महिमा जानी, प्रभुथारी॥ ॥ टेक॥ अबलों मोहमहामद पिय मैं, तुमरी सुध विसरानी। भागजोग तुम शांति छबी लखि, जडतानींद बिलानी॥ प्रभु०॥ १ ॥ जग-विजयी दुखदाय रागरुष, तुम तिनकी थिति भानी। शांतिसुधासागर गुनआगर, परम विराग विज्ञानी ॥ प्रभु० ॥२॥ समवसरन अतिशय कमलाजुत, पै निरग्रंथ निदानी। कोह-विना दुठमोहविदारक, त्रिभुवनपूज्य अमानी॥ प्रभु०॥३॥ एकस्वरूप सकलज्ञेयाकृत, जगउदास जगज्ञानी। शत्रुमित्र सबमैं तुम सम हो, जो दुखसुखफलथानी॥ प्रभु०॥ ४॥ परम ब्रह्मचारी है प्यारी, तुम हेरी

१ भवसमुद्रकी लहरे।

शिवरानी। है कृतकृत्य तदपि तुम शिवमग, उपदेशक-अगवानी। प्रभु० ॥५॥ भई कृपा तुमरी तुममैं यह, भक्ति सु मुक्तिनिशानी। है दयाल अब देहु दौलको, जो तुमने कृति ठानी ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

(३७)

तुम सुनियो श्रीजिनराजा! अरज इक मेरीजी ॥ तुम० ॥ टेक ॥ तुम विनहेत-जगतउपकारी वसुकर्मन मोहि कियो दुखारी, ज्ञानादिक निधि हरी हमारी, द्यावो सो ममकेरीजी ॥ तुम० ॥ १ ॥ मैं जिन! भूलि तुमहिं सँग[1] लाग्यो, तिनकृत करन विषयरसपाग्यो, तातैं जन्मजरादव-दाग्यो करि समता मम नेरीजी ॥ तुम० ॥२॥ वे अनेक प्रभु मैं जु अकेला, चहुंगतिविपतिमाहि मोहि पेला, भाग जगे तुमसे भयो भेला, तुम हो न्याय-निवेरी जी ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तुम दयाल बेहाल हमारो, जगतपाल निज बिरद सँभारो, ढील

१ कर्मोंके संग।

न कीजै वेगि निवारो, दौलतणी भवफरी जी ॥ तुम० ॥ ४ ॥

(३८)

जय वीर जिनवीर जिनवीर जिनचंद, कलुष-निकंद मुनिहृदसुखकंद ॥जय०॥टेक॥ सिद्धारथ नंद त्रिभुवनको दिनेंद चंद, जावच्चकिरन भ्रम-तिमिरनिकंद । जय० ॥ १ ॥ जाके पद अर-विंद सेवत सुरेंद्र वृंद, जाके गुन रटत फटत भव-फंद ॥ जय० ॥ २ ॥ जाकी शांतमुद्रा निरखत हरखत रिखि, जाके अनुभवत लहत चिदानंद ॥ जय०॥३॥ जाके घातिकर्म विघटत प्रघटत भये, अनंतदरस-बोध-वीरज-अनंद ॥जय० ॥४ लोकालोकज्ञाता पै स्वभावरत राता प्रभु, जगको कुशल-दाता त्राता पै अद्वंद ॥ जय० ॥ ५ ॥ जाकी महिमा अपार गणी न सके उचार, दौलत नमत सुख चहत अमंद ॥ जय० ॥ ६ ॥

(३९)

जय श्रीरिषभ जिनंदा, नासतो करौ स्वामी मेरे

दुखदंदा ॥टेक॥ मातु मरु देवी प्यारे, पिता नाभिके दुलारे, वंश तो इक्ष्वाक जैसें नभ वीच चंदा ॥ जय० ॥ १ ॥ कनक वरन तन, मोहत भविक जन, रवि शशि कोटि लाजे, लाजै मकरंदा[1] ॥ ॥ जय० ॥२॥ दोष तो अठारा नासे, गुन छियालीस भासे, अष्टकर्मकाट स्वामी, भये निरफंदा ॥ जय० ॥ ३ ॥ चार ज्ञानधारी गनी, पार नहिं पावै मुनी. दौलत नमत सुख चाहत अमंदा ॥ ॥ जय० ॥ ४ ॥

(४०)

सुधि लीज्योजी म्हारी. मोहि भवदुखदुखिया जानके, सुधि लीज्योजी म्हारी ॥टेक॥ तीनलोक स्वामी नामी तुम, त्रिभुवनके दुखहारी। गनधरादि तुव सरन लई लखि, लीनी सरन तिहारी ॥ सुधि० ॥१॥ जो विधि अरी करी हमरी गति, सो तुम जानत सारी। यादकिये दुख होत हिये ज्यों, लागत कोट कटारी ॥ सुधि० ॥ २ ॥ लब्धिअपर्याप्त

१ कामदेव।

निगोदमें, एक उसासमझारी। जनममरन नव दुगुन विथाकी, बात न जात उचारी ॥ सुधि० ॥ ३ ॥ भू जल ज्वलन पवन प्रत्येक तरु, विकलत्रयतनधारी। पंचेंद्री पशुनारकनरसुर, विपति भरी भयकारी ॥ सुधि० ॥४॥ मोहमहारिपु नेक न सुखमें, होन दई सुधि थारी। सो दुठ मंद भयो भागनतैं, पाये तुम जगतारी ॥ सुधि० ॥ ५ ॥ यदपि विरागि तदपि तुम शिवमग, सहज प्रगट करतारी। ज्यों रविकिरन सहज मगदर्शक, यह निमित्त अनिवारी ॥ सुधि० ॥६॥ नाग छाग गज बाघ भीलदुठ, तारे अधम उधारी। सीस नवाय पुकारत अब तो दौल अधमकी बारी ॥ ॥ सुधि० ॥७॥

(४१)

जाऊं कहां तज शरन तिहारे, जाऊं ॥ टेक ॥ चूक अनादितणी या हमरी, माफ करो करुणा गुणधारे ॥ जाऊं० ॥ १ ॥ डूबत हों भवसागरमें अब, तुम विन को मुहि बार निकारे। तुम सम

१ अठरह। २ पृथिवीकाय। ३ अग्निकाय।

देव अवर नहिं कोई, तातैं हम यह हाथ पसारे ॥ जाऊं० ॥ २ ॥ मोसम अधम अनेक उधारे, वरनत हैं श्रुत शास्त्र अपारे। दौलतको भवपार करो अब, आयो है शरनागत थारे ॥जाऊं॥३॥

३। भागचंदकृत पद।

(४२)

वीतराग जिन महिमा थारी, वरन सकै को जन त्रिभुवनमैं ॥ वीतराग० ॥ टेक ॥ तुमरे अतट चतुष्टय प्रगट्यो, निःशेषावरनच्छय छिनमैं। मेघपटल विघटनतैं प्रगटत, जिम मार्तंडप्रकाश[1] गगनमें ॥ वीतराग ॥ १ ॥ अप्रमेय ज्ञेयनके ज्ञायक, नहिं परिणमत तदपि ज्ञेयनमैं। देखत नयन अनेकरूप जिम, मिलत नहीं पुनि निज विषयनमैं ॥ वीतराग० ॥ २ ॥ निज उपयोग आपणे स्वामी, गाल दिया निश्चलआपनमैं। है असमर्थ वाह्य निकसनको, लवण घुला जैसैं जीवनमैं[2] ॥ वीतराग० ॥ ३ ॥ तुमरे भक्त परम

१ सूर्यका प्रकाश। २ जलमे।

सुख पावत, परत अभक्त अनंत दुखनमैं। जैसो मुख देखो तैसा है, भासत जिम निर्मल दरपनमैं ॥ वीतराग० ॥ ४ ॥ तुम कषाय विन परम शांत हो, तदपि दक्ष[1] कर्मारिहतनमैं[2]। जैमैं अति शीतल तुषार[3] पुनि, जार देत द्रुमभारैं[4] गहनमैं[5]। ॥ वीतराग०॥५॥ अब तुम रूप जथारथ पायो, अब इच्छा नहिं अन कुमतनमैं। भागचन्द अमिरत रस पीकर, फिर को चाहै विष निज मनमैं ॥ वीतराग० ॥ ६ ॥

४३। राग जंगला।

तुम गुनमनिनिधि हो अरहंत। तुम० ॥१॥ ॥ टेक ॥ पार न पावत तुमरो गनपति, चार ज्ञानधर संत ॥ तुम गुन० ॥ १ ॥ ज्ञानकोष सब दोषरहित तुम, अलख अमूर्त्ति अचिंत ॥ तुम गुन० ॥ २ ॥ हरिगन अरचत तुमपद-वारिज, परमेष्ठी भगवंत ॥ तुम गुन० ॥ ३ ॥ भागचंदके

१ चतुर। २ कर्मशत्रुओंके मारनेमे। ३ हिम—वरफ। ४ वृक्षोंका समूह। ५ वनमे।

घटमंदिरमैं, बसहु सदा जयवंत ॥ तुमगुन०।४।

४४। राग जंगला।

म्हांकै जिनमूरति हृदय बसी बसी ॥ टेक ॥ यद्यपि करुणारसमय तद्यपि, मोहशत्रुहन-असी असी ॥ म्हांकै० ॥ १ ॥ भामंडल ताको अति निर्मल, निष्कलंक जिम ससी ससी ॥ म्हांकै० ॥ ॥ २ ॥ लखत होत अति शीतलमति जिम, सुधाजलधिमैं धसी धसी ॥ म्हांकै० ॥ ३ ॥ भागचंद जज ध्यानमंत्रसों, ममता नागन नसी नसी ॥ म्हांकै ॥ ४ ॥

४५। राग सोरठ।

इष्ट जिनकेवली, म्हांकै इष्टजन केवली, जिन सकल कलिमल दली ॥ टेक ॥ शांत छबि जिनकी विमल जिम, चंद्रदुति मंडली। संत-जन-मन[1]-केकि-तर्पन, सघन घनपाटली[2] ॥ इष्टजिन० ॥ १ ॥ स्यात्[3]पदांकित धुनि सु जिनकी, बदनतैं

१ । मानरूपी मयूरको खुश करनेके लिये । २ मेघपटल ।
३ स्याद्वादसे चिह्नित ।

निकली। वस्तु तत्त्वप्रकाशिनी जिम, भानु किरनावली ॥ इष्टजिन० ॥ २ ॥ जास पद-अर[1]-विंदकी, मकरंद[2] अति निरमली। ताहि घ्रान[3] करै नमित हरि, मुकुटदुतिमनि, अली ॥ इष्टजिन ॥ ३॥ जाहि जजत विराग उपजत, मोहनिद्रा टली। ज्ञानलोचनतैं प्रगट लखि, धरत शिववटगली ॥ इष्टजिन० ॥ ४ ॥ जासु गुन नहिं पार पावत, बुद्धिरिद्धिवली[4]। भागचंद सु अलपमति जन, की तहां क्या चली ॥ इष्टजिन० ॥ ५ ॥

४६। राग सोरठ।

स्वामी मोहि अपनो जान तारो, या बिनती अब चित धारो ॥ टेक ॥ जगत उजागर करुना-सागर, नागर नाम तिहारो ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ भव अटवीमें भटकत भटकत, अब मैं अति ही हार्यो ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ भागचन्द स्वच्छंद ज्ञानमय, सुख अनंत विस्तारो ॥ स्वामी० ॥३॥

---

१ चरण कमलकी। २ सुगंधित रज। ३ उसको सूंघते हैं नमित हुये इन्द्रोंके मुकुटोंके मणि रूपी भॅवरे। ४ बुद्धिरिद्धिके धारक।

४७ । राग सोरठ ।

स्वामीजी तुम गुन अपरंपार, चंद्रोज्वल अविकार । स्वामी जी० ॥ टेक ॥ जबै तुम गर्भमाहिं आये, तबै सब सुरगन मिल धाये, रतन नगरीमें बरसाये, अमित अमोघ सु ढार ॥ स्वामी जी० ॥ १ ॥ जनम प्रभु तुमने जब लीना, न्हवन मंदरपै हरि कीना, भक्ति कर सची सहित भीना, बोला जयजयकार ॥ स्वामीजी० ॥ २ ॥ जगत जब छनभंगुर जाना, लियो तब नगनवृती बाना, स्तवन लोकांतिकसुर ठाना-त्याग राजको भार ॥ स्वामीजी० ॥ ३ ॥ घातिया प्रकति जबै नासी, चराचर वस्तु सबै भासी, धर्मकी वृष्टि करी खासी, केवलज्ञान-भँडार ॥ स्वामीजी० ॥ ४ ॥ अघाती प्रकृति सु विघटाई, मुक्तिकांता तब ही पाई, निराकुल आनँद असहाई, तीनलोकसरदार ॥ स्वामीजी० ॥ ५ ॥ पार गनधर हू नहिं पावैं, कहां लगि भागचंद गावैं, तुमारे चरनांबुज

ध्यावै, भवसागरसों तार ॥ स्वामी जी० ॥ ६ ॥

(४८) राग धनाश्री ।

प्रभु थांको लखि मम चित हरषायो ॥ टेक ॥ सुंदर चिंतारतन अमोलक, रंक पुरष जिम पायो ॥ प्रभु थाँको०॥१॥ निर्मल रूप भयो अब मेरो, भक्ति नदी जल-न्हायो ॥ प्रभु थाँको० ॥ २ ॥ भागचंद अब मम करतलमैं, अविचल शिवथल आयो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

(४९) रागमल्हार ।

प्रभु म्हाकी सुधि, करुना करि लीजै ॥टेक॥ मेरे इक अवलं-बन तुम ही, अब न विलंब करीजै ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ अन्य कुदेव तजे सब मैंने, तिनतैं निजगुन छीजै ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भागचंद तुम सरन लियो है, अब निश्चल पद दीजै ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

(५०) राग कहरवा—कलिंगड़ा ।

केवलजोति सुजागीजी, जब श्रीजिनवरकै ॥ केवल० ॥ टेक ॥ लोकालोकविलोकत

जैसैं, हस्तामल बडभागीजी ॥ केवल० ॥ १ ॥ हरिचूडामणिशिखा सहज ही, नमत भूमितैं लागीजी ॥ केवल० ॥ २ ॥ समवसरन-रचना सुर कीनी. देखत भ्रम जन त्यागीजी ॥ केवल० ॥ ३ ॥ भक्तिसहित अरचा तव कीनी, परम-धरमअनुरागीजी ॥ केवल० ॥ ४ ॥ दिव्य ध्वनि सुनि सभा दुवादश, आनंदरसमैं पागी-जी ॥ केवल० ॥ ५ ॥ भागचंद प्रभुभक्ति चहत है, और कछू नहिं मांगीजी ॥ केवल० ॥६॥

(५१) ख्याल।

विन काम ध्यान मुद्राभिराम तुम हो, जगना-यकजी ॥टेक॥ यद्यपि वीतरागमय तद्यपि, हो शिवदायकजी ॥ विन काम० ॥ १ ॥ रागीदेव आपही दुखिया. सो क्या लायकजी ॥ विन काम० ॥२॥ दुर्जय मोहशत्रु हनवेको, तुम वच शायकजी ॥ विनकाम० ॥३॥ तुम भवमोचन ज्ञान सुलोचन, केवलक्षायकजी ॥ विनकाम० ॥४॥ भागचंद भागनतैं प्रापति, तुम सब ज्ञायक जी ॥ विनकाम० ॥ ५ ॥

५२। भावना।

प्रभूपै यह वरदान सुपाऊं, फिर जगकीच बीच नहि आऊं ॥ टेक ॥ जल गंधाक्षत, पुष्प सु मोदक, दीप धूप फल सुंदर ल्याऊं। आनँद जनक-कनक-भाजन-धरि, अर्घ अनर्घ बनाय चढाऊं ॥ प्रभूपै० ॥ ॥ आगमके अभ्यासमांहि पुनि, चित एकाग्र सदीन लगाऊं। संतनिकी संगति तजिकैं मैं, अंत कहूं इक छिन नहिं जाऊं ॥ प्रभूपै० ॥२॥ दोपवादमैं मौन रहूं फिर, पुण्य-पुरुषगुन निशदिन गाऊं। मिष्ट स्पष्ट सबहिसों भाषों, वीतराग निज भाव बढाऊं ॥ प्रभूपै० ॥ ३ ॥ बाहिजदृष्टि खैंचके अंतर, परमानंद स्वरूप लखाऊं। भागचंद शिव प्राप्त न जोलों, तोलों तुम चरणांबुज ध्याऊं ॥ प्रभूपै० ॥४॥

(५३)

मैं तुम शरनलियो, तुम सांचे प्रभु अरहंत। मैं तुम० ॥ टेक ॥ तुमरे दर्शन-ज्ञान-मुकरमैं सकल ज्ञेय झलकंत। अतुल निराकुल सुख आ-

१ यातो आपना विरद भूल जावो या मेरी अर्ज सुनलो।

स्वादन, बीरज अतुल अनंत ॥ मैं तुम० ॥१॥ रागरोष-विभाव नाश भए, परम समरसी संत। पद देवाधिदेव पाए किय, दोष क्षुधादिक अंत ॥ मैं तुम० ॥ २ ॥ भूषण वसन शस्त्र कामादिक, करनंविकार अनंत। तिन विन तुम परमौदारिक तन, मुद्रा सम शोभंत ॥ मैं तुम० ॥ ३ ॥ तुम बानीतैं धर्मतीर्थ जग,-माहि त्रिकाल चलंत॥ निज कल्याण-हेतु इंद्रादिक, तुम पद सेव करंत ॥ मैं तुम० ॥ ४ ॥ तुम गुन अनुभवतैं निज-पर-गुन, दर्शत अगम अचिंत। भागचंद निजरूप प्राप्ति अब, पावैं हम भगवंत ॥ मैं तुम० ॥ ५ ॥

५४। राग दीपचंदी।

कीजिए कृपा मोहि दीजिए स्वपद, मैं तो थांको ही सरन लीनो हे नाथजी ॥ टेक ॥ दूर करो इह मोह शत्रुको, फिरत सदा जो मेरे साथजी ॥ कीजिए० ॥ १ ॥ तुमरे वचन कर्मगद मोचन, संजीवन औषधी क्वाथजी ॥ कीजिए०

१। इद्रियोके विकार।

॥ २ ॥ तुमरे चरनकमल बुध ध्यावत, नावत हैं पुन निज माथजी ॥ कीजिए० ॥३॥ भाग-चंद मैं दास तिहारो, ठाडो जोड़ूं जुगल हाथजी ॥ कीजिए ॥ ४ ॥

(५५)

सोई है सांचा महादेव हमारा, जाके नाहीं रागरोष-मद-मोहादिक विस्तारा ॥ सोई है ॥ टेक ॥ जाके अंग न भस्म लिप्त है, नहिं रुंडन-कृतहारा। भूषण व्याल न भाल चंद्र नहिं, शीश-जटा नहिं धारा ॥ सोई है० ॥ १ ॥ जाके गीत न नृत्य न मृत्यु न, बैल तणो न सवारा। नहि कोपीन न काम कामिनी, नहि धन धान्य पसारा ॥ सोई है० ॥ २ ॥ सो तो प्रगट समस्त वस्तुको, देखनजाननहारा। भागचंद ताहीको ध्यावत, पूजत वारंवारा ॥ सोई है० ॥ ३ ॥

(५६)

स्वामी रूप अनूप विशाल, मन मेरे बसत। स्वामी ॥ टेक ॥ हरिगन चमरवृंद ढोरत तहँ,

उज्वल जेम मराल ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ छत्रत्रय ऊपर राजत पुनि, सहित सु मुक्तामाल ॥ स्वामी० ॥२॥ भागचंद ऐसे प्रभुजीको, नावत माथ त्रिकाल ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

(५७)

आनंदाश्रु बहै लोचनतैं, तातैं आनन न्हाया। गद्गद शुद्ध वचन जुत निर्मल, मिष्ट गान सुरगाया ॥ आनंदाश्रु० ॥ टेक ॥ भवबनमैं बहु भ्रम न कियो तहँ, दुखदावानल ताया। अब तुम भक्ति-सुधारस-वापी,-मैं अवगाह कराया। आनंदाश्रु ॥ १ ॥ तुम वपुदर्पनमें मैंने अब, आतमस्वरूप लखाया। सर्व कषाय नष्ट भये अब ही, विभ्रम दुष्ट भगाया ॥ आनंदाश्रु ॥२॥ कल्पवृक्ष मैंने निज घरके, आंगन मांझ उगाया। स्व [illegible] ोक्ष विलास वास पुनि, मम करतलमैं [illegible] ।नंदाश्रु० ॥ २ ॥ कलिमलपंक सकल [illegible] से दूर बहाया। भागचंद तुम चर- [illegible] क्तिसहित सिर नाया ॥ आनं-

(५८)

मो-सम कौन कुटिल खल कामी, तुमसम कलिमल दलन न नामी ॥ टेक ॥ हिंसक झूठ वाद-मति विचरत परधन-हर परवनितागामी। लोभितचित्त वित्त नित चाहत, धावत दशदिश करत न खामी ॥ मोसम० ॥ १ ॥ रागी देव बहुत हम जांचे, राचे नहिं, तुम सांचे स्वामी। बांचे श्रुत कामादिक-पोषक, सेये कुगुरु सहित धन धामी ॥ मोसम० ॥ २ ॥ भाग उदयसे मैं प्रभु पाये, वीतराग तुम अंतरजामी। तुम धुनि सुनि परजयमें परगुण, जाने निजगुणचिन विसरामी ॥ मोसम० ॥ ३ ॥ तुमने पशुपक्षी सब तारे, तारे अंजन चोर सुनामी। भागचंद करुणाकर सुखकर, हरना यह भवसंतति लामी ॥ मोसम० ॥ ४ ॥

कवि भूधरदासकृत पद।

५९। रागगौरी।

अजित जिनेश्वर अघहरणं, अघहरणं अशरन शरणं ॥ अजित० ॥ टेक ॥ निरखत नयन

॥ टेक ॥ तारिए तारिए अधम उधारिए, उधा-रिए, तुम करुनाके कंद ॥ एजी० ॥ १ ॥ हस्तिनापुर जनमें जग जानै, विश्वसेननृपनंद । एजी० ॥ २ ॥ धनि वह माता एरा देवी, जिन जाए जगचंद ॥ एजी० ॥ ३ ॥ भूधर विनवै दूर करो प्रभु, सेवकके भवदंद ॥ एजी० ॥ ४ ॥

६३ । राग धनासरी ।

शेष सुरेश नरेश रटैं तोहि, पार न कोई पावै जू ॥ शेष० ॥ टेक ॥ कांपै[1] नपत व्योमैं[2] विलसत सौं[3], को तारे गिन लावै जू ॥ शेष० ॥ १ ॥ कौन सुजान मेघ-बूंदनकी, संख्या समुझ सुनावै जू ॥ शेष० ॥ २ ॥ भूधर सुजस-गीत-संपूरन, गणपैंति[4] भी नाहिं गावै जू ॥ शेष० ॥ ३ ॥

६४ । राग रामकली ।

आदिपुरुष मेरी आस भरो जी । अवगुन मेरे माफ करो जी ॥ आदि० ॥ टेक ॥ दीनद-याल विरद विसरो जी, कै विनती मोरी श्रवण

१ किससे । २ आकाश । ३ विलस्तोसे । ४, गणधर ।

धरो जी ॥ आदि० ॥ १ ॥ काल अनादि वस्यो जगमाहीं, तुमसे जगपति जाने नाहीं। पाँय न पूजे अंतरजामी, यह अपराध क्षमाकर स्वामी ॥ आदि० ॥ २ ॥ भक्तिप्रसाद परम पद है है, बंधी बंधदशा मिटि जैहै। तब न करों तेरी फिर पूजा, यह अपराध छमो प्रभु दूजा ॥ ॥ आदि० ॥ ३ ॥ भूधर दोष किया बकसावे[1], अरु आगेंको लारें लावे। देखो सेवककी ढिठैवाई[2], गरुवे साहिबसौं[3] बनियाई[4] ॥ आदि० ॥ ॥ ४ ॥

६५। राग ख्याल करवा।

म्हे तो थांकी आज महिमा जानी, अबलौं उरनहिं आनी ॥ म्हेतो० ॥ टेक ॥ काहेको भव-वनमें भ्रमते, क्यों होते दुखथानी ॥ म्हेतो० ॥ १ ॥ नामप्रताप तिरे अंजनसे, कीचकसे अभिमानी ॥ म्हेतो० ॥ २ ॥ ऐसी साख बहुत सुनियत है,

१ माफ कराता है। २ धीटता। ३ बडभारी मालिकसे भी। ४ बनियापन। करता है।

तनक नहिं त्रिपते, आँनंदजनक कनक-वरणं ॥ अजित० ॥ १ ॥ करुणा भीजे वायक[1] जिनके, गणनायक उर आभरणं । मोह महारिपु घायक[2] सौंयक[3], सुखदायक दुखछय करणं ॥ अजित० ॥ २ ॥ परमातम प्रभु पतित-उधारन, वाँरण-लच्छन-पगधरणं[4] । मनमथमारण[5], विपति विदारण, शिवकारण तारणतरणं ॥ अजित० ॥३॥ भव-आताप-निकंदन-चंदन, जगवंदन बांछा भरणं । जय जिनराज जगत वंदत जिहँ, जन भूधर वंदत चरणं ॥ अजित० ॥ ४ ॥

६० । राग काफी ।

सीमंधर स्वामी, मैं चरननका चेरा । इस असार संसारमैं कोई, अवर न रच्छक मेरा ॥ सीमंधर० ॥टेक॥ लख चौरासी जोनिमैं मैं, फिर फिर कीना फेरा । तुम महिमा जानी नहीं प्रभु, देख्या दुःख घनेरा[6] ॥ सीमंधर० ॥ १ ॥ भाग उदयतैं पाइया

१ वचन । २ नाश करनेवाला । ३ बाण-तीर । ४ हाथीका चिन्ह । ५ कामको मारनेवाले । ६ अपार ।

धरो जी ॥ आदि० ॥ १ ॥ काल अनादि वस्यो जगमाहीं, तुमसे जगपति जाने नाहीं। पाँय न पूजे अंतरजामी, यह अपराध क्षमाकर स्वामी ॥ आदि० ॥ २ ॥ भक्तिप्रसाद परम पद है हैं, वंधी वंधदशा मिटि जैहैं . तब न करों तेरी फिर पूजा, यह अपराध छमो प्रभु दूजा ॥ ॥ आदि० ॥ ३ ॥ भूधर दोष किया वकसावै, अरु आगेंको लारैं लावै। देखो सेवककी ढिठैवाई, गरुवे साहिबसौं वनियाई ॥ आदि० ॥ ॥ ४ ॥

६५ । राग ख्याल करवा ।

म्हे तो थांकी आज महिमा जानी, अवलौं हि आनी ॥ म्हेतो० । टेक ॥ काहेको भव-भ्रमते, क्यों होते दुखधानी ॥ म्हेतो० ॥ १ ॥ प तिरे अंजनसे, कीचकसे अभिमानी ॥ २ ॥ ऐसी साख-बहुत सुनियत है,

-है। २ धीठता। ३ बडेभारी मालिकसे भी।
।त है।

॥ टेक ॥ तारिए तारिए अधम उधारिए, उधारिए, तुम करुनाके कंद ॥ एजी० ॥ १ ॥ हस्तिनापुर जनमें जग जानै, विश्वसेननृपनंद । एजी० ॥ २ ॥ धनि वह माता एरा देवी, जिन जाए जगचंद ॥ एजी० ॥ ३ ॥ भूधर विनवै दूर करो प्रभु, सेवकके भवदंद ॥ एजी० ॥ ४ ॥

६३ । राग धनासरी ।

शेष सुरेश नरेश रटैं तोहि, पार न कोई पावै जू ॥ शेष० ॥ टेक ॥ कांपै[1] नपत व्योमै[2] विलसत[3] सौं, को तारे गिन लावै जू ॥ शेष० ॥ १ ॥ कौन सुजान मेघ-बूंदनकी, संख्या समुझ सुनावै जू ॥ शेष० ॥ २ ॥ भूधर सुजस-गीत-संपूरन गणपैति[4] भी नाहिं गावै जू ॥ शेष० ॥ ३ ॥

६४ । राग रामकली ।

आदिपुरुष मेरी आस भरो जी । अवगुन मेरे माफ करो जी ॥ आदि० ॥ टेक ॥ दीनदयाल विरदं[1] विसरो जी, कै विनती मोरी श्रवण

१ किससे । २ आकाश । ३ विलसतोंसे । ४, गणधर ।

धरी। भूधर कहै यह टेव रहो थिर, जनम जनम हमरी ॥ नैननिको० ॥ ३ ॥

द्यानतरायकृत पद ।

(६८)

अब हम नेमिजीकी सरन । अब० ॥ टेक ॥ और ठौर न मन लगत है, छाडि प्रभुके चरन ॥ अब० ॥ १ ॥ सकल भवि-अघ-दहन-वारिद[1], विरद तारन तरन । इंद चंद फनिंद ध्यावैं, पाय सुख, दुखहरन ॥ अब० ॥ २ ॥ भरम तमहरतरनिदीपति[2], करमगन छयकरन । गण-धरादि सुरादि जाके, गुन सकत नहिं वरन ॥ अब० ॥ ३ ॥ जा समान त्रिलोकमैं हम, सुन्यो अवर न करन[3] । दास द्यानत दयानिधि प्रभु, क्यों तजैंगे परन[4] ? ॥ अब० ॥ ४ ॥

६९ । राग काफी ।

तू जिनवर स्वामी मेरा, मैं सेवक प्रभु हों

---

१ भव्य जीवोंके अघरूपी अग्निके लिये मेघ । २ भ्रमरूपी अंधकारको नाश करनेकेलिये सूर्यके प्रकाशकी समान । ३ कानोंसे । ४ अपना प्रण वा प्रतिज्ञा ।

जैनपुराण बखानी ॥ म्हेतो० ॥ ३ ॥ भूधरको सेवा वर दीजै, मैं जाचक तुम दानी ॥ म्हेतो० ॥ ४ ॥

६६ । राग सोरठ

स्वामीजी सांची सरन तिहारी ॥ स्वामीजी० ॥ टेक ॥ समरथ शांत सकल गुन पूरे, भयो भरोसो भारी ॥ स्वामीजी० ॥ १ ॥ जनमजरा जगवैरी जीते, टेव मरनकी टारी । हमहूको अजरामर करियो, भरियो आस हमारी ॥ स्वामीजी० ॥ ॥ २ ॥ जनमैं मरैं धरैं तन फिर फिर, सो साहिब संसारी । भूधर परदालिद क्यों दलि है, जो है आप भिखारी ॥ स्वामीजी० ॥ ३ ॥

६७ । राग ख्याल ।

नैननिको बान परी दर्शनकी ॥ टेक ॥ जिन-मुखचंद चकोर चित्त मुझ, ऐसी प्रीति करी ॥ नैननिको० ॥ १ ॥ अवर अदेवनके चितवनकी अब चितचाह टरी । ज्यों सब धूलि दबै दिशि दिशिकी, लागत मेघझरी ॥ नैननिको० ॥ २ ॥ छबी समाय रही लोचनमें, विसरत नाहि

पायो ॥ रुल्यो० ॥ ४ ॥ सिद्ध हों, शुद्ध हों बुद्ध अविरुद्ध हों, ईश जगदीश बहु गुणनि गायो ॥ रुल्यो० ॥५॥ सर्व चिंता गई, बुद्धि निर्मल भई, जबहि चित जुगल चरनन लगायो ॥ रुल्यो० ॥ ६ ॥ भयो निहचिंत द्यानत चरन-शर्नगहि, तार अब नाथ ! तेरो कहायो ॥ रुल्यो० ॥ ७ ॥

७१ । राग रामकली ।

प्रभु तुम कहियत दीनदयाल ॥ प्रभुतुम० ॥ टेक ॥ आपन जाय मुकतिमें बैठे, हम जु रुलत जगजाल ॥ प्रभुतुम०॥१॥ तुमरो नाम जपैं हम नीके, मनवच तीनों काल। तुम तो हमको कछु देत नहिं, हमरो कोन हवाल ॥ प्रभुतुम० ॥२॥ बुरे भले हम भगत तिहारे, जानत हो हम चाल। अवर कछू नहिं यह चाहत है, रागरोषको टाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ३ ॥ हमसों चूक परी सो बकसो[1], तुम तो कृपाविशाल । द्यानत एकबार प्रभु जगतैं, हमको लेहु निकाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ४ ॥

१ । माफ करो ।

तेरा ॥टेक॥ तुम सुमरनबिन मैं बहु कीना, नाना-जोनि-बसेरा। भाग उदय तुम दर्शन पायो, पाप भज्यो तजि खेरा ॥ तू जिनवर० ॥ १ ॥ तुम देवाधिदेव परमेश्वर, दीजे दान सवेरा। जो तुम मोख देत नहिं हमको, कहाँ जाँय किह डेरा ॥ तू जिनवर० ॥ २ ॥ मात तात तू ही बड़ भ्राता, तोसों प्रेम घनेरा। द्यानत तार निकार जगततैं, फेर न ह्वै भवफेरा ॥ तू जिनवर० ॥ ३ ॥

७० । राग सोरठ कड़खा ।

रुल्यो चिरकाल, जगजाल चहुंगतिविषै, आज जिनराज तुम सरन आयो। रुल्यो ॥टेक॥ सह्यो दुख घोर, नहिं छोर आवै कहत, तुमसों कछु छिप्यो नहिं तुम बतायो ॥ रुल्यो० ॥ १ ॥ तुही संसार-तारक नहीं दूसरो, ऐसो मुहि भेद न किन्ही सुनायो ॥ रुल्यो० ॥ २ ॥ सकल सुर असुर नरनाथ वंदत चरन, नाभिनंदन निपुन मुनिन ध्यायो ॥ रुल्यो० ॥ ३ ॥ तुही अरहंत भगवंत गुणवंत प्रभु, खुले मुझ भाग अब दरश

पायो ॥ रुल्यो० ॥ ४ ॥ सिद्ध हों, शुद्ध हों बुद्ध अविरुद्ध हों, ईश जगदीश बहु गुणनि गायो ॥ रुल्यो० ॥५॥ सर्व चिंता गई, बुद्धि निर्मल भई, जबहि चित जुगल चरनन लगायो ॥ रुल्यो० ॥ ६ ॥ भयो निहाचिंत द्यानत चरन-शर्नगहि, तार अब नाथ ! तेरो कहायो ॥ रुल्यो० ॥ ७॥

७१। राग रामकली।

प्रभु तुम कहियत दीनदयाल ॥ प्रभुतुम० ॥ टेक ॥ आपन जाय मुकतिमें बैठे, हम जु रुलत जगजाल ॥ प्रभुतुम०॥१॥ तुमरो नाम जपैं हम नीके, मनवच तीनों काल । तुम तौ हमको कछू देत नहिं, हमरो कोन हवाल ॥ प्रभुतुम० ॥२॥ बुरे भले हम भगत तिहारे, जानत हो हम चाल। अवर कछू नहिं यह चाहत है, रागरोषको टाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ३ ॥ हमसों चूक परी सो बकसो[1], तुम तो कृपाविशाल । द्यानत एकबार प्रभु जगतैं, हमको लेहु निकाल ॥ प्रभुतुम० ॥ ४ ॥

१ । माफ करो ।

७२ । राग ख्याल ।

मैं नेमिजीका बंदा मैं साहिबजीका बंदा ॥ मैं नेमिजी० ॥ टेक ॥ नैनचकोर दरसको तरसै, स्वामी पूनमचंदा ॥ मैं नेमिजीका० ॥ १ ॥ छहों दरबमें सार बतायो, आतम आनँदकंदा । ताको अनुभव नितप्रति करते, नासै सब दुख दंदा ॥ मैं नेमिजीका० ॥२॥ देत धरम उपदेश भविक प्रति, इच्छा नाहिं करंदा । रागरोष मद मोह नहीं नहिं, क्रोध लोभ छलछंदा ॥ मैं नेमिजीका० ॥३॥ जाको जस कहि सकै न क्योंही, इंद फनिंद नरिंदा । सुमरन भजन सार है द्यानत, अवर बात सब फंदा ॥ मैं नेमिजीका० ॥ ४ ॥

(७३)

बंदों नेमि उदासी, मद मारवेको । बंदों० ॥टेक॥ रजमतिसी तिन नारी छारी, जाय भए बनवासी ॥ बंदों० ॥ १ ॥ हय गय रथ पायक सब छांडे, तोरी ममता फांसी । पंच महाव्रत दुद्धर धारे,

१ 'वंदा' ऐसा भी पाठ है ।

राखी प्रकृति पचासी ॥ बंदों० ॥२॥ जाके दर-शन ज्ञान विराजत, लहि वीरज सुखरासी। जाकों बंदत त्रिभुवननायक, लोकालोक-प्रकाशी ॥ बंदों० ॥३॥ सिद्ध शुद्ध पर-मातम राजैं, अवि-चल-थान-निवासी। द्यानत मन-अलि प्रभुपद-पंकज,—रमत रमत अघ जासी ॥ बंदों० ॥४॥

(७४)

मेरी बेर कहा ढील करी जी ॥ मेरीबेर० ॥ टेक ॥ सूलीसों सिंहासन कीनो, सेठसुदर्शनविप-तिहरी जी ॥ मेरीबेर०॥१॥ सीतासती अगनिमें पैठी, पावक नीर करी सगरीजी। वारिषेण पै खडग चलायो, फूलमाल कीनी सुथरीजी ॥ मेरी बेर०॥२॥ धन्[1]या वापी पर्यो निकार्यो, ताघर ऋद्धि अनेक भरीजी। सिरीपाल सागरतैं तार्यो राजभोगकर मुकति वरीजी ॥ मेरीबेर०॥ ३ ॥ सांपकियो फूलनकी माला, सोमा[2]पर तुम दया धरीजी। द्यानत मैं कछू जांचत नाहीं, कर वैरा-ग्यदशा हमरीजी ॥ मेरीबेर० ॥ ४ ॥

---

१ धन्यकुमार। २ सोमा सतीपर

(७५)

हमको प्रभु श्रीपाम सहाय ॥हमको०॥ जाको दर्शन करते जबहीं, पातक जाय पलाय ॥ हमको० ॥ जाको इंद फनिंद चक्रधर, बंदै सीस नवाय । सोई स्वामी अंतर-जामी, भव्यनिकों सुखदाय ॥ हमको० ॥ १ ॥ जाके चार घातिया बीते, दोष जु गए विलाय । सहित अनंत चतुष्ठय साहिब, महिमा कही न जाय ॥ हमको० ॥ ३ ॥ तकियो बडो मिल्यो है हमको, गहि रहिये मनलाय । द्यानत अवसर बीत जायगो, फेर न कछू उपाय ॥ हमको ० ॥ ४ ॥

(७६)

ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी नेमजी ! तुमही हो ज्ञानी ॥ ज्ञानी० ॥ टेक ॥ तुम्ही देव गुरु तुम्ही हमारे, सकल दरब जानी ॥ ज्ञानी०॥ १ ॥ तुम समान कोउ देव न देख्या, तीनभवन छानी । आप तरे भविजीवनितारे,ममता नाहिं आनी ॥ज्ञानी०

१ सहारा आश्रयस्थान अर्थात् दो गावके वीचमें ठहरनेकी जगह है।

२ ॥ अवर देव सब रागी द्वेषी, कामी कै मानी तुम हो वीतराग अकषायी, तजि राजुल रानी ॥ ज्ञानी० ॥ ३ ॥ यह संसार दुःख ज्वाला तजि, भये मुकति थानी। द्यानत दास निकास जगतैं हम गरीब प्रानी ॥ ज्ञानी० ॥ ४ ॥

(७७)

देख्या माने नेमिजी प्यारा ॥ देख्या० ॥ टेक ॥ मूरति ऊपर करों निछावर, तन धन जोबन सारा ॥ देख्या० ॥ १ ॥ जाके नखकी शोभा आगैं, कोटि-कामछवि[1] डारों वारा। कोट-संख्य रविचंद छिपत हैं, वपुकी द्युति है अपरंपारा ॥ देख्या० ॥२॥ जिनके वचन सुने जिन भविजन, तजि घर मुनिवरका व्रत धारा। जाको जस इंद्रादिक गावैं, पावैं सुख नासैं दुखभारा। देख्या० ॥ ३ ॥ जाके केवलज्ञान विराजत, लोकालोक प्रकाशनहारा। चरण गहेकी लाज निवाहो, प्रभुजी द्यानत भगत तिहारा ॥ देख्या० ॥ ४ ॥

१ करोडो कामदेवोंकी सुंदरता।

(७८)

प्रभु अब हमको होहु सहाय ॥ प्रभु० ॥टेक॥ तुम बिन हम बहु जुग दुख पायो, अब तव परसे पांय॥प्रभु०॥१॥तीनलोकमें नाम तिहारो, है सबको सुखदाय । सोई नाम सदा हम गावैं, रीझ जाहु पतियाय ॥ प्रभु०॥२॥ हम तो नाथ कहाए तेरे, जावैं कहां सु बताय । बांह गहेकी लाज निवाहो, जो हो त्रिभुवनराय ॥ प्रभु०॥३॥ द्यानत सेवकने प्रभु इतनी, विनती करी बनाय। दीनदयाल दया धर मनमें, जमतैं लेहु बचाय ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

(७९)

प्रभु मैं किहविधि थुति करुं तेरी ॥प्रभु०॥टेक॥ गणधर कहत पार नाहिं पावत, कहा बुद्धि है मेरी ॥प्रभु० ॥ १ ॥ शक्र[1]-जन्मधर सहस जीभकर, तुम जस होत न पूरा । एकजीभ कैसें गुण गावै उलू[2] कहै किम सूरा[3] ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ चमर छत्र

१ इन्द्रका जन्म धरकर । २ उल्लू पक्षी । ३ सूरज ।

सिंहासन वरनों, ये गुण तुमतैं न्यारे । तुमगुण कहन वचनबल नाही, नैन गिनैं किम तारे ॥ प्रभु[1]० ॥ ३ ॥

(८०)

दरसन तेरा मन भावै । दरसन० ॥ टेक ॥ तुमकों देखि तृपति नहिं सुरपति, नैन हजार बनावै ॥दरसन०॥१॥ समवसरनमें निरखै सचिपति[2], जीभसहस गुनगावै । क्रोड़ कामको रूप छिपत है, तेरो दरश सुहावै ॥ दरसन० ॥२॥ आंख लगै अंतर है तो भी, आनँद उर न समावै । ना जानों कितनों सुख हरिको[3] जो नहिं पलक लगावै ॥ दरशन० ॥ ३ ॥ पाप नाशकी कौन बात है, द्यानत सम्यक् पावै । आसन ध्यान अनूपम स्वामी । देखे ही बनि आवै ॥ दरशन० ॥ ४ ॥

(८१)

हो स्वामी जगत जलधितैं तारो ॥ होस्वामी०

१ इस पदमे एक कड़ी रह गई दिखती है । २ इन्द्र । ३ इन्द्रको ।

॥टेक॥ मोहमच्छ अरु कामकच्छतैं, लोभलहरतैं उवारो । हो स्वामी० ॥ १ ॥ खेद खारजल, दुखदावानल, भरमभँवरभय टारो ॥ होस्वामी० ॥२॥ द्यानत बारबार यों भाषै, तूही तारनहारो ॥ हो स्वामी० ॥ ३ ॥

८२ । राग वसंत ।

मोहि तारो हो देवाधिदेव, मैं मनवचतनकरि करों सेव॥टेक॥तुम दीनदयाल अनाथ-नाथ, हमहूको राखहु आप साथ ॥मोहि०॥१॥ यह मारवाड संसार देश, तुम चरणकल्पतरु हरकलेश ॥ मोहि० ॥ २ ॥ तुम नाम रसायन जीव पीय, द्यानत अजरामर[1] भवतरीय ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

८३ । राग वसंत ।

तुम ज्ञानविभव फूली वसंत, यह मन मधुकर सुखसों रमंत ॥ तुम० ॥ टेक ॥ दिन बडे भए वैरागभाव, मिथ्यामत रजनीको घटाव । तुम० ॥ १ ॥ बहु फूली फैली सुरुचि बेल, ज्ञाताजन

१ अजर अमर होजाता है ।

समता संग केलि ॥ तुम० ॥ २ ॥ द्यानत वानी पिकमधुररूप, सुरनर पशु आनँद घन-स्वरूप ॥ तुम० ॥ ३ ॥

८४। रागगौरी।

देखो भाई श्रीजिनराज विराजैं ॥ देखो० ॥ टेक ॥ कंचन मणिमय सिंहपीठपर, अंतरीछ[1] प्रभु छाजैं ॥ देखो० ॥ १ ॥ तीन छत्र त्रिभुवन जस जंपै[2], चौसठि चमर समाजैं। वानी जोजन घोर मोर सुनि, डर अहि-पातक[3] भाजैं ॥देखो० ॥२॥ साढे वारह कौडि दुंदुभी, आदिक वाजे वाजैं। वृक्ष अशोक दिपत भामंडल, कोटि सूर शशि लाजैं ॥ देखो० ॥३॥ पहुपवृष्टि जल मंद पवन कर, इंद्र सेव नित साजैं। प्रभु न बुलावैं द्यानत जावैं, सुरनर पशु निजकाजैं ॥देखो० ४

८५। राग गौरी।

अब मोहि तार लेहु महावीर ॥अब०॥टेक॥ सिद्धारथ-नंदन जगवंदन, पापनिकंदन धीर ॥

---

१ अधर आकाशमें। २ कहते हैं। ३ पापरूपी सर्प।

अब० ॥ १ ॥ ज्ञानी ध्यानी दानी जानी, वानी गहर गँभीर। मोखके कारन दोष निवारन, रोष विदारन, वीर ॥ अब० ॥ २ ॥ आनँद पूरत समतामूरत, चूरत आपदपीर ॥ वालजती दृढ व्रती समकिती, दुखदावानल-नीर ॥ अब० ।३। गुन अनंत भगवंत अंत नहिं, शशि कपूर हिम हीर। द्यानत एकहु गुन हम पावैं, दूर करै भव-भीर ॥ अब० ॥ ४ ॥

८६ । राग गौरी ।

जय जय नेमिनाथ परमेश्वर। जय जय०॥ टेक ॥ उत्तम पुरुषनिको अति दुर्लभ, बालशील धरनेश्वर ॥ जय जय० ॥ १॥ सेव करैं नारायण बहु नृप, जय अघतिमिरदिनेश्वर[1]। तुम जस महिमा हम कहा जानै, भाखत सकल सुरेश्वर ॥ जय जय० ॥ २ ॥ इंद्र सबहिं मिल पूजैं ध्यावैं, जय भ्रमतपतनिशेश्वर[2]। गुन अनंत हम अंत न पावैं वरनन सकत गनेश्वर[3] ॥ जय जय० ॥३॥ गण-

१ सूर्य। २ चद्रमा। ३ गणधर।

धर सकल करैं थुति ठाढे, जय भवजलपोतेश्वर[1]।
द्यानत हम छद्मस्थ[2] कहा कहैं, कहन सकत सर्वे-
श्वर ॥ जय जय० ॥ ४ ॥

८७। राग गौरी।

श्रीआदिनाथ तारनतरनं ॥ श्री० ॥ टेक ॥
नाभिराय मरुदेवी-नंदन, जनम अयोध्या अघ-
हरनं ॥ श्रीआदि० ॥ १ ॥ कलपवृक्ष गये
जुगल दुखित भये, करम भूमिविधि सुख-करनं।
अपछरनृत्य-मृत्यु लखि चेते, भवतन भोग जोग-
धरनं ॥ श्रीआदि० ॥ कायोत्सर्ग छमास धरचो
दिढ, वन-खग-मृग पूजतचरनं। धीरजधारी
बरस अहारी, सहस बरस तपआचरनं ॥ श्री
आदि० ॥ करम नास परगासि ज्ञानको, सुर-
पति कियो समोसरनं। सबजनसुख दे शिव-
पुर पहुंचे, द्यानत भवितुमपदसरनं ॥ श्री०
आदि० ॥ ४ ॥

(८८)

प्रभु तेरी महिमा किह मुख गावैं ॥प्रभु०॥टेक

१ संसाररूपी समुद्रसे तारने वाली जहाजके स्वामी। २ अल्पज्ञानी।

गरभ छमास अगाउ कनक[1]नग, सुरपति नगर बनावैं। प्रभु०।१। क्षीर उदधिजल-मेरु सिंघासन, मल मल इंद्र न्हुलावैं। दीक्षा समय पालकी बैठो; इंद्र कहार उठावैं। प्रभु तेरी०॥ २॥ समवसरन रिधि ज्ञानमहातम, किंहविधि सर्व बतावैं। आपन जा[2]तकी बात कहा, शिववात सुने भवि जावैं॥ प्रभु तेरी०॥ ३॥ पंच कल्यानक थानक स्वामी, जे तुम मन वच ध्यावैं। द्यानत तिनकी कौन कथा है, हम देखे सुख पावैं॥ प्रभु तेरी०॥ ४॥

(८९)

प्रभु तेरी महिमा कहिय न जाय॥टेक॥ थुति करि सुखी दुखी न निंदातैं, तेरे समता भाय॥ प्रभु तेरी०॥१॥ जो तुम ध्यावैं थिर मनलावैं, सो किंचित् सुखपाय। जो नहिं ध्या[3]वत ताहि करत हो, तीनभुवनको राय॥ प्रभु तेरी०॥ २॥ अंजन चौर महा अपराधी, दियो स्वर्ग पहुंचाय।

१ सुवरण और रत्नोसे नगरीको बनाते है। २ अपमे जन्मकी।
३. जो तुम्हे न ध्यानकर अपनी आत्माका ध्यान करता है उसको।

कथानाथ श्रेणिक समदृष्टी, कियो नरक दुखदाय ॥ प्रभु तेरी० ॥ ३ ॥ सेव असेव कहा चलै जियकी, जो तुम करो सुन्याय । द्यानत सेवक-गुन गहि लीजै, दोष सबै छिटकाय । प्रभुतेरी० ॥ ४ ॥

९० । राग बिलावल ।

प्रभु तुम सुमरनहीतैं तारे ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ सूकर सिंह न्यौल[1] बानर जे, कहो कौन व्रत धारे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ सांप जापकर सुरपद पायो, स्वानश्यालभय जारे । भेक[2] बोक[3] गज अमर कहाए, दुरगति भाव विदारे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भील चौर मातंग[4] जु गनिका, बहुतनिके दुख टारे । चक्री भरत कहा तप कीनो, लोकालोक निहारे ॥ प्रभु तुम० ॥ ३ ॥ उत्तम मध्यम भेद न कीनों, आये शरन उबारे । द्यानत रागरोष विन स्वामी, पाये भाग हमारे ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥

१ न्योला। २ मेंढक। ३ बकरा। ४ चंडाल।

(९१)

मानुष जनम सफल भयो आज। मानुष०॥ टेक
सीस सफल भयो ईस[1] नमतही, श्रवन सफल जिन-वचन समाज ॥ मानुष० ॥ १ ॥ भाल[2] सफल जु दयाल तिलकतैं, नयन सफल देखे जिन राज। जीभ सफल जिनवान-गानतैं, हाथ सफल कर पूजन साज ॥ मानुष० ॥ २ ॥ पांय सफल जिन-भौन-गौनतैं[3], काय सफल नाचे बल गाज। वित्त सफल जो प्रभुको लागै, चित्त सफल प्रभु ध्यान इलाज ॥ मानुष० ॥ ३ ॥ चिंतामन चिंतत वरदाई, कलपवृच्छ कलपनतैं काज। देत अचिंत अकल्प महा सुख, द्यानत भक्ति गरीबनवाज ॥ मानुष० ॥ ४ ॥

(९२)

अपनो जानि मोहि तारले, शांति कुंथु अर देव ॥ अपनो० ॥ टेक ॥ अपनो जानिकै भक्त

१ भगवानको। २ ललाट। ३ भगवानके मंदिर जानेसे।

पिछानकै सुरपति कीनी सेव। कामदेव जिन चक्रवर्तिपद,—तीन भोगि स्वयमेव। अपनो०॥१॥ तीन कल्यानक हथिनापुरमैं, गरभ जनम तप भेव। दशोंदिशा दशधर्म-प्रकाश्यो, नाश्यो अघतम एव॥ अपनो०॥२॥ सहस अठोत्तर नाम सुलच्छन, अच्छ विना सुख वेव। द्यानत दास आस प्रभु तेरी, नास जनम मृत टेव॥ अपनो॥ ॥

(९३)

हे जिनरायजी, मोहि दुखतैं लेहु छुडाय ॥ टेक ॥ तनदुख मनदुख स्वजनदुख, धनदुख कह्यो न जाय॥ हे जिनरायजी० ॥ १ ॥ इष्ट वियोग अनिष्ट समागम, रोग सोग बहु भाय। गरभ जनम-मृत बाल-विरध-दुख, भोगे धरि धरि काय॥ हेजिनरायजी० ॥ २॥ नरक निगोद अनंती बिरियां, करि करि विषय कषाय पंचपरावर्त्तन बहु कीने, तुम जानो जिनराय॥ ॥ हे जिन० ॥३॥ भवबन-भ्रमतम, दुखदव जम

हर, तुम विन कौन सहाय। द्यानत हम कछु चाहत नाहीं। भव भव दरस दिखाय॥ हे जिन-रयजी ॥ ४ ॥

(९४)

श्रीजिनदेव न छाडि हों, सेवा मनवचकाय हो श्रीजिन०॥ टेक॥ सब देवनके देव हो, सब गुरुके गुरुराय हो ॥ श्रीजिन० ॥ १ ॥ गर्भ जनम तप ज्ञान शिव, पंचकल्यानक-ईश हो। पूजैं त्रिभुवनपति सदा, तुमको श्रीजगदीश हो ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥ दोष अठारह छय गये, गुणहि छियालिसखान हो । महा दुखीको देत हो, बडे रत्नको दान हो ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ नाम थापना दरवको, भाव खेत अरु काल हो। षट विध मंगल जे करैं, दुख नासै सुखमाल हो। श्रीजिन० ॥ ४ ॥ एक दरब कर जो भजै, सो पावै सुखसार हो। आठ दरब ले हम जजैं, क्यों नहिं उतरैं पार हो ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ गुण अनंत भगवंतजी, कहिन सकैं सुररायहो। बुद्धि

तनकसी मोविषै । तुमही होउ सहाय हो ॥ श्री-जिन०।६। तातैं बंदूं जग गुरू, बंदो दीन दयाल हो । बंदों स्वामी लोकके, बंदूं भविजनपाल हो ॥श्रीजिन० ॥ ७ ॥ विनती कीनी भावसों, रोम रोम हरषाय हो । या संसार असारमैं, द्यानत भक्ति उपाय हो ॥ ८ ॥

९५ । राग सोरठ ।

जिनराय! मोहि भरोसो भारी । जिन०॥ टेक॥ सुरनरनाथ विभूति देहु तो, अब नहिं लागत प्यारी ॥ जिन० ॥ १ ॥ सिरीपाल भूपाल विथा गई, लहि संपति अधिकारी । सूली सेठ अगनि तैं सीता, कहा भयो जो उबारी ॥ जिन० ॥२॥ विदित रूपखुर[1] तस्कर तुमतैं, भए अमर अवतारी । भविसुदत्त अर सालभद्रकी, किहकारण रिध सारी ॥ जिनराय० ॥ ३ ॥ मेक[2] श्वान गज सिंह भए सुर, विषयरीति विस्तारी । कृष्णपिता सुत[3] बहु रिधिपाई, विनाशीक तुम धारी ॥ जिन

१ । रूप छिपानेवाला अंजन चोर । २ मेंडक। ३ प्रद्युम्न।

॥ ४ ॥ जातिविरोध जात जीवनके, मूरति देख तिहारी। मानतुंगके बंधन टूटे, यह शोभा तुम न्यारी ॥ जिनराय० ॥ ५ ॥ तारन तरन सु विरद तिहारो, यह लखि चिंता डारी। द्यानत शिवपद आपहि देहो, वनी सुबात हमारी ॥ जिनराय० ॥ ६ ॥

(९६)

त्रिभुवनमें नामी, कर करुना जिनस्वामी ॥ त्रिभुवनमें० ॥ टेक ॥ चहुंगति जन्म मरनकिम भाख्यो, तुम सब अंतरजामी ॥ त्रिभुवनमें ॥१॥ करमरोगके वैद तुमहि हो, करों पुकार अकामी। त्रिभुवनमें ॥२॥ द्यानत पूरव-पुण्य-उदयतैं, सरन तिहारी पामी ॥ त्रिभुवनमें० ॥ ३ ॥

९७। राग धमाल।

मैं बंदा स्वामी तेरा ॥ मैं० ॥ टेक ॥ भवभंजन आदि निरंजन, दूर दुःख मेरा। मैं० ॥१॥ नाभिराय नंदन जगवंदन, मैं चरननका चेरा ॥ मैं० ॥ २ ॥ द्यानत ऊपर करुना कीजे, दीजे शिवपुर डेरा ॥ मैं० ॥ ३ ॥

(९८)

स्वामी श्रीजिन नाभिकुमार ! हमको क्यों न उतारो पार ॥ स्वामी० ॥ टेक ॥ मंगल मूरत हैं अविकार, नामभजैं भजैं विघन अपार । स्वामी० ॥१॥ भवभयभंजन महिमासार, तीनलोक जिय तारनहार ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ द्यानत आए शरन तुम्हार, तुमको है सब शरम हमार ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥

(९९)

नेमजी तो केवलज्ञानी, ताहीकों मैं ध्याऊं ॥ ॥ नेमिजी० ॥ टेक ॥ अमल अखंडित चेतन-मंडित, परम पदारथ पाऊं ॥ नेमिजी० ॥ १ ॥ अचल अबाधित निज गुण छाजत, वचनन कैसे बताऊं ॥ नेमिजी० ॥ २ ॥ द्यानत ध्याइए शिवपुर जाइए, बहुरि न जगमैं आऊं ॥ नेमिजी० ॥ ३ ॥

(१००)

हम आए हैं जिनभूप ! तेरे दरशनको ॥ हम०

॥ टेक ॥ निकसे घर आरतिकूप तुम पद-परशनको ॥ हम० ॥ १ ॥ बैननिसों सुगुन निरूप, चाहैं दर्शनको ॥ हम० ॥२॥ द्यानत ध्यावैं मन रूप, आनँद बरसनको ॥ हम० ॥ ३ ॥

(१०१)

तुम तार करुना धार स्वामी आदिदेव निरंजनो ॥ तुम० ॥ टेक ॥ सार-जग आधार नामी, भविकजनमनरंजनो ॥ तुम० ॥ १ ॥ निराकार जमी अकामी, अमल देह अमंजनो ॥ तुम० ॥ २ ॥ करहु द्यानत मुकतिगामी, सकल भवभयभंजनो,॥ तुम० ॥ ३ ॥

(१०२)

इक अरज सुनो साहिब मेरी ॥ इक० ॥ टेक ॥ चेतन एक बहुत जड घेरचों, दई आपदा बहुतेरी ॥ इक० ॥ १ ॥ हम तुम एक दोय इन कीने, विनकारन बेरी गेरी ॥ इक० ॥ २ ॥ द्यानत तुम तिहुं जगके राजा, करो जु कछु करुणा नेरी ॥ इक० ॥ ३ ॥

(१०३)

जिन साहिब मेरे हो, निबाहिये दासको ॥ जिन० ॥ टेक ॥ मोहमहातम घोर भर्यो है, कीजिये ज्ञानप्रकाशको ॥ जिन० ॥ १ ॥ लोभ रोगके[1] बैद प्रभुजी, औषध द्यो गदनासको ॥ जिन० ॥ २ ॥ द्यानत क्रोधकी आग बुझावो, बरस छिमाजलरासको ॥ जिन० ॥ ३ ॥

(१०४)

सांचे चंद्रप्रभू सुखदाय ॥ सांचे० ॥ टेक ॥ भूमि सेत अम्रत बरषाकरि, चंद नामतैं शोभा पाय ॥ सांचे० ॥ १ ॥ नरवरदाई कौन बडाई, पशुगन तुरत किये सुरराय ॥सांचे॥२॥ द्यानत चंद असंखनिके प्रभु, सार्थ[2] नाम जपों मनलाय ॥ सांचे० ॥ ३ ॥

(१०५)

काम सरैं सब मेरे, देखे पारसस्वाम ॥ काम० ॥ टेक ॥ सप्तफना अहि सीस-विराजैं, सात-

---

१ रोग । २ यथा नाम तथा गुण ।

पदारथ धाम ॥ काम० ॥ १ ॥ पदमासन शुभ बिंब अनूपम, श्यामघटा अभिराम ॥काम०॥२॥ इंद फनिंद नरिंदनिस्वामी, द्यानत मंगल ठाम ॥ काम० ॥ ३ ॥

(१०६)

जिनरायके पाँय सदा सरनं ॥ जिनरायके०॥ टेक॥ भवजलपतित-निकारन कारन, अंतर पाप-तिमिरहरनं ॥जिनरायके ॥१॥ परसी भूमि भई तीरथ सो, देवमुकुटमनि-छविधरनं॥जिनरायके० २॥द्यानत प्रभु-पग-रज कब पावैं, लागत भागत है मरनं ॥ जिनरायके० ॥ ३॥

(१०७)

मोहि तारो जिनसाहिबजी ॥ मोहि०॥टेक॥ दास कहाऊं क्यों दुख पाऊं, मेरी ओर निहारो ॥ मोहि० ॥ १ ॥ षटकाया-प्रतिपालक स्वामी, सेवकको न विसारो॥ मोहि० ॥ २ ॥ द्यानत तारन-तरन विरद तुम, अवर न तारनहारो ॥ मोहि० ॥ ३ ॥

(१०८)

दास तिहारो हूं, मोहि तारो श्रीजिनराय ॥ दास तिहारो भक्त तिहारो, तारो श्रीजिनराय ॥ दास०॥ टेक ॥ चहुँगति दुखकी आगतैं अब, लीजै भक्त बचाय ॥ दास० ॥१॥ विषय-कषाय-ठगनि ठग्यो, दोनोंतैं लेहु छुडाय ॥ दास०॥२॥ द्यानत ममता नाहरीतैं, तुम विन कौन उपाय ॥ दास० ॥ ३ ॥

(१०९)

जिनवरमूरत तेरी, शोभा कहिय न जाय ॥ जिनवर०॥टेक॥ रोम रोम लखि हरख होत है, आनँद उर न समाय ॥ जिनवर० ॥ १ ॥ शांत रूप शिवराह बतावै, आसन ध्यान उपाय ॥ जिनवर० ॥ २ ॥ इंद फनिंद नरिंद विभव सब, दीसत हैं दुखदाय ॥ जिनवर० ॥ ३ ॥ द्यानत पूजै ध्यावै गावै, मन वच काय लगाय ॥जिन० ॥ ४ ॥

(११०)

प्रभु तुम चरन सरन लीनों, मोहि तारो करुणाधार ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ सात नरकतैं नवग्रीवकलों, रुल्यो अनंती बार ॥ प्रभु ॥ १ ॥ आठ करम वैरी बडे तिन, दीनों दुःख अपार ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ द्यानतकी यह वीनती मेरो, जनम मरन निरवार ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

१११ । राग-कन्हारा ।

शरन मोहि वासुपूज्य जिनवरकी ॥ शरन० ॥ ॥ टेक ॥ अधम-उधारन पतित-उबारन, दाता रिद्धि अमरकी ॥ शरन० ॥ १ ॥ असरन-सरन अनाथनाथजी, दीनदयाल नजरकी ॥ शरन० ॥ २ ॥ द्यानत बालजती जगबंधू, बंधहरन, शिवकरकी ॥ ३ ॥

(११२)

अब मोहि तारलै शांतिजिनंद ॥ अब० ॥ टेक कामदेव तीर्थंकर चक्री, तीनोंपद सुखवृंद ॥ अब० ॥ १ ॥ सुरनरजुत धरमामृत बरसत, शोभा

पूरन चंद ॥अब०॥२॥द्यानत तीनों लोक विघने छय, जाको नाम करंद ॥ अब० ॥ २ ॥

(११३)

अब मोहि तारलै कुंथु जिनेश ॥अब०॥टेक॥ कुंथादिक प्रानी प्रतिपालक, करुणासिंधु महेश अब० ॥ १ ॥ सम्यकरत्नत्रयपदधारक, तारक जीव अशेष ॥ अब० ॥२॥ द्यानत शोभासागर स्वामी, मुक्ति-वधू-परमेश ॥ अब० ॥ ३ ॥

(११४)

अब मोहि तारलै अर भगवान ॥अब०॥टेक दीप विना शिवराह-प्रकाशक, भवतम-नाशक-भान ॥ अब० ॥ १ ॥ ज्ञानसुधाकरजोत सदा धर, पूरनशशि सुखदान ॥ अब०॥ २ ॥ भ्रम-तपवारन जगहित-कारन, द्यानत मेघ समान ॥ अब० ॥ ३ ॥

(११५)

भजरे मनुवा प्रभु पारसको ॥ भजरे०॥ टेक ॥ मन-वच-काय लाय लो इनकी, छांडि सकल भ्रम

आरसको ॥ भजरे० ॥ १ ॥ अभयदान दै दुख सब हरलै, दूर करै भवकारसको ॥भजरे०॥२॥ द्यानत गावै भगति बढावै, चाहै पावै ता रसको ॥ भजरे० ॥ ३ ॥

(११६)

लगन मोरी पारससों लागी ॥लगन०॥टेक॥ कमठ मान-भंजन मनरंजन, नाग किये बडभागी ॥ लगन०॥ १ ॥ संकट-चूरत मंगल पूरत, परम-धरम अनुरागी ॥ लगन० ॥ २ ॥ द्यानत नाम सुधारस स्वादत, प्रेम-भगति-मति पागी ॥लगन० ॥ ३ ॥

(११७)

प्रभुजी मोहि फिकर अपार ॥प्रभुजी०॥टेक॥ दानव्रत नहिं होत हमपैं, होंहिंगे क्यों पार ॥ प्रभुजी० ॥ १ ॥ एक गुनथुति कहि सकत नाहिं, तुम अनंत भंडार । भगति तेरी बनत नाहीं, मुकतिकी दातार ॥प्रभुजी० ॥ २ ॥ एक भवके

१ संसाररूपी कालिमा।

दोष केई, थूल कहूं पुकार । तुम अनंत जनम निहारे, दोष अपरंपार ॥ प्रभुजी० ॥३॥ नांव दीनदयाल तेरो, तरनतारनहार । बंदना द्यानत करत है, ज्यों बनै त्यों तार ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥

(११८)

प्रभुजी प्रभू सुपास जगवासतैं दास निकास ॥ प्रभु० ॥ टेक ॥ इंदके स्वाम फनिंदके स्वाम, नरिंदके चंदके स्वाम । तुमको छांडके किसपैं जावैं, कौनको ढूंढैं धाम ॥ प्रभुजी०॥ १ ॥ भूप सोई दुख दूर करै है, साह सो दे दान । वैद सोई सब रोग मिटावै, तुम्ही सबै गुनवान ॥ प्रभुजी० ॥२॥ चोर अंजनसे तार लिये हैं, जार कीचसे राव । हम तो सेवक सेव करैं हैं, नाम जपैं मन चाव ॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥ तुम समान हुये न होंगे, देव त्रिलोकमझार । तुम दयाल देवोंके देव हो, द्यानतको सुखकार ॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥

(११९)

तेरी भक्ति बिना धिक है जीवना ॥ तेरी० ॥

॥ टेक ॥ जैसैं बेगारी दरजीको, पर-घर कपडोंका सीवना ॥ तेरी ॥ १ ॥ मुकुट बिना अंबर सब पहिरे, जैसैं भोजनमैं घीव ना ॥ तेरी० ॥ २ ॥ द्यानत भूप बिना सब सेना, जैसैं मंदिरकी नीव ना ॥ तेरी० ॥ ३ ॥

(१२०)

बुधजनकृत हजूरीपदसंग्रह ।

म्हे तो थांपरवारी, वारी वीतरागीजी, शांत छबी थांकी आनँदकारीजी० ॥ म्हेंतो० ॥टेक॥ इंद नरिंद फनिंद मिलि सेवत, मुनि सेवत ऋधिधारीजी ॥ म्हेंतो० ॥१॥ लखि अविकारी पर-उपकारी, लोकालोक निहारीजी ॥म्हेंतो०॥२॥ सब त्यागीजी कृपा तिहारी, बुधजन ले बलिहारीजी ॥ म्हें तो० ॥ ३ ॥

(१२१)

राग—अलहिया बिलावल- ताल धीमा तेताला ।

श्रीजिनपूजनको हम आए, पूजत ही दुखद्वंद मिटाए ॥ श्रीजिन०॥टेक॥ विकलप गयो प्रगट

भयो धीरज, अद्भुत सुखसमता वरसाए। आधि व्याधि अब दीखत नाहीं, धरमकलपतरु आंगन छाए॥ श्रीजिन०॥१॥ इतमैं इंद्र चक्रधर इतमैं, इतमैं फनिंद खडे सिरनाए। मुनिजनवृंद करैं थुति हरखत, धनि हम जनमें पदपरसाए॥ श्रीजिन०॥ २॥ परमौदारिकमैं परमातम, ज्ञानमयी हमको दरसाए। ऐसेही हममैं हम जानैं, बुधजन गुनमुख जात न गाए॥ श्रीजिन०॥ ३॥

(१२२)

राग आसावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो।

करम देत दुख जोर, हो सांइयां ॥करम०टेक॥ कई परावृत पूरन कीने, संग न छांडत मोर, हो सांइयां॥ करम०॥१॥ इनके वशतैं मोहि वचाओ, महिमा सुनी अति तोर, हो साइयां ॥करम० ॥२॥ बुधजनकी विनती तुमहीसों, तुमसा प्रभु नहिं और, हो साइयां॥ करम०॥ ३॥

१२३। राग असावरी।

अरज म्हारी मानोजी, याही म्हारी मानो,

भवदधिसे तारना म्हारा जी ॥ अरज०॥ टेक ॥ पतित-उधारक पतित पुकारैं, अपनो विरद पिछानो० ॥ अरज० ॥ १ ॥ मोहमगरमछ दुख दावानल, जनम मरन जल जानो । गति गति भ्रमण भँवरमैं डूबत, हाथ पकरि ऊंचो आनो । अरज०॥२॥ जगमैं आनदेव बहु हेरे, मेरा दुख नाहिं भानो । बुधजनकी करुणा ल्यो साहिब, दीजै अविचल थानो ॥ अमर० ॥ ३ ॥

(१२४)

राग असावरी जोगिया ताल धीमो तेतालो ।

थे ही मोनै तारोजी, प्रभुजी कोई न हमारो ॥टेक॥ हूं एकाकि अनादि कालतैं, दुख पावत हूं भारोजी ॥ थे ही० ॥१॥ विन मतलबके तुमही स्वामी, मतलबको संसारो । जगजनमिल मोहि जगमैं राखैं, तूही काढनहारो ॥ थे ई०॥ बुधजनके अपराध मिटाओ, शरन गह्यो छै थारो । भवदधिमाही डूबत मोकों, करगहि आप निकारो० ॥ थे ही ॥३॥

(१२५)

राग—आसावरी मांझ ताल—धीमो एकतालो।

प्रभूजी अरज म्हारी उरधरो ॥ प्रभूजी०॥१॥ प्रभूजी नरकनिगोद्यां मैं रुल्यो, पायो दुःख अपार ॥ प्रभूजी०॥१॥ प्रभूजी हूं पशुगतिमैं उपज्यो, पीठ सह्यो अति भार ॥ प्रभूजी०॥ २ ॥ प्रभूजी विषयमगनमैं सुर भयो, जात न जान्यो काल ॥ प्रभूजी०॥३॥ प्रभूजी नरभव कुल श्रावक लह्यो, आयो तुम दरबार ॥ प्रभूजी० ॥ ४ ॥ भवभरमन बुधजनतनों, मेटो करि उपगार ॥ प्रभूजी० ॥ ५ ॥

(१२६)

राग सारंगकी मांझ-ताल दीपचन्दी।

म्हारी सुणज्यो दीनदयालु, तुमसों अरज करूं ॥ म्हारी०॥ टेक ॥ आन उपाव नहीं या जगमैं, जगतारक जिनराज, तेरैं पांय परूं ॥ म्हारी ॥१॥ साथ अनादि लाग विधि मेरी, करत रहत बेहाल। इनकों कोलों भरों ॥म्हारी०॥२॥ करि

करुना करमनको काटो, जनममरन दुखदाय, इनतैं वहुत डरूं ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥ चरन सरन तुम पाय अनूपम, बुधजन मांगत येह, गतिगति नांहि फिरूं ॥ म्हारी० ॥ ४ ॥

(१२७)

राग लहरि सरंग ।

अरज करूं (तसलीम करूं) ठाढो विनऊं चरननको चेरो ॥ अरज० ॥ टेक ॥ दीनानाथ दयाल गुसाईं, मोपर करुणा करकै हेरो । अरज ॥ १ ॥ भवबनमें मोहि निरबल लखिकै, दुष्ट करम सब मिलकै घेरयो । नानारूप बनाकै मेरो, गति चारोमें दयो है फेरो ॥ अरज० ॥ २ ॥ दुखी अनादि कालको भटकत, सरनो आय गह्यो मैं तेरो । अब तो कृपा करो बुधजनपै, हरो वेगि संसारबसेरो ॥ अरज० ॥ ३ ॥

(१२८)

राग लहरि सारंग जल्द तेतालो ।

मोकों तारोजी तारोजी तारोजी किरपा करिकै ॥

मोकों०॥ टेक॥ अनादिकालको दुखी रहत हों, टेरतहू जमतैं डरिकै ॥ मोकों ० ॥ १ ॥ भ्रमत फिरत चारों गति भीतर, भवमाहीं मरि मरि करिकै । डूबत अगम अथाह जलधिमैं, राखो हाथ पकर करिकै ॥ मोकों० ॥ २ ॥ मोह भरम विपरीत वसत उर, आप न जानों निजकरिकै । तुम सबज्ञायक मोहि उबारो, बुधजनको अपनो करिकै ॥ मोकों० ॥३॥

१२९ । राग सारंग ।

हम शरन गह्यो जिनचरनको ॥ हम०॥ टेक ॥ अब अवरनकी मान न मेरै, डरहू रह्यो नहिं मरनको ॥ हम०॥१॥ भरमविनाशन तत्त्वप्रकाशन, भवदधि-तारनतरनको । सुरपति नरपति ध्यान धरत वर, करि निश्चय दुखहरनको ॥ हम०॥२॥ याप्रसाद ज्ञायक निजमान्यो, जान्यो तन जड परनको । निश्चय सिधसो पै कषायतैं, पात्र भयो दुख भरनको ॥ हम० ॥३॥ प्रभुविन अवर नहीं याजगमैं, मेरे हितके करनको । बुध-

जनकी अरदास यही है, हर संकट भवफिरन-को ॥ हम० ॥ ४ ॥

१३० । राग लूहरि मीणाकी चालमें ।

अहो देखो केवलज्ञानी, ज्ञानी छवि भली या विराजै हो, भली या विराजै हो ॥अहो०॥टेक॥ सुरनरमुनि याकी सेव करत हैं, करम हरनके काजै हो ॥ अहो० ॥१॥ परिगहरहित प्रातिहा-रजजुत, जगनायकता छाजै हो । दोष विना गुन सकल सुधारस, दिविधुनि मुखतैं गाजै हो ॥ अहो० ॥ २ ॥ चितमें चितवत ही छिन माहीं, जन्म जन्म अघ भाजैं हो । बुधजन याकों कवहु न विसरो, अपने हितके काजै हो ॥ अहो० ॥ ॥ ३ ॥

१३१ । राग-सारंग लूहरि ।

श्रीजिन तारनहारा थेतो मोनै प्यंरा लागो राज श्रीजिन०॥ टेक ॥ बारह सभा विच गंधकुटीमें, राज रहे महराज ॥श्रीजिन॥१॥ अनँतकालका भरम मिटत है, सुनतहि आप अवाज ॥ श्री०

॥ २ ॥ बुधजन दास रावरो विनवैं, थांस्यु सुधरैं काज ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

१३२ । राग-पूरवी जल्द तितालो ।

हरना जी जिनराज मोरी पीर ॥ हरना० ॥ टेक॥ आनदेव सेये जगवासी, सर्यो नहीं मेरो काज ॥ हरनाजी० ॥ १ ॥ जगमैं वसत अनेक सहज ही, प्रनवत विविधसमाज । तिनपैं इष्ट अनिष्ट कल्पना, मेटोगे महाराज ॥ हरनाजी० ॥२॥ पुदगल राचि अपनपौं भूल्यो, बिरथा करत इलाज । अबहि यथाविधि वेग बनाओ, बुधजनके सिरताज ॥ हरनाजी० ॥ ३ ॥

१३३ । राग-धनासरी धीमो तेतालो ।

प्रभु थांसू अरज हमारी हो ॥ प्रभु० ॥ टेक॥ मेरे हितू न कोऊ जगतमें तुमही तो हितकारी हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ संग लग्यो मोहि नेक न छांडैं, देत मोह दुख भारी । भवबनमांहि नचावत मोकों, तुम जानत हो सारी ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ थांकी महिमा अगम अगोचर, कहि न सकैं

श्रुधि म्हारी । हाथ जोरिकै पांय परत हूं, आवागमन निवारी हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥

१३४। राग जंगला ।

मेरो मनुवा अति हरषाय तोरे दरसनसों । मेरे ॥ टेक ॥ शांति छवी लखि शांतभाव है, आकुलता मिटजाय, तोरे दरशनसों । मेरो० ॥ १ ॥ जबलों चरन निकट नहिं आया, तब आकुलता थाय । अब आवत ही निजनिधि पाया, निति नव मंगल थाय, तोरे दरशनसों ॥ मेरो० ॥ बुध जन अरज करैं करजोरे, सुनिए श्रीजिनराय । जबलों मोख होय नहिं तबलों, भक्ति करों गुन गाय, तोरे दरशनको ॥ मेरो० ॥ ३ ॥

१३५ । राग खमाच ।

छवि जिनराई राजै छै ॥ छवि० ॥ टेक ॥ तरु अशोकतर सिंहासनपैं बैठे, धुनिघन गाजै छै ॥ छवि० ॥ १ ॥ चमर छत्र भामंडलदुतिपैं, कोटिभान दुति लाजै छै । पुष्पवृष्टि सुरनभतैं दुंदुभि मधुर मधुर सुर बाजैं छै ॥ छवि० ॥२॥

सुरनर मुनि मिलि पूजन आवैं, निरखत नननो छाजै छै। तीनकाल उपदेश होत है, भवि बुध-जन हित काजै छै॥ छवि० ॥ ३ ॥

१३६। राग—गारो कान्हरो।

थांका गुण गास्यांजी आदिजिनंदा ॥थांका० ॥टेक॥ वचन सुण्या प्रभु मूनै, म्हारा निजगुण भास्यांजी ॥ आदि० ॥ १ ॥ म्हांका सुमन-कमलमें निसदिन, थांका चरन बसास्यांजी॥आदि० ॥२॥ याही मूनै लगन लगी छै, सुख द्यो दुःख नसास्यांजी ॥ आदि०॥३॥ बुधजन हरख हिये अधिकाई, शिवपुरबासा पास्यांजी ॥ आदि०॥

१३७। राग—सोरठ।

म्हारी कोन सुनै, थे तो सुन ल्यो श्रीजिनराज ॥ म्हारी० ॥टेक॥ अवर सरब मतलबके गाहक, म्हारो सरत न काज। मोसे दीन अनाथ रंकको, तुमतैं बनत इलाज ॥ म्हारी० ॥ १ ॥ निजपर नेकु दिखात नाहीं, मिथ्यातिमिर समाज। चंद्र प्रभू परकाश करो उर, पाऊं धाम निजाज॥

म्हारी ॥ २ ॥ थकित भयो हूं गति गति फिरतां, दर्शन पायो आज । वारंवार वीनवै वुधजन, सरन गहेकी लाज ॥ म्हारी० ॥ ३ ॥

१३८ । राग-सोरठ ।

वेगि सुधि लीज्यो म्हारी, श्रीजिनराज ॥ वेगि० ॥ टेक ॥ डरपावत नित आपु रहत है, संग लग्या जमराज० ॥ वेगि० ॥ १ ॥ जाके सुरनर नारक तिरजग, सब भोजनके साज । ऐसो काल हरयो तुम साहव, यातैं मेरी लाज ॥ वेगि० ॥ २ ॥ परघर डोलत उदर भरनको, होत प्राततैं सांज । डूवत आश अथाह जलधिमैं, द्यो समभाव जिहाज ॥ वेगि० ॥ घनादिनाको दुखी दयानिधि, अवसर पायो आज । वुधजन सेवक ठाड़ो विनवै, कीज्यो मेरा-काज० ॥ वेगि० ॥ ४ ॥

(१३९)

थांका गुन गास्यांजी जिनजीराज थांका दरसनतैं अघ नास्या ॥ थांका० ॥ टेक ॥ थां सा-

रीखा तीनलोकमैं, अवर न दूजा भाग्याजी ॥ जिनजी० ॥ १ ॥ अनुभव,–रसतैं सींचि सींचि-कैं, भवआताप बुझास्यांजी । बुधजनका विक-लप सब भाग्या , अनुक्रमतैं शिव पास्यांजी ॥ जिनजी० ॥ २ ॥

(१४०)

भजि जिन चतुरवि संति नाम । भजि०टेक॥ जे भजे ते उतरि भवदधि, लयो शिवसुखधाम ॥ भज० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव स्वामी, अभिनंदन अभिराम । सुमति पदम सुपास चंदा, पुष्पदंत प्रनाम ॥ भज० ॥ २ ॥ शीतल श्रेयान् वासुपूज्य,विमल अनंत सुनाम । धर्म-सांति जु कुंथु अरहा, मल्लि राखै माम ॥ भज० ॥ ३ ॥ मुनिसुवृत नमि नेमिनाथा, पार्स सन्मति स्वाम । राखि निश्चय जपो बुधजन, पुरै सबकी काम ॥ भज० ॥ ४ ॥

१४१ । राग–कानडो ।

आज मनरी बनी छै जिनराज ॥ आज० ॥ टेक॥ थांको ही सुमरन थांको ही पूजन, थांको

ही तत्त्व विचार ॥ आज०॥१॥ थांके विछुरे अति दुख पायो, मोपै कह्यो न जाय। अब सनमुख तुम नयनों निरखे, धन्य मनुष्य परजाय ॥आज० ॥ २ ॥ आजहि पातक नास्यो मेरो, ऊतरस्यों भवपार। यह प्रतीत बुधजन उर आई, लेस्यों शिवसुख सार ॥ आज०॥

१४२। रेखता।

ऋषभ तुमसे स्वाल मेरा, तुही है नाथ जगकेरा ॥ ऋषभ० ॥ टेक ॥ सुना इंसाफ है तेरा, विगर मतलब हितू मेरा० ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥ हुई अर होयगी अब है, लखो तुम ज्ञानमें सब है। इसीसे आपसे कहना, औरसे गरज क्या लहना ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ न मानी सीख सतगुरुकी, न जानी बाट निजघरकी। हुवा मदमोहमें माता, घने विषयनके रँगराता ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ गिना परद्रव्यको मेरा, तबै वसु कर्मने घेरा। हरा गुन ज्ञानधन मेरा, करा विधि जीवको चेरा ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ नचावै स्वांग रचि-

मोकों, कहूं क्या खबर सब तोकों। सहज मह बात अति बांकी, अधमको आपकी झांकी ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥ कहूं क्या तुम सिफत सांई, बनत नहिं इंद्रसों गाई। तिरे भविजीव भवसरतैं, तुमारा नांव उर धरतैं ॥ ऋषभ० ॥ मेरा मतलब अवर नाहीं, मेरा तौ भाव मुझमाहीं। बाहिपर दीजिये थिरता, अरज बुधजन यही करता ऋषभ० ॥ ६ ॥

१४२। रेखता।

चंदजिन विलोकवेतैं फंद गलि गया, धंद-सब जगतके विफल, आज लखि लिया ॥ चंद० ॥ टेक ॥ शुद्धचिदानंद खंध, पुद्गलके माहिं, पहिचान्या हममैं हम, संशय भ्रम नाहिं ॥ चंद० ॥१॥ सो न ईस सो न दास, सो नहीं है रंक। ऊंच नीच गोत नाहिं, नित्य ही निशंक ॥चंद०॥२॥ गंध वर्न फरस स्वाद, बीसगुन नहीं। एक आतमा अखंड, ज्ञान है सही ॥ चंद०॥४॥ परकों जानि ठानि परकी, वानि पर भया। परकी साथ

दुनियामैं, खेदको लया ॥ चंद० ॥ ३ ॥ काम क्रोध कपट मान, लोभकों करा । नारकी नर देव पशू होयकैं फिरा ॥ चंद ॥ ४ ॥ ऐसे वखतके वीच ईश, दरश तुम दिया । मिहरवान होय दास, आपका किया ॥ चंद ॥ ५ ॥ जोलों कर्म काट मोखधाम ना गया । तौलौं बुधजनको सरन राख करि मया ॥ चंद० ॥ ६ ॥

१४४ । राग—मल्हार ।

जगतपति तुम हो श्रीजिनराई ॥ जगत० ॥ टेक ॥ अवर सकल परिगहके धारक, तुम त्यागी हो सांई ॥ जगत०॥१॥ गर्भ मास पंदरै लों धनपति, रतनवृष्टि बरसाई । जनम समय गिरिराज-शिखरपर, न्हौंन कर्यो सुरराई ॥ जगत० ॥ २ ॥ सदन त्यागि बनमें कचलोंचत, इंद्रनि पूजा रचाई । सुकलध्यानतैं केवलि उपज्यो, लोकालोक दिखाई ॥ जगत० ॥३॥ सर्व कर्म हरि प्रगटि शुद्धता, नित्य निरंजनताई ।

नवचेतन बुधजन वंदत है, द्यो समता सुखदाई ॥ जगत० ॥ ४ ॥

१४५ । राग—रेखता ।

अरज़ जिनराज यह मेरी, इस्या अवसर बतावोगे० ॥ अरज० ॥ टेक ॥ हरो इन दुष्ट करमनको, मुकतिका पद दिलावोगे ॥अरज०॥ १ ॥ करूं जब भेष मुनिवरका, अवर विकलप विसारूंगा । रहूंगा आप आपेमैं, परिग्रहको विडारूंगा ॥ अरज० ॥२॥ फिरया संसार सारेमैं दुखी मैं सब लख्या दुखिया । सुनत जिन वानि गुरुमुखिया, लख्या चेतन परम सुखिया ॥ अरज० ॥३॥ पराया आपना जाना, बनाया काज मनमाना । गहाया कुगति तैखाना, लहाया विपति विललाना ॥ अरज० ॥ ४ ॥ जगतमैं जन्म अर मरना, डरा मैं आ लिया शरना । मिहिर बुधजनपैं या करना, हरो परतैं ममत धरना ॥ अरज० ॥ ५ ॥

(१४६)

आयो प्रभु तोरे दरबार, सब मो कारज सरिया ॥ आयो० ॥ टेक ॥ निरखत ही तुम चरनन ओर, मोहतिमिर मो हरिया ॥ आयो० ॥ १॥ मैं पाई मेरी निधि सार, अबलों रह्या बिसरिया । अब हूवा उर हरप अपार, कृत्य कृत्य तुम करिया ॥ आयो० ॥ २ ॥ जड चेतन नहिं मान्या भेद, राग रोष जब धरिया । तब हूवा ये निपट कुज्ञान, करमबंधमें परिया ॥ आयो० ॥ ३ ॥ इष्ट अनिष्ट संयोगन पाय, दुष्ट दवानल जरिया । तुम पाए वडभागन जोग, निरखत हिय गय हरिया ॥ आयो० ॥ ४ ॥ धारत ही तुम बानी कान, भरमभाव सब गरिया । बुध जनके उर भई प्रतीत, अब भवसागर तरिया ॥ आयो० ॥ ५ ॥

(१४७)

ऐसे प्रभुके गुन कोऊ कैसैं कहै ॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ दरश ज्ञान सुख वीर्य अनंता, अवर अनँत

गुन जामैं रहै ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ तीन काल पर-जाय द्रव्य गुन, एक समय जाको ज्ञान गहै ॥ ऐसे० ॥२॥ जो निज शक्ति गुपत छी अनादी, सो सब प्रगट अब लहलहै ॥ ऐसे० ॥ ३ ॥ नंतानंत काललों जाको, सांत सुथिर उपयोग बहै ॥ ऐसे० ॥ ४ ॥ मन-वच-तनतैं बंदत बुध-जन, ऐसे गुननको आप चहैं ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

(१४८)

तुम बिन जगमैं कौन हमारा ॥ तुम०॥टेक॥ जोलों स्वारथ तोलों मेरे, बिन स्वारथ नहिं देत सहारा ॥ तुमबिन० ॥ १ ॥ अवर न कोई है या जगमें, तुमही हो सबके उपगारा ॥ तुमबिन०॥ २॥ इंद नरिंद फनिंद मिल सेवत, लखि भव-सागर-तारनहारा ॥ तुमबिन० ॥ ३ ॥ भेद-विज्ञान होत निज परका, संशय भरम करत निरवारा ॥ तुम०॥ ४ ॥ अनँत जन्मके पातक नाशत, बुधजनके उर हरष अपारा ॥ तुम०॥५॥

(१४९)

तूही तूही याद मोहि आवै जगतमैं ॥ तूही० ॥ टेक ॥ तेरे पदपंकज सेवत हैं, इंद नरिंद फनिंद भगतमैं ॥ तूही० ॥ १ ॥ मेरा मन निशदिन ही राच्या, तेरे गुन-रस गान पगतमैं ॥ तूही० ॥ २ ॥ भव अनंतका पातक नास्या, तुम जिनवर छबि दरस जगतमैं ॥ ३ ॥ मात तात परिकर सुत दारा, ये दुखदाई देख भगतमैं ॥ तूही० ॥ ४ ॥ बुधजनके उर आनँद आया, अब तो हूं नहिं जाऊं कुगतमैं ॥ तूही तूही० ॥ ५ ॥

१५० । राग–रेखता ।

तिहारी याद होते ही, मुझे अम्रत वरसता है जिगर तपता मेरा भ्रमसों, तिसें समता सरसता है ॥ तिहारी० ॥ १ ॥ दुनीके देव दाने सब, कदम तेरे परसता है । तिहारे दरश देखनको, हजारों चँद तरसता है ॥ तिहारी० ॥२॥ तुम्हींने खूब भविजनको, बताया भिस्तं–रसता

१ स्वर्गका रास्ता ।

है। उसी रस्तै चले सायर, तुमारे बीच बसता है ॥ तिहारी० ॥ ३ ॥ विमुख तुमसों भए जितने, तिते दोजक[1]में धसता है। मुरीद[2] तेरा सदा बुध जन, आपने हाल मुसता है ॥ तिहारी० ॥४॥

१५१। राग—अडाणो।

तुम चरननकी शरन आय सुख पायो ॥ तुम० ॥ टेक ॥ अबलों चिरभव बनमें डोल्यो, जन्म जन्म दुख पायो ॥ तुम० ॥ १ ॥ ऐसो सुख सुरपतिके नाहीं, सो मुख जात न गायो। अब सब संपति मो उर आई, आज परमपद लायो ॥ तुम० ॥ मनवचतनतैं, दृढकरि राखों, कबहुं न ज्या विसिरायो। बारंबार बीनवै बुधजन, कीजे मनको भायो ॥ तुम० ॥ २ ॥

(१५२)

आनँद भयो निरखत मुख जिनचंद। आनँद० ॥ टेक ॥ सब आताप गयो ततखिन ही, उपज्यो हरष अमंद ॥१॥ भूलथकी रागादिक कीने, तब

१ नरकमें। २ दास वा शिष्य।

बांधे विधिवंद[1]। इनकी कृपातैं अब मिटि जैहैं, विपदाके सब फंद ॥ आनँद० ॥२॥ केवल स्वेत सुभग सुछत्तापर, वारों कोटिक चंद। चरनकमल बुधजन उर भीतर, ध्यावै शिवसुखकंद ॥ आनँद० ॥ ३ ॥

१५३। राग—ईमन जल्द तितालो।

शरन गही मैं तेरी, जग-जीवन जिनराज जग-पति ॥शरन०॥ टेक ॥ तारनतरन करन पावन जग, हरन करम-भवफेरी ॥ शरन०॥१॥ ढूंढत फिर्‌यो भर्‌यो नानादुख, कहूं न मिली सुखसेरी यातैं तजी आनकी सेवा, सेव रावरी हेरी ॥शरन ॥ २ ॥ परमैं मगन विसार्‌यो आतम, धर्‌यो भरम जगकेरी। ये मति तजूं भजूं परमातम, सो बुधि कीजे मेरी ॥३॥

१५४। पंजाबी भाषामें।

करमूंदा[2] कुपेंच मेरे है दुखदाइयां हो ॥टेक॥ करम हरन महिमा सुन आयो, सुनिए मैंडी[3]

१ कर्मवंद। २ कर्मोंका। ३ मेरी।

साइयां हो ॥ करमूंदा०॥१॥ कबहुंक इदं नरिंद बनायो, कबहुंक रंक बनाइयां। कबहुंककीट गयंद रचायो, ऐसे नाच नचाइयां ॥ करमूंदा०॥ ॥२॥ जो कुछ भई सो तुमही जानो, मैं जानत हूं नाइयां। कर्मबंध तुम काटे जाविधि, सो विधि मोहि दिखाइयां ॥ करमूंदा०॥ ३॥

इति हजूरीपद-संग्रह समाप्त ॥ २ ॥

(३) जिनवाणी स्तुतिपदसंग्रह।

दौलतरामजीकृत शास्त्र स्तुति।

जिनवैन सुनत, मोरी भूल भगी ॥ जिनवैन ॥ टेक ॥ कर्मस्वभाव भाव चेतनको, भिन्नपिछानन सुमति जगी। जिनवैन० ॥१॥ जिन अनुभूति सहज ज्ञायकता,सो चिर तुष-रुष-मैल-पगी स्यादबाद-धुनि-निर्मल जलतैं, विमल भइ समभाव लगी ॥ जिनवैन०॥२॥ संशय-मोह-भरमत विघटी, प्रगटी आतमसौंज[1] सगी। दौल अपूरब मंगल पायो, शिवसुख लेन हौंस[2] उमगी ॥ जिनवैन० ॥ ३ ॥

(२)

जय जय जग-भरमतिमर-हरन जिनधुनी ॥ जय जय० ॥ टेक ॥ या विन समुझे अजौं न सौंज-निज-मुनी[3]। यह लखि हम निजपर अविवेकता लुँनी[4]॥२॥जय जय०॥१॥जाको गनराज अंग,–पूर्वमय चुनी। सोई कही है कुंदकुंद,–

---

१ निज परणति। २ इच्छा। ३ अभ्यस्त की ४। काटनी।

प्रमुख बहुमुनी ॥ जय जय० ॥२॥ जे चर जड भए पीय,-मोह वारुनी[2]। तत्त्वपाय चेते जिन, थिर सुचित सुनी ॥ जय जय० ॥ ३ ॥ कर्ममल पखारनेहि, विमल सुरधुनी। तजि विलंब अंबै करो, दौल उरपुनी ॥ जय जय० ॥ ४ ॥

(३)

अब मोहिं जान परी, भवोदधि तारनको है जैन[6] ॥अब०॥ टेक ॥ मोहतिमिरतैं सदा काल-के, छाय रहे मेरे नैन। ताके नासन-हेत लियो मैं, अंजन जैन सु ऐन ॥ अब० ॥ १ ॥ मिथ्या मती भेषको लेकर, भाषत है जो वैन। सो वे वैन असार लखे मैं, ज्यों पानीके फैन ॥ अब० ॥ २ ॥ मिथ्यामती बेल जगफैली, सो दुखफल-की दैन। सतगुरु-भक्ति-कुठार हाथ लै, छेद लियो अति चैन ॥ अब०॥ ३ ॥ जा बिन जीव सदैव कालतैं, विधिवस सुख न लहै न। अश-

१ जीव २। मोहरूपीमदिरा। ३ धोनेके लिये। ४ माता। ५ पुनीत-पवित्र। ६ शास्त्र जिनवाणी।

रन-शरन अभय दौलत अब, भजो रैन दिन जैन ॥ अब० ॥ ४ ॥

[४]

सुनि जिनवैन, श्रवन सुख पायो ॥ सुनि० ॥ ॥ टेक ॥ नस्यो तत्त्वदुरअभिनिवेशतम, स्याद उजास कहायो । चिर विसर्‌यो लह्यो आतम रैन[1] ॥ श्रवन० ॥ १ ॥ दह्यो अनादि असंजम दवतैं, लहि व्रत सुधा झिरायो । धीर धरी मन जीतन मैन[2] ॥ श्रवन० ॥२॥ भए विभाव अभाव सकल अब, सकल रूप चित लायो । दौल लह्यो अब अविचल चैन ॥ श्रवन० ॥ ३ ॥

(५)

नित पीज्यो धी धारी, जिनवानि सुधासम जानकै ॥ नित्य ॥ टेक ॥ वीरमुखारविन्दतैं[3] प्रगटी, जन्मजरागद[4]टारी । गौतमादि गुरु-उर घटव्यापी, परम सुरुचि-करतारी ॥ नित पीज्यो

१ आत्मरत्न २ । कामदेव । ३ महावीरस्वामीके मुखकमलसे । ४ । रोग ।

॥ १ ॥ सलिल[1] समान कलिमल[2]-गंजन, बुध-मन[4]रंजनहारी। भंजन विभ्रम धूलि-प्रभंजन[3], मिथ्या-जलद-निवारी ॥ नित पीज्यो० ॥ २ ॥ मंगलतरू उपावन धरनी, तरनी भवजल-तारी। बंधविदारन पैनी छैनी, मुक्तिनसैनी सम्हारी ॥ नित पीज्यो० ॥ ३ ॥ स्वपर-स्वरूप-प्रकासन-को यह, भानु-किरन अविकारी। मुनि[5]मन-कुमुद निमोदन-शशिभा, शम[6]सुख-सुमन-सुवारी ॥ नित पीज्यो० ॥ ४ ॥ जाको सेवत बेवत[7] निजपद, नसत अविद्या सारी। तीनलोक[8]पति पूजत जाको, जान त्रिजग-हितकारी ॥ नित पीज्यो०॥ ५ ॥ कोटि जीभसों महिमा जाकी, कहि न सकै पवि-

---

१ जलके समान। २ पापरूपी मैलको नष्ट करनेवाली। ३ नष्ट करनेकेलिये भ्रमरूपीधूल व मिथ्यात्वरूपी बादलको उडानेवाली हवा (आंधी)। ४ कर्मबंधन छेदनेको तीक्ष्ण छैनी। ५ मुनियोके मनरूपी कमोदनीको प्रफुल्लित करनेकेलिये चन्द्रमाकी रोशनी। ६ समतारूपी सुख-पुष्पोको पैदाकरनेकेलिये अच्छी वाटिका। ७ जानते वा अनुभव करते है आत्मीक रस। ८ तीन भुवनके राजाइन्द्र नागेन्द्र नरेन्द्रादि।

धारी। दौल अल्पमति केम कहैं यह, अधमउधा-
रनहारी॥ नित पीज्यो॥ ६॥

६। राग चर्चरी।

सांची तो गंगा यह वीतरागवानी, अविच्छिन्न धारा निजधर्मकी कहानी॥ सांची०॥टेक॥ जामैं अतिही विमल अगाध ज्ञानपानी। जहां नहीं संशयादि पंककी निशानी॥ सांची०॥१॥ सप्त भंग जहँ तरंग, उछलत सुखदानी। संतचित्त मराल वृन्द, रमैं नित्य ज्ञानी॥ सांची०॥ २॥ जाके अवगाहनतैं, शुद्ध होय प्रानी। भागचंद निहचै, घटमांहिं या प्रमानी॥ सांची०॥ ३॥

७। राग–ईमन।

महिमा है अगम जिनागमकी,॥ महिमा है०॥ ॥टेक॥ जाहि सुनत जन भिन्न पिछानी, हम चिनमूरति आतमकी॥ महिमा०॥१॥ रागादिक दुखकारन जाने, त्याग बुद्धि दीनी भ्रमकी। ज्ञानजोति जागी उर अंतर, रुचि बाढी पुनि

१ वज्रधारी–इन्द्र।

शमदमकी ॥ महिमा० ॥ २ ॥ कर्मबंधकी भई निर्जरा, कारण परंपराक्रमकी। भागचंद शिव लालचलाग्यो, पहुंच नहीं है जहं जमकी ॥ महिमा० ॥ ३ ॥

८। राग—सोरठ देशी।

थांकी तो वानीमैं हो, जिन स्वपरप्रकाशक-ज्ञान ॥ थांकी तो० ॥ एकीभाव भये जड चेतन, तिनकी करत पिछान ॥ थांकी तो०॥१॥ सकल पदार्थ प्रकाशत जामैं, मुकुर तुल्य अमलान ॥ थांकी तो० ॥२॥ जगचूड़ामन शिव भये तेही, तिन कीनो सरधान ॥ थांकी तो० ॥३॥ भाग-चंद बुधजन ताहीका, निश दिन करत बखान ॥ थांकी तो० ॥ ४ ॥

९ राग—सोरठ।

म्हाकै घर जिनधुनि अब प्रगटी ॥म्हाकै घर० ॥ टेक ॥ जाग्रत दशा भई अब मेरी, सुप्त-दशा विघटी। जगरचना दीसत अब मोकों, जैसी रहँ-टघटी ॥ म्हाकैं घर० ॥ १ ॥ विभ्रम-तिमिर-

हरन निज दृगकी, जैसी अँजन वटी। तातैं स्वानुभूति प्रापतितैं, परपरनति सब हटी ॥ ॥ म्हाके घर० ॥ २ ॥ ताके विन जो अवगम[1] चाहै, सो तो शठ कपटी। तातैं भागचंद निशि-वासर, इक ताहीको रटी ॥ म्हारे घर० ॥ ३ ॥

१० । राग–मल्हार ।

बरसत ज्ञान सुनीर हो, श्रीजिनमुखघनसों बरसत० ॥ टेक ॥ शीतल होत सुबुद्धि मेदिनी, मिटत भवातप पीर ॥ बरसत० ॥ १ ॥ स्याद्वाद नयदामिनि दमकै, होत निनाद गँभीर ॥ बरसत ॥ २ ॥ करुना नदी बहै चहुंदिशितैं, भरी सो दोई तीर ॥ बरसत० ॥ ३ ॥ भागचंद अनुभव मंदिरको, तजत न संत सुधीर ॥ बरसत०॥४॥

११ राग–मल्हार ।

मेघघटासम श्रीजिनवानी ॥ मेघघटा० ॥ ॥ टेक ॥ स्यातपद चपला चमकत जामैं, बरसत ज्ञान सुपानी ॥ मेघघटा०॥१॥ धर्मसस्य[2] जातैं बहु

१ पदार्थोंका ज्ञान । २ धर्मरूपी अन्न ।

बाढै, शिवआनँदफलदानी ॥ मेघघटा० ॥ २ ॥ मोहनधूल दबी सब यातैं, क्रोधानल सु बुझानी ॥ मेघघटा० ॥ ३ ॥ भागचंद बुधजन केकीकुल, लखि हरखे चित ज्ञानी ॥ मेघघटा० ॥ ४ ॥

१२। लावनी।

धन्यधन्य है घड़ी आजकी, जिनधुनि श्रवन परी। तत्त्वप्रतीत भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥ धन्यधन्य० ॥टेक ॥ जडतैं भिन्न लखी चिन्मूरत, चेतन स्वरस भरी। अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, परमैं सब परिहरी ॥ धन्य धन्य० ॥ १ ॥ पापपुण्यविधिबंध अवस्था, भासी अति दुख भरी। वीतराग विज्ञानभावमय, परनति अति विस्तरी ॥ धन्य धन्य ॥ २ ॥ चाहदाह विनसी बरसी पुनि, समतामेघझरी। बाढी प्रीति निराकुलपदसों, भागचंद हमरी ॥ धन्यधन्य० ॥३॥

(१३)

समझत क्यो नहिं वानी अज्ञानी जन ॥ समझत० ॥ टेक ॥ स्यादवाद अंकित सुखदायक,

भाषी केवलज्ञानी, समझत०॥१॥ जाहि लखे निर्मलपद पावै, कुमति कुगतिकी हानी। उदय भया जिहिमैं परकासी, तिहँ जानी सरधानी ॥ समझत० ॥ २ ॥ जामैं देव धरम गुरु बरने, तीनों मुकति-निसानी। निश्चय देव धरम गुरु आतम, जानत विरला प्रानी ॥ समझत० ॥ ३ ॥ या जगमाहि तुझै तारनको, कारण नाव बखानी। द्यानत सो गहिए निहचैसों, हूजे ज्यों शिवथानी ॥ समझत० ॥ ४ ॥

(१४)

वे प्रानी सुज्ञानी जिन जानी जिनवानी। वे०॥ टेक ॥ चंदसूर हू दूरकरैं नहिं, अंतर तमकी हानी ॥ वे० ॥ १ ॥ पच्छ सकल नय भच्छ करत हैं, स्यादवादमैं सानी ॥ वे०॥२॥ द्यानत तीन भवन मंदिरमैं दीवट एक बखानी ॥ वे० ॥३॥

(१५)

तारनको जिनवानी ॥ तारनको० ॥ टेक ॥

॥ तारनको० ॥ १ ॥ जडता नाशै ज्ञान प्रकाशै, शिवमारग अगवानी ॥ तारनको० ॥ २ ॥ द्यानत तीनोंलोक विथाहर, परमरसायन मानी तारनको० ॥ ३ ॥

१६ । राग—आसावरी जोगिया ।

कलिमैं ग्रंथ बडे उपगारी ॥ कलिमैं० ॥ टेक ॥ देवशास्त्र गुरु सम्यक सरधा, तीनों जिनतैं धारी ॥ कलिमैं० ॥ १ ॥ तीन बरस बसुमास पंद्र-दिन, चौथाकाल रहा था । परमपूज्य महावीर स्वामि तव, शिवपुरराज लहा था ॥ कलिमैं० ॥२॥ केवलि तीन पांच श्रुतकेवलि, पीछें गुरुनि विचारी । अंगपूर्व अब है न रहैंगे, बात लखी थिरकारी ॥ कलिमैं० ॥ ३ ॥ भविहितकारन धर्मविथारन, आचारजों बनाये । बहुतनि तिनकी टीका कीनी, अदभुत अरथ समाये ॥ कलिमैं० ॥ ४ ॥ केवलि श्रुतकेवलि यहां नाहीं, मुनिगुन प्रगट न सूझैं । दोऊ केवलि आज यही हैं, इनहीको मुनि बूझैं ॥ कलिमैं० ॥ ५ ॥ बुद्धि

प्रगट करि आप बांचिये, पूजा बंदन कीजै।
दरब खरचि लिखवाय सुधायसु, पंडितजनकों
दीजै ॥ कलिमैं० ॥ ६ ॥ पढतैं सुनतैं चरचा
करतैं, है संदेह जु कोई। आगम माफिक ठीक
करै कै, देख्यो केवलि सोई ॥ कलिमैं० ॥ ७ ॥
तुच्छबुद्धि कछु अरथ जानिकै, मनसों विंग
उठाये। औधिज्ञान श्रुतज्ञानी मानों, सीमंधर
मिलि आये ॥ कलिमैं० ॥ ८॥ ये तो आचा-
रज हैं सांचे, ये आचारज झूठे। तिनिके ग्रंथ
पढैं नित बंदैं, सरधा ग्रंथ अपूठे॥ कलिमैं०॥९॥
सांचझूठ तुम क्योंकर जान्यो, झूठ जान क्यों
पूजो। खोट निकाल शुद्धकर राखो, अवर
बनावो दूजो ॥ कलिमैं० ॥ १० ॥ कौन सहामी
बात चलावै, पूछै आनमती तो। ग्रंथ लिख्यो
तुम क्यों नहिं मानो, ज्वाब कहा कहि जीतो
॥ कलिमैं० ॥ ११ ॥ जैनी जैनग्रंथके निंदक,
हुँडासर्पिनी जोरा। द्यानत आप जानि चुप
रहिये, जगमैं जीवन थोरा० ॥ कलिमैं० ॥१२॥

१ आजकल–'सुधवाय छपाकर' कहना चाहिये।

१७ । राग—विलावल इकतालो ।

सारद ! तुम परसादतैं, आनँद उर आया ॥ सारद ॥ टेक ॥ ज्यो तिरसातुर जीवको, अम्रतजल पाया ॥ सारद० ॥ १ ॥ नय परमान निछेपतैं, तत्त्वार्थ बताया । भाजी भूल मिथ्यातकी, निजनिधि दरसाया ॥ सारद० ॥ २ ॥ विधना मोहि अनादितैं चहुंगति भरमाया । ताहरिवेकी विधि सबै, मुझ मांहि बताया ॥ सारद० ॥ ३ ॥ गुन अनंत मति अलपतैं, मोतैं जात न गाया । प्रचुर कृपा लखि रावरी, बुधजन हरखाया ॥ सारद० ॥ ४ ॥

(१८)

भवदधि तारक नवका, जगमाही जिनबान ॥ भवदधि० ॥ टेक ॥ नयप्रमान पतवारी जाकै, खेवट आतम ध्यान ॥ भवदधि० ॥ १ ॥ मन वचतन सुधि जे भवि धारत, ते पहुंचत शिवथान । परत अथाह मिथ्यातभँवर ते, जे नाहिं गहत अजान ॥ भवदधि० ॥ २ ॥ विन अक्षर जिन-

मुखतैं निकरी, परी वरनजुत कान । हितदायक बुधजनको गनधर, गूंथे ग्रंथ महान ॥ भविदधि० ॥ ३ ॥

१९ । राग—ललित जल्द तितालो ।

हो जिनवाणीजू तुम मोकों तारोगी ॥ हो० ॥ टेक ॥ आदि अंत अविरुद्ध वचनतैं, संशय भ्रम निरवारोगी ॥ हो० ॥ १ ॥ ज्यों प्रतिपालत गाय वत्सकों, त्योंही मुझको पारोगी । सनमुख कालबाध जब आवै, तब तत्काल उबारोगी ॥ हो० ॥ २ ॥ बुधजन दास बीनवै माता, या विनती उर धारोगी ॥ उलझि रह्यो हूं मोहजालमैं, ताकों तुम सुरझारोगी ॥ हो० ॥ ३ ॥

२० । राग—विलावल कनडी ।

मनकै हरष अपार, चितकै हरष अपार, वानी सुन ॥ टेक ॥ ज्यों तिरषातुर अंमृत पीवै, चातक अंबुंदधार ॥ वानीसुनि० ॥ १ ॥ मिथ्यातिमिरि गयो ततखिनही, संशय भरम निवार ।

---

१ बादलकी धावा बूद ।

तत्त्वारथ अपने उर दरश्यो, जान लियो निज-सार ॥ वानीसुन० ॥ २ ॥ इंद नरिंद फनिंद पदीधर, दीसत रंक लगार। ऐसा आनँद बुध-जनके उर, उपज्यो अपरंपार ॥वानीसुनि०॥३॥

(२१)

जिनवानीके सुनेसों मिथ्यात मिटै, मिथ्यात मिटै समकित प्रगटै ॥ जिनवानीके० ॥ टेक ॥ जैसें प्रात होत रवि ऊगत, रैन तिमिर सब दूर फटै ॥ जिनवानीके०॥१॥ कालअनादिकी भूल मिटावै, अपनी निधि घटमैं प्रगटै। त्याग विभाव सुभाव सु धारै, अनुभव करतां कर्म कटै ॥जिन० ॥ २ ॥ अवर काम तजि सेवो याकों, या विन नाहिं अज्ञान घटै। बुधजन या भव परभव माही, वाकी हुंडी तुरत पटै ॥ जिनवानीके ॥ ३ ॥

२२। रेखता।

परम जननी धरम कथनी, भवार्णवपारकों तरनी ॥परम०॥ टेक॥ अनक्षरि[1]घोष आपतेंकी[2],

---

१ अनक्षरी धुनि। २ आप्तकी—सच्चे देवकी।

अछरजुत गनधरों बरनी ॥ परम०॥१॥ निरखे-पौ-नयन[1] जोगनतैं, भविनको तत्त्वअनुसरनी। विर्थरनी[2] शुद्ध दरसनकी, मिथ्यातम मोहकी हरनी परम०॥ २ ॥ मुकतिमंदिरके चढनेकों सुगमसीं, सरल नीसैरनी[3]। अंधेरे कूपमें परता, जगत उद्धारकी करनी ॥ परम० ॥३॥ तृषाके ताप मेटनकों, करत अमिरत वचन झरनी। कथंचितवाद[4] आचरनी, अवर एकांत परिहरनी ॥परम०॥४॥ तेरा अनुभव करत मोकों, बहुत आनंद उरभरनी। फिर्यो संसार दुखिया हूं, गही अब आन तुम सरनी० ॥ परम०॥५॥ अरज बुधजनकी सुनि जननी, हरो मेरी जनममरनी। नमूं करजोर मनवचतैं, लगाके सीसको धरनी ॥ परम०॥६॥

२३ । राग-परज मारू ।

जिनवानी प्यारी लागै छै महराज, सब दुखहारी अतिसुखकारी ॥ जिनवानी० ॥ टेक॥ अनँत जनमके कर्म मिटत हैं, सुनतहि तनक

१ निक्षेपनयके अनुयोगसे । २ विस्तारनी । ३ नसैनी । ४ स्याद्वाद

अवाज ॥ जिनवानी० ॥ १ ॥ षटद्रव्यनको कथन करत है, गुन-परजाय समाज। हेया हेय बतावत सिगरे, कहत है काज अकाज ॥ जिनवानी० ॥ २ ॥ नय-निक्षेप-प्रमाण-वचनतैं, परमत-हरत-मिजाज । बुधजन मनवांछा सब पूरै, अमृत स्याद अवाज ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥

२४। राग—ठुमरी।

सुनकर वानी जिनवरकी म्हारै, हरष हिये न समाय जी ॥ सुनकर० ॥ टेक ॥ काल अनादि-की तपन बुझाई, निजनिधि मिली अघाय जी ॥सुनकर० ॥ १ ॥ संशय भर्म विपर्जय नास्या, सम्यक-बुधि उपजाय जी ॥ सुनकर०॥२॥ अब निरभय पद पाया उरमैं, बंदों मनवचकायजी ॥ सुनकर० ॥ ३ ॥ नरभव सुफल भया अब मेरा, बुधजन भेंटत पांय जी ॥ सुन० ॥ ४ ॥

२५। राग—दीपचंदी।

म्हारा मनकै लगगई मोहकी गांठ, मैं तो जिन आगमसैं खोलों ॥ म्हारा० ॥ टेक ॥ अनादि

कालकी धुलरही गाढी, ज्ञानछुरीसों छोलों ॥ म्हारा० ॥ १ ॥ अष्टकरम ज्ञानावरणादिक, मो-आतम-ढिग जोलों । रागरोष विकलप नहिं त्यागूं, तोलों भववन डोलों ॥ म्हारा० ॥२ भेदविज्ञानकी दृष्टि भई जब, परपद नाहिं टटोलों । विषय-कषाय-वचन हिंसाका, मुखतैं कबहूं न बोलों ॥ म्हारा० ॥ ३ ॥ धन्य जथारथ वचन जिनेश्वर, महिमा बरनू कोलों । बुधजन जिन-गुन कुसुम गूंथिकै, विधिकर कंठमैं पोलों ॥ म्हारा० ॥ ४ ॥

२६ । राग अलहिया विलावल ।

बानी जिनकी बखानी, होजी, वाकों सब मुनि मनमैं आनी ॥ बानी० ॥ टेक ॥ मिथ्यामानी सम्यकदानी, म्हारा घटमैं बसो हितदानी ॥ बानी० ॥ १ ॥ निश्चय व्योहार जितावनहारी, नय निक्षेपप्रमानी । तुहि जाने विन भववन भटक्यो, करहु कृपा सुखदानी ॥बानी०॥२॥ जिते तिरे भवि भवदधिसेती, तिन निश्चय उर आनी ।

अब हूं तरि हैं बुधजन तुमतैं, अंकित स्याद्‌ निशानी ॥ वानी० ॥ ३ ॥

भैया भगवतीदासजी कृत।

२७—राग-धनाश्री।

जिनवानी को को नहिं तारे ॥ जिनवानी० ॥ टेक ॥ मिथ्यादृष्टी जगत निवासी, लहि समकित निजकाज सुधारे। गौतम आदिक श्रुतके पाठी, सुनत शब्द अघ सकल निवारे ॥ जिनवानी० ॥१॥ परदेशी राजा छिनवादी, भेद सु तत्त्व-भरम सब टारे। पंच महाव्रत धर तू भैया, मुक्तिपंथ मुनिराज सिधारे ॥ जिनवानी० ॥ २ ॥

२८। राग-धनाश्री।

जिनवानी सुन सुरत संभारे ॥ जिनवानी० ॥ टेक ॥ सम्यग्दृष्टी भवननिवासी, गहि व्रत केवल तत्त्व निहारे ॥ जिनवानी० ॥ १ ॥ भये धरनेंद्र पद्मावति पलमें, युगल नाग प्रभु पास उवारे ॥ बाहूबलि वहुमान धरत सो, सुनत वचन शिव

१ पाखणिकवादी बौद्धमती।

सुख अवधारे ॥जिनवानी०॥२॥ गनधर सबहि प्रथम धुनि सुनकर, दुविध परिग्रहसंग निवारे। गजसुकुमाल वरप वसुहीके, दीक्षा गहत करम सब टारे ॥ जिनवानी० ॥ ३ ॥ मेघकुँवर श्रेणिकको नंदन, वीरवचन निज भवहिं चितारे, औरहु जीव तरे जे भैया, ते जिनवचन सबै उपगारे ॥ जिनवानी० ॥ ४ ॥

२९ । राग-ठुमरी झिझोटी ।

जिनधुनि सुनि दुरमति नसि गईरे, नय स्यादवादमय आगममैं ॥ टेक ॥ विभ्रम सकल तत्त्व दरसावत, यह तौ भविजनके मन वशगई रे ॥ नय० ॥ चिर-भ्रम-ताप-निवारण-कारण, चंद्रकलासी दरसगईरे ॥ नय० ॥ २॥ अघमल पावनकारण 'मानिक' मेघघटासी बरसि गई रे ॥ नय० ॥ ३ ॥



(३०)

जब वानी खिरी महावीरकी तब,आनंद भयो अपार हो ॥ सब मानी मन ऊपजी हो, धिकधिक यह संसार ॥ जब० टेक ॥ बहुतनि समकित आदर्यो हो, श्रावक भये अनेक । घर तजिके बहु बन गये हो, हिरदै धर्यो विवेक ॥जब०॥१ केई भावैं भावना हो, केई गहैं तप घोर । केई जपैं प्रभु नामको, भाजैं कर्म कठोर ॥ जब०॥२॥ बहुतक तप करि शिव गये हो, वहुत गये सुर-लोय । द्यानत तो वानी सदा हो, जयवंती जग होय ॥ जब०॥ ३ ॥



(४)

गुरुस्तुति-पदसंग्रह।

(१) रेखता।

जिन रागरोष त्यागा वह सतगुरू हमारा ॥ ॥ जिन० ॥ टेक ॥ तज राजरिद्ध तृणवत, निज काज सँभारा ॥ जिन० ॥ १ ॥ रहता वह वन खंडमैं, धरि ध्यान कुठारा। जिन मोह महातरु को, जडमूल उखारा ॥ जिन० ॥ २ ॥ सर्वांग तज परिग्रह, दिग अंबर धारा। अनंतज्ञान गुणसमुद्र, चारित्रभंडारा ॥ जिन० ॥ ३ ॥ शुक्काग्निको प्रजालकैं, वसुकर्मबन जारा। ऐसे गुरु को दौल है, नमोस्तु हमारा ॥ जिन० ॥ ४ ॥

[२]

धनि मुनि जिनकी, लगी लौ[1] शिव ओरनै[2] ॥ धनि० ॥ टेक ॥ सम्यग्दर्शनज्ञानचरननिधि, धरत हरत भ्रमचौरनै ॥ धनि० ॥ १ ॥ यथाजात[3]

---

१ लगन। २ 'नै' विभक्ति सब जगह 'को' के अर्थमै है।

३ नग्नदिगम्बर मुद्रा।

मुद्राजुत सुंदर, सदन विजन गिरिकोरनै। तृन-कंचन-अरिस्वजन गिनत सम, निंदन और निहोरनै[1] ॥ धनि० ॥ २ ॥ भवसुखचाह सकल तजि बल साजि, करत द्विविध तप घोरनै। परम विरागभाव-पैवितैं[2] नित, चूरत कर्मकैंठोरनै[3] ॥ धनि० ॥ ३ ॥ छीन शरीर न हीन चिदानन, मोहतमोहझकोरनै। जग-तप-हर भविकुमुदै[4]-निशाकर, मोदन दौलचकोरनै ॥ धनि० ॥ ४ ॥

(३)

धनि मुनि जिन यह, भाव पिछाना ॥ धनि० ॥ टेक ॥ तनव्यय वांछित प्रापति गानी, पुण्य उदय दुख जाना ॥ धनि० ॥ १ ॥ एक विहारि सकैल[5]-ईश्वरता, त्याग महोत्सव माना। सब सुख कों परिहार सार सुख, जानि रागरुष भाना ॥ धनि० ॥ २ ॥ चित्स्वभावको चिंत्य प्रान निज,

---

१ स्तुति—वा प्रसंशाको। २ वज्रसे। ३ कर्मरूपी कठोर पर्वत-कोः। ४ भव्यरूपी कमोदिनीकूं खिलानेवाले चद्रमा। ५ ऐश्वर्य।

विमल-ज्ञान-दृग[1]साना। दौल कौन सुख जान लह्यो तिन, कियो शांतिरस पाना॥धनि०॥३॥

(४)

धनि मुनि निज आतम हित कीना। भव असार तन असुचि विषयविष, जान महाव्रत लीना धनि मुनि० ॥टेक॥ एकाविरारी परिगह छारी, परिसह सहत अरीना। पूरब तन तप-साधन मान न, लाज गनी परवीना॥धनिमुनि०॥१॥ शून्यसदन गिरगहनगुफामैं, पद्मासन आसीना। परभावनतैं भिन्न आप पद, ध्यावत मोहविहीना॥ धनिमुनि० ॥ २॥ स्वपरभेद जिनकी बुधि निजमैं, पागी बाह्य लगी ना। दौल तास पद-वारिज-रैंज[2]नै, किस अघ[3] करे न छीना॥ धनि मुनि०॥ ३॥

५। भावन।

कबधों मिलै मोहि श्रीगुरु मुनिवर, करि हैं

१ सम्यग्ज्ञानसम्यग्दर्शनसे सन गये। २ चरणकमलोंकी धूलिने ३ किसके। ४ पाप।

भवदधिपारा हो ॥ कबधों० ॥ टेक ॥ भोग-उदास जोग जिन लीनो, छांडि परिग्रह-भारा हो। इंद्रियदमन वमनमद कीनो, विषयकषाय-निवारा हो ॥ कबधों० १ ॥ कंचन काच बरा-वर जिनकै, निंदक बंदक सारा[1] हो। दुद्धर तप तपि सम्यक निजघर, मनवचतनकर धारा हो ॥ कबधों० ॥ २ ॥ ग्रीषमगिरि हिम सरिता-तीरैं, पावस तरुतर ठारा हो। करुणा भीनै[2] चीन त्रसथावर, ईर्यापंथ समारा हो ॥ कबधों० ॥३॥ मार-मार[3] व्रतधार शीलदृढ, मोहमहामल टारा हो। मास मास उपवास वास वन, प्रासुक करत अहारा हो ॥ कबधों० ॥ ४ ॥ आरत[4]रौद्र[5]लेश नहिं जिनकै, धर्म[6]-शुकल[7] चितधारा हो। ध्याना-रूढ गूढ निज-आतम, शुधउपयोग विचारा हो ॥ कबधों० ॥ ५ ॥ आप तरहिं अवरनकों तारहिं, भवजलसिंधु अपारा हो। दौलत ऐसे

१ सब। २ करुणारससे भीजे हुये। ३ कामदेवको मारकर। ४ आर्त्तध्यान। ५ रौद्रध्यान। ६ धर्मध्यान। ७ शुक्लध्यान।

जैनजतीको, नितप्रति ढोक हमारा हो ॥ कब-
धों० ॥ ६ ॥

६ ।

धनधन जैनी साधु अवाधित, तत्त्वज्ञानवि-
लासी हो ॥ धनधन० ॥ टेक ॥ दर्शन बोधमयी
निज मूरति, अपनी जिनको भासी हो । त्यागी
अन्य समस्त वस्तुमैं, अहंबुद्धि दुखदा सी हो ॥
धनधन० ॥ १ ॥ जिन अशुभोपयोगकी पर-
नति, सत्तासहित-विनासी हो । होय कदाचि
शुभोपयोग तो, तहँ भी रहत उदासी हो ॥ धन-
धन० ॥ २ ॥ छेदत जे अनादिदुखदायक,
दुविध-बंधकी फाँसी हो। मोह क्षोभ विन जिनकी
परनति, विमल मयंक-कलासी[1] हो, धनधन० ॥ ३ ॥
विषय-चाहदवदाह[2]—बुझावन, साम्यसुधारसरा[3]-
सी हो। भागचंद ज्ञानानंदी पद, साधत सदा
हुलासी[4] हो ॥ धनधन० ॥ ४ ॥

१ निर्मल चद्रमाकी कला समान । २ विषयोकी चाहरूपी दावा-
ग्निको बुझानेके लिये। ३ समतारूपी अमृतरसकी राशि । ४ प्रसन्न।

७ राग–सारंग।

श्रीमुनि राजत समतासंग। कायोत्सर्ग समाहित अंग॥ श्रीमुनि०॥ टेक॥ करतैं नहिं कछु कारज तातैं, आलंबित भुज कीन अभंग। गमनकाज कछु हू नाहिं तातैं, गति तजि छाके निजरसरंग॥ श्रीमुनि०॥१॥ लोचनतैं लखिबो कछु नाहीं, तातैं नाशादृग अचलंग। सुनिवे जोग रह्यो कछु नाहीं, तातैं प्राप्त इकंत सुचंग॥ श्रीमुनि०॥ २॥ तहँ मध्याह्नमाहि निज ऊपर, आयो उग्रप्रताप पतंग[1]। कैधों ज्ञानपवनवलप्रज्वलित[2], ध्यानानलसों उछलि फुलिंग[3]॥ श्रीमुनि०॥ ३॥ चित्त निराकुल अतुल उठत जहँ, परमानंद-पियूष-तरंग, भागचंद ऐसे श्रीगुरुपद, वंदत मिलत स्वपद उत्तंग॥ श्रीमुनि०॥ ४॥

८।

ऐसे जैनी मुनिमहाराज, सदा उर मो वसो

१ सूरज हैं। २ मानों ज्ञानरूपी पवनके बलसे जलाई हुई।
३। ध्यानरूपी अग्निका फुलिंगा ही हैं।

॥ ऐसे० ॥ टेक ॥ जिन समस्त परद्रव्यनिमाही, अहंबुद्धि तज दीनी । गुनअनंत ज्ञानादिक मम पुनि, स्वानुभूति लखलीनी ॥ ऐसे० ॥ १ ॥ जे निजबुद्धिपूर्वरागादिक, सकल विभाव निवारैं पुनि अबुद्धिपूर्वक[1] नाशनको, अपनी शक्ति सम्हारै ॥ ऐसे० ॥ २ ॥ कर्म-शुभाशुभ-बंध विषयमैं, हर्ष विषाद न राखैं । सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चरन-तप,-भाव-सुधारस चाखैं ॥ ऐसे जैनी० ॥ ३ ॥ परकी इच्छा तजि निजबल सजि, पूरब कर्म खिरावैं । सकल कर्मतैं भिन्न अवस्था, सुखमय लखि चितचावैं ॥ ऐसे० ॥ उदासीन शुद्धोपयोगरत, सबके दृष्टा ज्ञाता । बाहिज रूप नगन समता कर, भागचंद सुखदाता ॥ ऐसे० ॥ ५ ॥

९ । राग—जंगला ।

शांतिवरन मुनिराई वर लखि ॥शांति०॥टेक॥ उत्तर गुनगनसहित मूलगुन,,-सुभग बरात

१ अबुद्धिपूर्वक हुये रागद्वेपादि भावोंको नाश करनेके लिये ।

सुहाई ॥ शांति० ॥ १ ॥ तपरथपै आरूढ अनूपम, धर्म सुमंगलदाई ॥ शांति० ॥ २ ॥ शिवरमनीको पाणिगहन कर, ज्ञानानंद उपाई ॥ शांति० ॥ ३ ॥ भागचंद ऐसे बनराको[1], हाथ जोरि शिरनाई ॥ शांति० ॥४॥

१० । राग खमाच।

ज्ञानी मुनि हैं ऐसे स्वामी गुनरास ॥ ज्ञानी० ॥ टेक ॥ जिनके शैल नगर मंदिर पुनि, गिरि कंदर सुखवास ॥ ज्ञानी० ॥१॥ निःकलंक परयंक शिला पुनि, दीपमृगांक[2]-उजास ॥ ज्ञानी० ॥ २ ॥ मृग किंकर करुणा वनिता पुनि, शील सलिल तप ग्रास ॥ ज्ञानी० ॥ ३ ॥ भागचंद ते हैं गुरु हमरे, तिनहीके हम दास ॥ज्ञानी०॥ ४ ॥

११ । राग-खमाच

श्रीगुरु हैं उपगारी ऐसे, वीतराग गुनधारी वे । श्री गुरु० ॥ टेक ॥ स्वानुभूति-रमनी सँग कीड़ैं[3], ज्ञानसंपदा भारी बे ॥ श्रीगुरु ० ॥ १ ॥

१ दुल्हाको । २ चंद्रमाका उजाला । ३ खेलै ।

ध्यानपींजरामैं जिन रोक्यो, चितखग चंचल चारी वे ॥ श्री गुरु० ॥ २ ॥ तिनके चरनसरोरुह[1] ध्यावै, भागचंद अघटारी वे ॥श्रीगुरु०॥३॥

१२ । राग–परज ।

सम-आराम-विहारी, साधुजन सम-आराम विहारी ॥टेक॥ एक कल्पतरु पुष्पन सेती जजत भक्ति विस्तारी । एक कंठविच सर्प नाखिया, क्रोध दर्पजुत भारी ॥ राखत एक वृत्ति दोउनिमैं सबहीके उपगारी ॥ सम आराम० ॥ १ ॥ सारंगी[2] हरिबाल[3] चुखावै, पुनि मराल मंजारी । व्याघ्रबाल[4]कर सहित नन्दिनी[5], व्याल[6] नकुलकी नारी ॥ तिनके चरन कमल आश्रयतैं, अरितां[7] सकल निवारी ॥सम-आराम० ॥२॥ अक्षय अतुल प्रमोदविधायक, ताको धाम[8] अपारी । काम धराविच गढी सो चिरतैं, आतमरिधि अविकारी॥ खनत ताहि लेकर करमैं जो,तीक्ष्णबुद्धि कुदारी

१ चरनकमल । २ मृगी । ३ सिंहके बच्चेको । ४ वाघके बच्चेको । ५ गइया । ६ सर्प । ७ दुसमनी । ८ तेज-प्रकाश ।

॥ सम-आराम० ॥ ३ ॥ निज शुद्धोपयोगरस चाखत, परममता न लगारी । निज सरधान ज्ञानचरणात्मक, निश्चयशिवमगचारी ॥ भागचंद ऐसे श्रीयति प्रति, फिर फिर ढोक हमारी ॥सम-आराम० ॥ ५ ॥

१३ । राग—सोरठ मल्हारमें ।

गिरिवनवासी मुनिराज, मनबसिया म्हारै हो ॥ गिरि०॥टेक॥ कारन विन उपगारी जगके, तारन तरन जिहाज ॥ गिरिवन०॥ १ ॥ जनम जरामृत-गद-गंजनको, करत-विवेक-इलाज ॥ गिरिवन० ॥ २ ॥ एकाकी जिम रहत केशरी, निरभय स्वगुन समाज ॥गिरिवन० ॥३॥ निर्भूषन निर्वसन निराकुल, सजि रत्नत्रय साज ॥ गिरिवन० ॥४॥ ध्यानाध्ययनमाहिं तत्पर नित, भागचंद शिवकाज ॥ गिरिवन० ॥ ५ ॥

१४ । राग—कालिंगडा

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥ऐसे० ॥टेक॥ आप तरैं अरु परकों तारैं, निष्प्रेही निरमल हैं

॥ ऐसे०॥ १ ॥ तिलतुषमात्र संग[1] नाहिं जिनकै, ज्ञान-ध्यान-गुनबल हैं ॥ ऐसे० ॥२॥ शांत दिगंबरमुद्रा जिनकी, मंदरतुल्य अचल हैं ॥ ऐसे० ॥३॥ भागचंद तिनको नित चाहै, ज्यों कमलनिको अलि[2] हैं ॥ ऐसे०॥ ४ ॥

१५ । राग—मल्हार ।

वे मुनिवर कब मिलि हैं उपगारी, वे मुनिवर ॥ टेक ॥ साधु दिगंवर नगन निरंबर, संवर-भूषन-धारी ॥ वे मुनिवर० ॥१॥ कंचन काच बराबर जिनकैं, ज्यों रिपु त्यों हितकारी । महल मसान मरन अरु जीवन, सम गरिमा[3] अरु गारी[4] ॥ वे मुनिवर० ॥ २ ॥ सम्यग्ज्ञान-प्रधान-पवन-बल-तपपावकपर[5]जारी । शोधत जीव-सुवर्ण सदा जे, काय[6]कारिमा टारी ॥ वे मुनिवर० ॥ ३ ॥ जोरि जुगल कर भूधर विनवै, तिनपदढोक

१ परिग्रह । २ भंवरा । ३ गरिमा-बडाई । ४ गाली । ५ जलाकर । ६ कायरूपी कालिमा ।

हमारी । भाग उदय दर्शन जब पाऊं,ता दिनकी वलिहारी ॥ वे मुनिवर० ॥ ४ ॥

१६ । राग—सोरठ ।

सो गुरुदेव हमारा है साधो ॥ सो गुरु०॥ टेक जोग-अगनिमें जो थिर राखैं, यह चित चंचल, पारा है ॥ सो गुरु० ॥१॥ करन[1]-कुरंग खरे मद माते, जप तप खेत उजारा[2] है। संजम-डोर-जोर वश कीने, ऐसा ज्ञान-विचारा है ॥ सो गुरु०॥२ जा लक्ष्मीको सब जग चाहै. दास हुआ जग सारा है । सो प्रभुके चरननकी चेरी, देखो अचरज भारा है ॥ सो गुरु०॥३॥ लोभ-सरपके कहर जहरकी, लहरि गई दुख टारा है। भूधर ता रिखिका[3] शिख[4] हूजे, तब कछु होय सुधारा है ॥ सो गुरु० ॥ ४ ॥

१७ । राग—मल्हार ।

परम गुरु बरसत ज्ञान-झरी ॥परम गुरु०॥टेक

---

१ इन्द्रियरूपी हिरन । २ उजाड दिये, नष्ट करादिये । ३ ऋषि-मुनिका । ४ शिष्य ।

हरखि हरखि बहु गरजि गरजिकैं, मिथ्या तपन हरी ॥ परम गुरु०॥ १ ॥ सरधा-भूमि सुहावनि लागै, संशय बेल हरी । भविजनमनसरवर भरि उमड़े, समझ-पवन सियरी ॥ परम गुरु०॥ ॥ २ ॥ स्याद्वादनयबिजुरी चमकत, परमत-शिखरपरी । चातक मोर साधु श्रावककै, हृदय सुभक्ति भरी ॥ परम गुरु०॥३॥ जप-तप-परमानंद बढ्यो है, सु समय नींव धरी ॥ द्यानत पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥ परम गुरु० ॥ ४ ॥

(१८)

गुरु समान दाता नाहिं कोई ॥गुरु० ॥ टेक ॥ भानुप्रकाश न नाशत जाको, सो अँधियारा डारै खोई ॥गुरु०॥१॥ मेघसमान सबनपै बरसै, कछु इच्छा जाकै नाहिं होई । नरकपशूगति-आगमाहितैं, सुरगमुकतसुखथापै सोई ॥ गुरु० ॥ २ ॥ तीनलोकमंदिरमैं जानो, दीपक सम परकाशक लोई । दीपतलैं अँधियार भरचो

है, अंतरबाहिर विमल है जोई ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ तारनतरनजिहाज सुगुरु हैं, सब कुटुंब डोबै जगतोई । द्यानत निशिदिन निर्मल मनमैं, राखौ गुरुपदपंकज दोई ॥ गुरु० ॥ ४ ॥

(१९)

धनि ते साधु रहत वनमाहीं ॥धनि०॥ टेक ॥ शत्रु मित्र सुख दुख सम जानैं, दर्पन देखत पाप पलाँहीं ॥ धनि०॥१॥ अट्ठाईस मूलगुण धारहिं, मनवचकायचपलता नाहीं । ग्रीषमै[1] शैल-शिखरै[2] हिमै[3]-तँटनी[4], पावस वर्षा अधिक सहाहीं ॥ धनि० ॥ २ ॥ क्रोध मान छल लोभ न जानैं, रागरोष नाहीं उनपाँहीं । अमल अखंडित चिद्-गुणँमंडित[5], ब्रह्मज्ञानमैं[6] लीन रहांहीं ॥ धनि० ॥ ३ ॥ तेई साधु लहैं केवलिपद, आठँ-काठ-दहि[7] शिवपुर जांहीं । द्यानत भवि तिनके गुण गावैं,

१-२ गर्मीकी ऋतुमे पर्वतकी चोटी पर । ३ शीत ऋतुमे । ४ नदीके किनारेपर । ५ आत्मीक गुणो सहित । ६ आत्मज्ञानमे. ७ अष्टकर्मरूपी ईंधनको जलाकर ।

पावैं शिवसुख दुःख नशाहीं ॥ धनि ते० ॥४॥

(२०)

धनि धनि ते मुनि गिरि वनवासी ॥ धनिधनि० ॥ टेक ॥ मार[1]मार जगजा[2]र जार ते, द्वादशव्रत तप-अभ्यासी ॥ धनि धनि० ॥ १ ॥ कौड़ीलालै[3] पास नहिं जाकै, जिन छेदी आशा[4]पासी। आतम आतम पर पर जानै, द्वादश तीन प्रकृति नासी ॥ धनि धनि० ॥ २ ॥ जादुख देख दुखी सब जग है, सो दुख लखि सुख है तासी। जाकों सब जग सुख मानत हैं, सो सुख जान्यो दुख-रासी ॥ धनि धनि० ॥ ३ ॥ बाहिज भेष कहत अंतर गुण, सत्यमधुरहितमितभाषी। द्यानत ते शिवपंथ[5]-पथिक हैं, पांवपरत पातक जासी ॥ धनि धनि० ॥ ४ ॥

। २१ ।

भाई धनि मुनि ध्यान लगायकैं खरे हैं ॥ भाई

१ कामदेवकू मारकर। २ जगतके जालकू जलाकर। ३ रतन।
४ आशारूपी फासी। ५ मोक्षपथके रस्तागीर हैं।

॥ टेक ॥ मूसलधारसी धार परै है, विजुली कड़-कत शोर करै है ॥ भाई० ॥ १ ॥ रात अँध्यारी लोक डरै हैं, साधुजी अपने कर्म हरै हैं । भाई० ॥ २ ॥ झंझा[1]पवन चहूँदिश बाजैं, बादर घूम घूम अति गाजैं ॥ भाई० ॥३॥ डसैं मशक बहु दुख उपराजैं, द्यानत लाग रहे निज काजै ॥ भाई० ॥ ३ ॥

२२ ।

मुनि वन आए बना, शिवबनरी ब्याहनकों उमगे, मोहित भविकजना ॥ मुनि० ॥ टेक ॥ रत्नत्रय शिर सेहरा बांधैं, सजि संवर वसना । संग बराती द्वादश भावन, अरु दशधर्मपना ॥ मुनि० ॥१॥ सुमति नार मिलि मंगल गावत, अजपा गीत घना । रागरोषकी आतिसबाजी, छूटति अगनिकना ॥ मुनि०॥२॥ दुविधकर्मका दान बटत है, तोषित लोकमना । शुक्लध्यानकी अगनि जलाकर, होमैं कर्म घना ॥ मुनि० ॥३॥

१ बरसा सहित आंधी आनेको झंझावात कहते हैं ।

शुभवेल्यां शिववनरि वरी मुनि, अदभुत हरष बना। निजमंदिरमैं निश्चल राजत, बुधजन त्यागसना ॥ मुनि० ॥ ४ ॥

२३ । राग-मल्हार ।

देखे मुनिराज आज जीवनमूल वे ॥ देखे०॥ टेक ॥ शीस लगावत सुरपति जिनकी, चरन कमलकी धूर वे ॥ देखे० ॥ १ ॥ सूखी सरिता नीर वहत है, वैर तज्यो मृग सूर वे । चालत मंद सुगंध पवनवन, फूल रहे सब फूल वे ॥ देखे० ॥२॥ तनकी तनक खबर नहिं तिनको, जर जावो जैसें तूल वे । रंकरावतें रंच न ममता, मानत कनकको धूल वे ॥ देखे० ॥ ३ ॥ भेद करत हैं चेतन जडको, मेटत हैं भवि-भूल वे । उपकारक लखि बुधजन उरमें, धारन हुकुम कबूल वे ॥ देखे० ॥ ४ ॥

२४ ।

मनुवो लागिरह्योजी, मुनिपूजा विन रह्यो

१ [illegible] ।

न जाय ॥ मनुवो ० ॥ टेक ॥ कोटि बात पिय क्यों कहो, हूं मानूं नहिं एक। बोधमती गुरु ना नमूं, याही म्हारै टेक ॥ मनुवो०॥१॥ जन्म-मृत्यु सुख दुख विपति, वैरी मीत समान। राग रोष परिगह-रहित, वे गुरु मेरे जान ॥ मनुवो० ॥२॥ सुरसिवदायक जैन गुरु, जिनकै दया प्रधान। हिंसक भोगी पातकी, कुगतिदाय गुरु आन ॥ मनुवो० ॥ ३ ॥ खोटी कीनी पीव तुम, मुनिके गल अहि डारि। थे तौ नरकां जायस्यो वे नहिं काढ़ैं डारि ॥ मनुवो० ॥ ४ ॥ श्रेणिक सँगतैं चेलणा, छायक समकित धार। आप सा-तमा नरक हरि, पहुंचे प्रथममँझार ॥ मनुवो० ॥५॥ तीर्थंकरपद धारसी, आवत कालमझार। बुधजन पद वंदन करै, मेरी विपदा टार ॥ मनु-वो० ॥ ६ ॥

२५। राग—मल्हार।

माई आज महामुनि डोलैं। मतिवंता गुनवंत काहुसों, बात कछू नहिं खोलैं॥ माई ॥टेक॥ तू

नहिं आई ये घर आये, चरन कमल अब धोलैं। विधि पड़गाहे असन कराये, निधि बध गई अतोलै ॥ माई० ॥ २ ॥ नगर जिमाया कोइ न रहाया, यों अचरज कहों कोलैं ॥ माई०॥ ३ ॥ धन्य मुनीसर धन यह दानी, बुधजन यों मुख बोलै ॥ माई० ॥ ४ ॥

२६ । राग जंगला ।

वीतराग मुनिराजा मोकों दरस बताजा, दरस बताजा धर्म सुनाजा ॥ वीतराग० ॥टेर॥ परिगहरत न नगन छवि थांकी, तारन तरन जिहाजा ॥वीतराग०॥१॥ जीवन मरन विपति अर संपति, दुख सुख किंकर राजा। सबमें समता रमता निजमें, करत आपनों काजा ॥ वीतराग० ॥ २ ॥ तनकारागृह भोग भुजँगसा, परिकर शत्रुसमाजा। ऐसी जानि त्याग वन बसिकै, राखत धर्म इलाजा ॥ वीतराग० ॥३॥ कर्मविनासी मुनिवनवासी, तीनलोक-शिर-

१ बद गई ।

ताजा। आपसारिखा कर बुधजनकों, तुमको मेरी लाजा ॥वीतराग० ॥४॥

२७। राग कालिंगडा।

जो मोहि मुनिको मिलावै ताकी बलिहारी, जो०॥टेक॥ मिथ्याव्याधि मिटत नाहिं उनविन, वे निज अमृत पावै ॥जो०॥१॥ इंदफनिंदनरिंद तीनो मिलि, उन–चरना शिरनावै। सब परिहारी परउपगारी, हितउपदेश सुनावै।जो० ॥२॥ तजि सब विकलप, निजपदमाहीं, निशि दिन ध्यान लगावै। जन्मसुफल बुधजन तब है है, जब छवि नैन लखावै ॥ जो० ॥ ३ ॥

२८। राग मल्हार

लूम झूम बरसै बदरवा, मुनिवर ठाड़े तरुवर-तरवा ॥ लूमझूम० ॥टेक॥ कारीघटा तैसी बीज[1] डरावैं, वे निधड़क मानों काठ पुतरवा ॥लूमझूम ॥१॥ बाहर को निकसै ऐसेमैं, बडे वडे घरहू गलि गिरवा। झंझावात[2] बहै अति सियरी, वे न हिलैं

---

१ बिजली। २ बरसा सुहित आंधी।

निजबलके धरवा ॥ लूमझूम०॥२॥ देख उन्हैं जो (कोई) आय सुनावैं, ताकीतो करहूं न्योछरवा। सफल होय शिर पांयपरसिकैं, बुधजनके सब कारज सरवा ॥लूमझूम० ॥३॥

२९ । राग—सोरठमें ठुमरी ।

निरग्रंथ यती मन भावै, कुगुरादिक नाहिं सुहावैं ॥ निरग्रंथ०॥ टेक ॥ वीतराग विज्ञान-भावमय, शिवमारग दरसावैं ॥ निरग्रंथ० ॥१॥ रत्नत्रय-भूषण युत सोहत, निज अनुभूति रमावैं । निर ॥ १ ॥ विनकारण जगबंधु जगतगुरु, हित उपदेश सुनावैं । निरग्रंथ०॥४॥ कर्मजनित आचार त्यागकैं, परमातमकों ध्यावैं ॥ निरग्रंथ०॥ ५ ॥ मानिक भवि सतगुरु सुचंद्रलखि, आकुल ताप बुझावैं ॥ निरग्रंथ० ॥६॥

३० । राग—गजल रेखता ।

जिन रागरोष त्यागा, सो सतगुरु है हमारा। तजि राजरिद्ध तृणवत, निजकाज निहारा ।टेक रहता है वो वनखंडमें, धरि ध्यान-कुठारा। जिन

महामोह तरुको, जड़मूल उखाड़ा ॥जिन० १॥ जगमाहिं छा रहा है, अज्ञान अँधियारा। विज्ञान भान तमहर, घर माहिं उजारा ॥ जिन० ॥२॥ सर्वांग तजि परिग्रह, दिग अंबर धारा। रत्नत्रयादि गुणसमुद्र, शर्मभंडारा॥ जिन०॥३॥ विधि उदय शुभ अशुभमैं, हर्ष अरति निवारा। निज अनुभवरसमाहिं, कर्ममलको पखारा ॥ जिन० ॥ ४ ॥ पर-वस्तु-चाह-रोकि, पूर्व-कर्म संहारा। परद्रव्यसे जु भिन्न, चिदानंद-निहारा ॥ जिन० ॥ ५ ॥ शुक्लाग्निको प्रजालि, कर्मकानन जारा। तिनमुनिकों देख 'मानिक' नमस्कार उचारा ॥ जिन० ॥ ६ ॥

(३१)

वनमैं नगन तन राजै, योगीश्वर महराज, ॥टेक इक तो दिगंबर स्वामी, दूजो कोई नाहिं साथ ॥ वनमैं ॥ १ ॥ पांचों महाव्रतधारी, परिसह जीतै बहु भाँत॥ वनमैं०॥२॥ जिनने अतन[1]मदमार्‍यो,

[1] कामदेवका मद मारा।

हिरदै धास्यो वैराग ॥ वनमैं० ॥ ३ ॥ (एजी) रजनी भयानक कारी, विचरै व्यंतर वैताल ॥ वनमैं ॥ ॥ ४ ॥ बरसै विकट घनमाला, दमकै दामिनि चालै वाय ॥ वनमैं० ॥ ५ ॥ सरदी कपिन मद गालै, थरहर कांपैं सब गात ॥ वनमैं० ॥ ६ ॥ रविकी किरन सर सोखै, गिरिपै ठाड़े मुनिराज ॥ वनमैं ॥ ७ ॥ जिनके चरनकी सेवा, देवै शिव-सुख साज ॥ वनमैं० ॥ ८ ॥ अरजी जिनेश्वर येही, प्रभुजी राखो मेरी लाज ॥ वनमैं० ॥ ९ ॥

३२ । रंगत–लंगड़ी ।

परम वीतरागी गृहत्यागी, शिवभागी निरग्रंथ महान । अचरजकारी जिन्होंकी, परनति जानै सकल जहाँन ॥ टेर ॥ त्रस थावर हिंसा तज दीनी, झूट वचन नहिं भाखत हैं। परिगह त्यागी दया,–खटकायतनी उर राखत हैं ॥ चोरी तजै महादुखदाई, परसनेह सब नांखत हैं। जिनमैं रचिकै गुरुजी, ब्रह्मचर्यरस चाखत हैं ॥

(३३)

रेखता—निरखिकैं पग धरैं भूपर, मधुर हित मित वच कहैं। आहार शुद्ध सम्हाल वृष-उपक करन निरखि धरैं गहैं॥ मलमूत्र हू निर्जंतु भुवि, एकांत मय छेपैं सही। षटवंदनादिक अवसि कारज, नित करैं वृषकी मही॥ पंचेन्द्रियको बसमैं राखैं, तिनको वर्णन सुनो सुजान ॥अचरज०॥

सुंदररूप सची रतिरमनी, वा राक्षसनी भेष कराल। सुखदुखकारी अवर जे, जड चेतनके भेष कराल॥ कोमल कठिन दुगंध सुगंधित, रसनीरस वच शुद्ध सवाल। समकर जानै न जानै, पर परनत्तिकों अपनी चाल।

सैर—दृष्टि सबदिस छांड़िकै, नासाग्रमैं थिरता लही। मन विषय अवर कषाय तजि, शुभध्यानमैं थिरता गही॥ दृढ धारि आसन मौनसेती, शुद्ध आतम ध्यावते। तनमनवचनवश करैं गुरु वे, सुरग-शिव-सुख पावते॥ एकबार भोजन आदिक अठ,—वीस मूल गुन-धारक जान॥ अचरज०॥ २॥

सूख जाय सरवरपयरीता, पंथी पथ तज दीना है। ग्रीषम ऋतुमें चील निज, अंडनको तज दीना है॥ जलचारी अरु पवन अहारी, नभ चारी इम कीना है। तज निज थलको जिन्होंने, सघन वनाश्रय लीना है॥ सैर-ऐसी विकट गरमी विषै गिरि,-गुफा वनकों छोड़कैं। शिल-शैलशृंग-समाधि-धारी, आस जीकी मोड़कैं॥ जिनके सुभानन्भानसनमुख, भासमान न भान हैं। बहुज्योति मूरत धार धारा, इन समान न आन हैं॥ एकबार जिनके दर्शनतैं सभी निकट आवैं कल्यान॥ अचरज०॥ ३॥

घन गरजै लरजै अति दादुर, मोर पपैया शोर करैं। चपला चमकै पवन चालै, जलधारा अति जोर परै॥ तरुतल निवसैं सुगुरु साहसी, अच-ल अंग ह्वै ध्यान धरैं। शीतकालमैं नीरतट, तपसी तप अति घोर करैं॥ सैर-बहु रिद्धि सिद्धि सुभावथिरता, ज्ञाननिधि या भवविषै। पावैं तपस्वी सुर असुरपद, मोक्षपद परभवविषै॥

ऐसे गुरुकी भक्ति करि बहु, नमों मनवच कायसों ॥ गुरुदेव मोहि छुडाय दीज्यो, मोहि रूपी बायसों ॥ कुगुरु त्यागकर सेव सुगुरुकी धरहु जिनेश्वरधर्म महान ॥अचरजकारी०॥४॥

३४। सुगुरुस्वरूपलावनी रंगत–लंगड़ी।

कहूं चिह्न कछु सुनो सुगुरुके जिनशासन अनुसारी हैं। भ्रमतमहारी जिन्होंके, वचन स्व-परहितकारी हैं ॥ टेर ॥ प्रथम दिगंबर भेष गुरूका वस्त्राभूषण त्याग दिया। शांतस्वरूपी अथिर जग, जान मान वैराग लिया ॥ वनमैं बसैं कसैं तन मनकूं, निजनिधिमय सद्ध्या न किया। परिगह त्यागी अनुपम, ज्ञानसुधा हित जान पिया। वदन चंद्रछवि अनुपम जिनने, वीतरागता धारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ १ ॥ असन हेत नहिं जात बुलाये, ना कछु संग स-सवारी है। भेट न चाहैं असन कछु, मिलै मधुर वा खारी है ॥ रागरोस नहिं करै कदाचित्त, जिनआज्ञा चित धारी हैं। भोजन करकैं गुरु

कर, जांय गमन तिहँबारी हैं ॥ यंत्र मंत्र नहिं करैं कुकिरिया, निरतिचार ब्रमचारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ २ ॥ त्रण कंचन अरि मित्र बराबर, जीवन मरन समान गिनै । सहैं परीषह बीस दो, समताको परधान गिनै ॥ काम क्रोध मद मोह लोभके, परिकर सब दुखदान जिनै । विषय-बासना महा अप,-वित्र पापकी खान गिनै ॥ लोकरीति परिहरी जिन्होंनै, वृत्ति अलौकिक धारी हैं ॥ भ्रमतम० ॥ ३ ॥ तारन तरन जैनके गुरुको, यह स्वरूप बाहिर जारी । उर अंतरमैं शुद्ध रत-नत्रयनिधिके सहचारी ॥ ये ही सरन सहाय जगतमैं, शिवमगमैं ये सहचारी । अचरजकारी जिन्होंकी, परनति है जगतैं न्यारी ॥ गुरुपदकमल 'जिनेश्वर'-उरमैं बास करो अनिवारी है ॥ भ्रमतम० ॥ ४ ॥

३५ । लावनी रंगत-लॅगड़ी ।

या कलिकाल महानिशिमैं जिन,-वचन चंद्रिका जारी हैं । परिगह त्यागी गुरुकी, सेवा

शिवहितकारी है ॥ टेर ॥ कुंदकुंद आदिक श्रीगुरु, उपकार कर गये सब जगका । शास्त्र बनाकैं सर्व, बरताव दिखागये शिवमगका ॥ सत जिनधर्म लहै सो ज्ञाता, सरन गहै जो इस मगका । ज्ञानचक्षुतैं लगैं सब, सत्य झूठ हर मजहबका ॥ ज्ञानविरागविषै सुनि भाई, शिवलक्ष्मी–सहकारी हैं ॥ परिगहत्यागी ॥ १ ॥ विद्याके अभ्यास विनां नहिं ज्ञानवृद्धिकों पाता है । विना ज्ञानके नही, परमागम मर्म लखाता है ॥ परमागम विन धर्म न जानै, धर्मविना दुख पाता है । इस कारनतैं एक यह, विद्या शिवसुखदाता है ॥ हाय हाय विद्याके दुस्मन, आज धर्म-अधिकारी हैं ॥ परिगहत्यागी० ॥ २ ॥ विषय-बासनामैं फँसि जिनने, धर्म कर्मको लोप दिया । लोभ उदयसे जिन्होंने, सतमारगको गोप किया ॥ धर्मकल्पतरु-काटि आपने पापवृक्षकों रोप दिया । धिक्‌धिक इनकों सत्य, कहनेवालोंपर कोप किया । कहा कहों वे विष-

यचाहवस बन गये आप भिखारी हैं ॥ परिगहत्यागी० ॥ ३ ॥ तजकर ज्ञानविराग आप बन, गये विषयवस अज्ञानी । खानपानमैं ऐस, इस्तरमैं सबके अगवानी ॥ धर्ममूल अरहंत देव निरग्रंथ गुरु हैं जिनवानी । इनके सँगमैं महाशठ, भैरवकी पूजा ठानी ॥ अर्ज जिनेश्वर देव सुनो, यह मोहकर्म अनिवारी है ॥ परिगहत्यागी० ॥ ४ ॥

३६ । लावनी रंगत लंगडी ।

(कुगुरु स्वरूप)

सम्यग्ज्ञान विना जगमैं, पहिचाननवाला कोई नहीं । जैनधर्मको यथावत, जाननवाला कोई नहीं ॥ टेक ॥ पहिले ज्ञान आपको चहिये, विना ज्ञान क्या समझैंगे । सत्य झूठका कहो वे, निरणय कैसैं कर लैंगे ॥ विन निर्धार किये जिनमतकी, उर प्रतीत क्या धरलैंगे । विन प्रतीतके क्रियाकरि, भवदधि कैसैं तिरलैंगे ॥ दुर्लभ जान ज्ञान होना यह, मानववाला कोई नहीं । जैनधर्मको०

॥ १ ॥ गुरुका काम ज्ञान देना वा धर्मदेशना करना है। आप धर्ममें लीन हो, कर्म अरीको हरना है॥ हा कलिकाल प्रभाव आज गुरु,जगहँ जगहँ लड़ मरना है। अधर्म करकें पापका, भार आप सिर धरना है॥ विन विद्या बल इन बातोंका छाननवाला कोई नहीं॥ जैनधर्मको० ॥ २ ॥ ज्ञानदानके बदलेमें श्रुत, पाठन पठन निवार दिया। पढे जो कोई उसे पुस्तक देना इनकार किया॥ जहां जिनागमकी चर्चा तहँ, विन कारण तकरार किया। भोले भाले जहां देखे तहां,रहनेका इख्त्यार किया॥ शिवमगमें ऐसे ठगकों गुरु माननवाला कोई नहीं॥ जैनधर्मको०॥३॥ धर्मदेशनाके बदले, लौकीक कथा कों करते हैं। बडे ढोंगसें आप निज, विषय विथाको हरते हैं॥ सरस मनोहर असन वसन सय,—नासन नहीं विसरते हैं। बडे सूर हैं जगतसों, जरा नहीं वे डरते हैं॥ वचन जिनेश्वर सत्य तदपि, पहिचाननवाला कोई नहीं ॥ जैनधर्मको० ॥ ४ ॥

कुगुरु निषेध ।

२७ लावनी, रंगत–लंगड़ी ।

कामक्रोधवशि होय कुधी जिनमतकै दाग लगाते हैं। धिक् धिक् इनको धर्म विन, जिनधर्मी कहलाते हैं॥ टेर ॥ जिनवरवचन उथापि आपने वागजाल विस्तार दिया। खूब विचारी आपका, संघसहित निस्तार किया ॥ ब्रह्मचर्य व्रत धारि बहुरि शृंगार गलैका हार किया। खानपानमैं पुष्टरस, भोजनको इकत्यार किया। इत्र फुलेल सुगंध लगाकर, कामदाह उपजाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ १ ॥ सुनो महाशय अर्ज हमारी, जरा गौर करकैं देखो। मृग तृणभक्षी जिन्होंके सुखसमाजको नहिं लेखो ॥ शीत उष्ण दुख सहैं निरंतर, अरु संकित मनमैं पेखो। वे भी वनमैं मृगी लखि, कामक्रियामैं रत देखो॥ कहो आप फिर किस कारनसैं निरविकार रह जाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ २ ॥ भोजन आप करावै बहुविधि, शुद्ध कहावै सेवकसों। यह चा-

लाकी धन्य यह, पाप भयो सब सेवकसों ॥ पहिले असनपाप देकरकें, पीछैं धन ले सेवकसों । तुष्ट होकर बारता करै, रागजुत सेवकसों ॥ तुष्ट सुफल ये रुष्ट भये, क्या जानै क्या दे जाते हैं ॥ धिक्‌धिक् ॥३॥ चौमासाके प्रथम दिवस धरि, भेष दिगंबर पदमासन् । जिनप्रतिमाके सामनै, करै प्रतिज्ञा वसनासन् ॥ सेवकगनसों यों कहलावें, वक्त नहीं सुन गुरुभाषन् । परिग्रह धारो तजो यह, योगप्रतिज्ञाको आसन् ॥ इम सुन वचन ततच्छन उठकर, फिर भेषी बन जाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ ४ ॥ खूब अनुग्रह किया आपने, सेवक गन सब तार दिया । जरा देरमें अधोगति, बंधनका हकदार किया ॥ समझो सेवकगन हिरदैमें, क्या अनुपम उपहार दिया । ज्ञान-चक्षुकों खोलकर, देखो क्या उपकार किया ॥ मोह-नींदके जोर अज्ञजन, योंही काल गमाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ ५ ॥ आंख खोलकर देखो आगम भगवतने क्या किया बयान् । देवधर्मगुरु इन्होंका,

सत्स्वरूप लीज्यो पहचान्। इनकों जान यथावत निजपर,—तत्वनको कीज्यो सरधान्। यह जिनमतको मूल है, याको पहिले निश्चय जान् ॥ या विन भेष निरर्थक सब ही भववनमें भटकाते हैं ॥ धिक् धिक् ॥ ६ ॥

३८। लावणि रंगत लंगडी।

देखो कालप्रभाव आज पाखंड जगतमैं छाया है। जैनधर्मको नीच लोगोंने दाग लगाया है ॥ टेर ॥ जगजाहर अरहंतदेव, निरग्रंथ गुरू हैं जिनमतके। दयाधर्म है जिनागम, सत्य वचन हैं जिनमतके ॥ इनहींको जानै मानै श्रद्धान, करैं जन जिनमतके। सिवा इन्होंके औरकों, कभी न मानैं जिनमतके। इनकों तज अज्ञानोंने, मनकल्पित ठाट बनाया है ॥ जैनधर्मको० ॥१॥ कोई बनै कलयुगी अचारज, आरज धर्म विसार दिया। महंत होकैं अधर्मके, कामोंको इख्त्यार किया ॥ पहिले नाम दिगंबर होके फिर वस्त्रादिक धार लिया। परिग्रह तजिकैं बनिज,

व्योपार व्याजका कार किया ॥ देखो हीन आ-चरन करिकैं, भगतनकों सरमाया है। जैनधर्म-कों० ॥२॥ केई भोले जीव जिन्होंने, जिनशा-सनको नहिं जाना। जो कुछ जैसी किसीने, कही उसीको सच माना ॥ खानपान लड़नेमैं चातुर, पढनेमैं मन अलसाना। क्रोधी मानी लो-भवश, लिया कृपणताका बाना ॥ हाय हाय ऐसे जीवोंने, नरभव वृथा गुमाया है ॥ जैनधर्मको० ॥ ३ ॥ कोई उद्यमहीन दीन नर, पेट काज है ब्रमचारी। खान पानकों मिला तब, धर्‍यो भेष स्वेच्छाचारी। पूछेंपर वे जबाब दें हम, इतनेही दिन ब्रतधारी। धिक धिक उनको धर्मपद, छोड भये जे गृहचारी। सुनिये देव जिनेश्वर अरजी, यह कलयुगकी छाया है ॥ जैनधर्मको० ॥ ४ ॥

३९। लावनी, गृहस्थाचार्यकी, रंगत—लंगडी।

उत्तम नर जिनमतकों धारैं, सो श्रावक कह-लाते हैं। कोई उन्हींमैं गृहस्थाचारजका पद पाते हैं ॥ टेर ॥ गर्भादिक संस्कार क्रिया जे,

सभी करानेका अधिकार । जिनगृह प्रतिमा-प्रतिष्ठा, तथा धर्मके काम अपार ॥ व्रतविधान-की सभी प्रक्रिया, अथवा प्रायश्चितका परचार । गृहधर्मीका करावैं, इसभव परभव-हित-व्यवहार ॥ धर्मक्रियाको करते करते, जो उत्तम कहलाते हैं। कोई उन्हींमें ॥ १ ॥ क्रियाविशेष गृह-स्थाचारज, करते जिनका सुनो बयान । जाके सुनते समझलैं, सर्वकालको चतुर सुजान ॥ दीक्षान्वय अवतारक्रियामें, ग्रहन करै जिनमत सुखदान । चौथा दरजा त्याग कर, कुदेव पूजन निंद्यमहान । श्रीअरहंतदेवके पूजक, सदगृह-स्थ कहलाते हैं ॥ कोई उन्हींमें० ॥ २ ॥ व्रतका चिन्ह जनेऊ धारैं, नवमी क्रियाविषै व्रतवान् । फिर क्रम क्रमसे पंद्रमीं, क्रिया लहै उपनीत महान् ॥ प्रायश्चित्त शास्त्रके ज्ञाता, जानत नय-निक्षेप प्रमान् । सो बडभागी गृहस्थाचारज जानो सम्यकवान् ॥ सभी गृहस्थी उनको मानै जो श्रावक कहलाते हैं ॥ कोई उन्हींमें० ॥ ३ ॥

श्रीमत आदिपुराण शास्त्रमैं, उनतालिसमा है अधिकार। दीक्षान्वयकी क्रिया, उपनीतविषै देखो निरधार ॥ गुण लच्छन पहिचान सुधीजन, यथायोग्य करते व्यवहार। विना परखके धर्मधन, खोवैं मूरख जीव अपार ॥ यही जिनेश्वरकी आज्ञा है, जोश्रावक उर लाते हैं। कोई उन्हींमैं० ॥ ४ ॥

(४०)

वृद्धोंकेलिये आचार्यवर्य शांतिसागरका दर्शन।

गीताछंद।

तुम शांतिसागर शांतिदायक, शांति द्यो इस दासको। तत्काल सबको शांतिप्रद हो, गहै तुमरी पास जो ॥ मो भाग आजहि उदय आयो, लही तुमरी शरन जी। यह दास नित ही शांति चाहत, सुनहु तारन तरनजी ॥१॥ मैं अंतविन चिरकालतैं ही, नितनिगोद फँस्यो रह्यो। तामैं जु दुख चिरकाल भुगत्यो, वचनतैं जात न कह्यो॥ तहँतैं निकसि फिर भयो थावर, अवर पशु पक्षी

भयो । तहँ पाय अतिशय दुख अनंते, नरक सातनिमैं गयो ॥ २ ॥ नरकनतणे अति घोर दुख सह नरजनम गह, दुख सह्यो । फिर सुर असुर गति पायकर, कोउ पुण्यवश नरतन लह्यो ॥ सो बालपनमैं खेल खोयो, युवावस्था पुनि गही । सांसारि-विषय-कषाय-वश, सुख लह्यो रंच न दुख यही ॥ अब अधमरे सम वृद्ध-पनमैं, शक्ति कुछ भी ना रही । अतएव शांति प्रदाय लखि तुम,-चरनकी शरना गही ॥ अब शांतिसागर सुगुण-आकर, दया करहू दीनपर । तुम चरनपंकज सिरनवाकर, बंदहू मन लायकर ॥ ४ ॥

५

बधाई संग्रह।

१। बधाई—श्रीआदिनाथभगवानकी।

चलि सखि देखन नाभिरायघर, नाचत हरि[1] नटवा॥ चल०॥टेर॥ अदभुत ताल मान स्वर-लयजुत, चवंत[2] राग षटवा[3] ॥चलसखि०॥ १॥ मनिमय नूपुरादि भूषण दुति, युतसुरंग पटवा[4] हरिकर[5] नखन नखनपै सुरतिय, पग फेरत कटवा[6]॥ चलि सखि ॥२॥ किंनर करधर बीन बजावत, लावत लय झटवा[7]। दौलत ताहि लखे चखं[8] तृपते, सूझत शिववटवा[9] ॥ चलि सखि० ॥ ३॥

२। बधाई—शांतिनाथ भगवानकी।

वारी हो बधाई या शुभ साजै, विश्वसेन ऐरां[10] देवीगृह, जिनभव[11]मंगल छाजै ॥ वारी हो०

१।इंद्ररूपी नट।२ गाते है। ३ छह राग। ४ कपड़े। ५ इंद्रके हाथोके नखोपर। ६ कमर। ७ शीघ्रही। ८ नेत्र। ९ मोक्षमार्ग। १० शातिनाथ भगवानकी माता। ११ भगवानके जन्मका उत्सव।

॥ टेक ॥ सब अमरेश अशेष[1]विभवजुत, नगर-नागपुर[2] आये। नाग[3]दत्त सुर इंद्र वचनतैं, ऐरावत सज धाये ॥ लखयोजन शत वदन वदन वसु[4],-रद प्रतिसर ठहराये। सर सर सौपन वीस नलिनि प्रति, पदम पचीस विराजै ॥ वारी हो० ॥ १ ॥
पदम पदम प्रति अष्टोत्तर शत, ठने सुदल मन हारी। ते सब कोटि सताईसपै मुद,-जुत नाचत सुरनारी ॥ नवरस गान ठान काननको, उपजा-वत सुख भारी। बंक[5] लय लावत लंक[6] लचावत, दुति लखि दामिनि लाजै ॥ वारी हो० ॥ २ ॥
गोप[7] गोपतिय[8] जाय माय ढिग, करी तास थुति सारी। सुखनिद्रा जननीको कर नमि, अंक[9] लियो [10]जगतारी ॥ लै वसु मंगल द्रव्य दिशि[11]सुरीं, चलीं अग्र शुभकारी। हरखि हरी चख-सहस करी तब, जिनवर निरखन काजै ॥ वारी हो० ॥३॥

१ समस्त विभव सहित। २ हस्थनापुर। ३ कुवेर। ४ आठ आठ दांत। ५ बाकी। ६ कमर। ७ गुप्तभावसे। ८ इन्द्राणी जाकर। ९ गोदीमें लिया। १० भगवानको। ११ दिक्कुमारिका देवियां।

ता गजेंद्रपै प्रथम इंद्रने श्रीजिनेंद्र पधराये। द्वितियं[1] छत्र धरि तृतियं[2] तुरियं[3] हरि, मुद धरि चमर दुराये॥ शेषं[4] शक्र जय शब्द करत नभ, लंघि सुराचल[5] छाये। पांडुशिला जिनथापि नची[6] सचि, दुंदुभि कोटिक बाजे॥ वारी हो०॥ ४॥ पुनि सुरेशने श्रीजिनेशको, जन्मन्हवन शुभ ठान्यो। हेमकुंभ[7] सुर हाथहि हाथन, क्षीरोदधि जल आन्यो॥ वदन उदर अवगाह एक चौ, वसु योजन परमान्यो। सहसआठ[8] कर करि हरि जिनशिर, ढारत जय धुनि गाजे॥ वारी हो० ॥५॥ फिर हरिनारि[9] सिंगार स्वामितन, जजे सुरा जस गाये। पूरबली[10] विधि करि पयान मुद ठान पिताघर[11] लाये॥ मनिमय आंगनमें

१ एसान इन्द्र। २ सनत्कुमार। ३ माहेंद्र इन्द्र। ४ बाकीके सब इंद्र। ५ सुमेरुपर्वतपर। ६ इन्द्राणी। ७ सोनेके कलसोका मुख चार कोशका चौडा, पेट सोलह कोशका चौडा, और ऊंचा बत्तीस कोश था। ८ ऐसे एक हजार आठ कलशोकेलिये इंद्रने एक हजार आठ हाथ बनाकर। ९ इन्द्राणीने १० पहिलेकी तरह हर्षके साथ ऐरावत हाती पर बिठाकर। ११ पिताके घर लाये।

कनकासन,-पै श्रीजिन पधराये । तांडवनृत्य किये सुरनायक, शोभा सकल समाजै ॥ वारी हो० ॥ ६ ॥ फिर हरि जगगुरु-पितैरितोष शांतेश घोष जिननामा । पुत्र जन्म उत्साह नगरमैं, कियो भूप अभिरामा ॥ साध सकल निजनिज नियोग सुर, असुर गये निज धामा। त्रिपदँ धारि जिन चारु चरनकी, दौलत करत सदा जैं ॥ वारी हो० ॥ ७ ॥

३ । वधाई--पार्श्वनाथ भगवानकी ।

वामाघर वजत वधाई, चलि देखरी माई ॥टेक॥ सुगुनरास जग-आस-भरन तिन, जने पार्श्व-जिनराई । श्री ही धृति कीरति बुधि लछमी, हर्षित अंग न माई ॥ चलि देखरी० ॥१॥ वरन वरन मनि चूर सची सब, पूरत चौक सुहाई ।

१ पुरुषका नृत्य, स्वय इन्द्रने किया । २ जगतके गुरु भगवानके पिताको प्रसन्न करके ३ शातिनाथ नामकी । ४ घोषणा करके । ५ मनोहर उत्कृष्ट । ६ अपने अपने स्थान । ७ तीर्थंकरपद, चक्रवर्तिपद और कामदेवपदके धारक । ८ भगवानके उत्तम मनोहर चरनोकी ।

हा हा हू हू नारद तुंबर, गावत श्रुति सुखदाई ॥ चलि देखरी० ॥२ ॥ तांडव नृत्य नटत हरिनट तिन, नख नख सुरीं नचाई। किन्नर करधर बीन बजावत, दृगमनहर छवि छाई ॥ चल देखरी ॥ ३ ॥ दौल तासु प्रभुकी महिमा सुर,–गुरुपै कहिय न जाई । जाके जन्मसमय नरकनमैं, नारिकि साता पाई ॥ चलि देखरी माई० ॥४॥

४ । बधाई–आदिनाथ भगवानकी राग–पंचम ।

आज गिरिराजके शिखर सुंदर सखी, होत है अतुल कौतुक महा मनहरन ॥ टेक ॥ नाभिके नंदको जगतके चंदको, लेगये इंद्र मिलि जन्ममंगल करन ॥ आज० ॥ १ ॥ हाथ हाथन घरे सुरन कंचन घेरे, छीरसागर भरे नीर निरमल बरन । सहस अरु आठ गिन, एकही बार जिन, सीस सुर ईशके करन लागे ढरन ॥ आज० ॥ २ ॥ नचत सुरसुंदरी रहस रससों भरी, गीत गावैं अरी देहि ताली करन । देव

१ घड़े—कलश । २ अड़ी हुई=पास पास खड़ी हुई ।

दुंदुभि बजैं वीन वंशी सजैं, एकसी परत आनंदघनकी भरन ॥ आज० ॥३॥ इंद्र हर्षित हिये नेत्र अंजुलि किए, तृपति होत न पिये रूप अमृत झरन । दास भूधर भनै सुदिन देखे बनै, कहि थके लोक लख जीभन सकै बरन ॥ आज०॥४॥

५ । वधाई—आदिनाथजीकी । राग—पांज ॥

माई आज आनँद है या नगरी ॥ माई ० ॥ टेक ॥ गजगमनी शशिवदनी तरुनी, मंगल गावति हैं सगरी ॥ माई आज० ॥ १ ॥ नाभि रायघर पुत्र भयो है, किये हैं अजाचक जाचकरी ॥ माई आज० ॥ २ ॥ द्यानत धन्य कूख मरुदेवी, सुरसेवत जाके पगरी ॥माई आज०॥३॥

६ । राग-परज

माई आज आनँद कछु कहे न बनै ॥ टेक ॥ नाभिराय मरुदेवी-नंदन, व्याह उछाय त्रिलोक भनै ॥ माई आज० ॥ १ ॥ सीस मुकुट गल माल अनूपम, भूषन बसनन को बरनै ॥ माई आज० ॥ २ ॥ गृह सुखकार रतनमय कीनो,

चौंरी मंडप सुरगननैं ॥ माई आज ० ॥ ३ ॥ द्यानत धन्य सुनंदा कन्या, जाकों आदीश्वर परनैं ॥ माईआज० ॥ ४॥

७ । बधाई—आदिनाथकी राग—आसावरी ।

आज आनंद बधावा ॥आज०॥टेर॥ जनम्यो आदीसुर नाभीके भौन । कीन्हो सब इंद्र मिलि मेरुपै न्होन ॥ आज ० ॥ १ ॥ ऐरावत शक्र[1] चढ्यो, गोदमैं किशोर । नाचत हैं अपछरा, सु सत्ताईस कोर[2] ॥ आज० ॥ २ ॥ अजोध्या नगर सब, घेर्‌यो देवि देव । नरनारी अचरज यह, देखैं सब एव ॥ आज ० ॥ ३ ॥ द्यानत मरुदेवी पद, सची सीस नाय । धन धन जगमाता, हमैं सुख दाय ॥ आज० ॥ ४ ॥

८ । राग—ललित एकतालो ।

बधाई राजै हो आज राजै, बधाई राजै, नाभि रायके द्वार बधाई ॥टेक॥ इंद्र सचीसुर सब मिलि आए, सज लाये गजराजै ॥बधाई॥ १॥ जन्मसद-

१ इंद्र । १ करोड़ ।

नतैं सची ऋषभ ले, सौंपदिये सुरराजै। गजपै धार गये सुरगिरिपै, न्हौन करनके काजै ॥बधाई०॥ सहस आठ शिर कलस जु ढारे, पुनि सिंगार समाजै। लाय धर्यो मरुदेवी करमैं, हरि नाच्यो सुख साजै ॥बधाई०।३। लच्छन व्यंजन सहित सुभग तन, कंचन दुति रवि लाजै। या छवि बुधजनके उर निशिदिन, तीनज्ञानजुत राजै। बधाई०॥४॥

९। राग--सारंग।

बधाई भई हो, तुम निरखत जिनराय ॥बधाई टेक ॥ पातक गये भये सब मंगल, भेटत चरन कमल जिनराई ॥बधाई०॥१॥ मिटे मिथ्यात भरमके बादर, प्रगटत आतम रवि अरुनाई। दुरबुधि चोर भजे जिय जागे, करन लगे जिनधर्म कमाई ॥बधाई०॥२॥ दृगसरोज फूले दरसनतैं, तुम करुना कीनी सुखदाई। भाखि अनुव्रत महाविरतको, बुधजनको शिवराह बताई ॥बधाई०।३।

(१०)

बधाई ... आज ॥ बधाई० ॥ टेक ॥

महासेनसुत चंद्रकुँवर जू, राज लह्यो सुख साज ॥ बधाई०॥१॥ सनमुख नृत्यकारिनी नाचै, होत मृदंग अवाज। भेट करत नृप देश देशके, पूरत सबके काज ॥ बधाई० ॥२॥ सिंहासनपै सोहत ऐसो, ज्यों शशि-नखत-समाज। नीतिनिपुन परजाको पालक, बुधजनको सिरताज ॥ बधाई०॥

(११) । राग सोरठा।

आज तो बधाई हो नाभिद्वार ॥आज०॥टेक॥ मरुदेवी माताके उरमैं, जनमे रिषभ कुमार ॥ आज० ॥ १ ॥ सची इंद्र सुर सबमिलि आये, नाचत हैं सुखकार। हरषि हरषि पुरके नरनारी, गावत मँगलाचार ॥ आज तो० ॥ २ ॥ ऐसो बालक भयो जु ताकै, गुनको नाहीं पार। तनमन वचतैं वंदत बुधजन, है भवतारनहार ॥आज०॥

(१२)

भई आज बधाई निरखत श्रीजिनराई॥ ॥ भई० ॥ टेक ॥ गया अमंगल पाया मंगल, जन्म सुफल भया भाई ॥ भई० ॥१॥ तीनलोक की सारी संपत्ति, अर सारी ठकुराई। इनकी कृपा

कटाछ होत ही, मेरी मुझमैं पाई ॥ भईआज० ॥२॥ इन विन राचे भोग विसनमें, तातैं विपदा लाई। अब भ्रम नास्या ज्ञान प्रकास्या, पिछली बुधि विसराई ॥ भई आज० ॥ ३ ॥ सब हितकारी पर उपगारी, गनधर वानि बताई। बुध जन अनुभव करके देखी, सांची सरधा आई ॥ ॥ भई आज० ॥ ४ ॥

(१३)

भये आज अनंदा, जनमे चंदजिनंदा ॥भये०॥ ॥टेक॥ चतुरनिकाय देवमिलि आये, इंद्र भया है बंदा ॥ भए० ॥ महासेन घर मात लछमना, उपजाया सुखकंदा। जाके तनमैं बढी जोति अति, मलिन लगै है चंदा ॥ भये० ॥ २ ॥ अब भविजन मिलि सुख पावैंगे, कटि हैं कर्मके फंदा। याहीके उपदेश जगतमैं, होगा ज्ञान अमंदा ॥ भये० ॥ ३ ॥ धन्य घरी धनि भाग हमारा, दूर भया दुखदंदा। बुधजन बारबार इम भाखै, चिरजीवी यह नंदा ॥ भये० ॥ ४ ॥